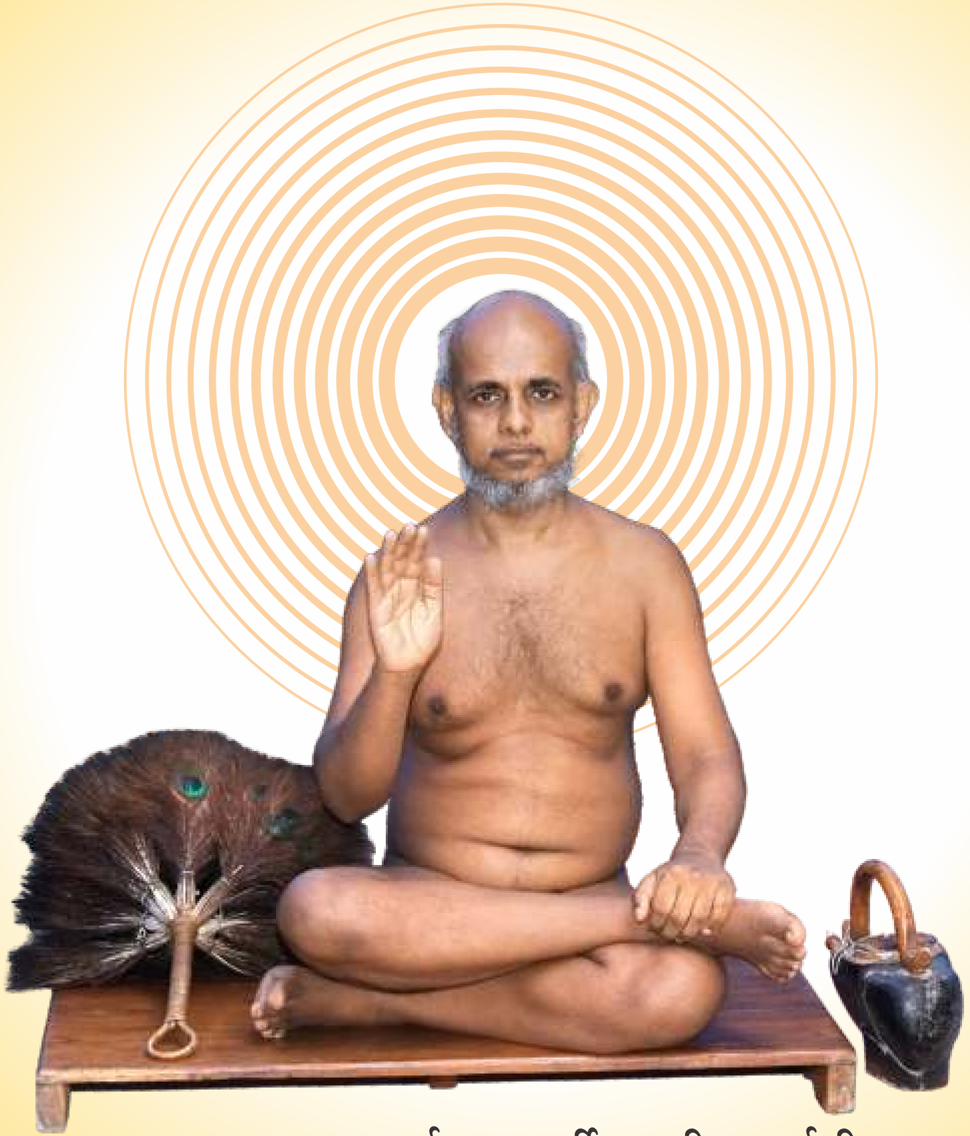

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणाः–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

श्री मोक्षशास्त्र, णमोकार एवं एकीभाव विधान

रचनाकार
परम पूज्य आचार्यश्री गुप्तिनन्दी जी महाराज

प्रकाशक
श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन, धर्मतीर्थ–औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

(परम्परानायक)

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

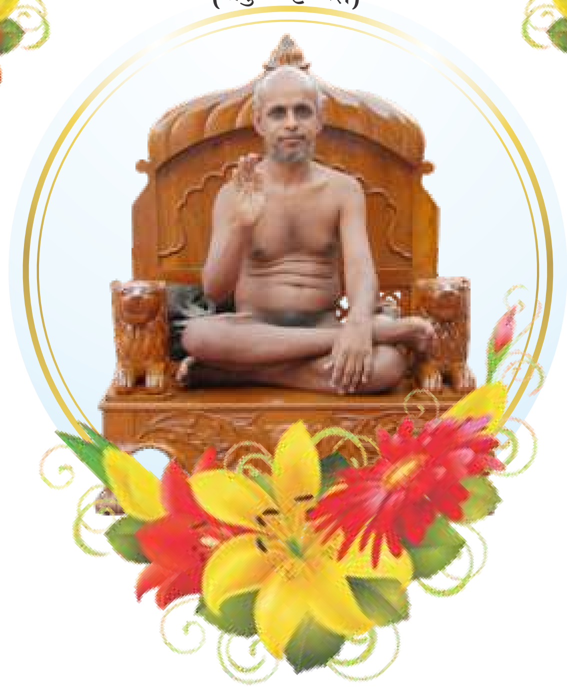

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्राय: होता है। फलत: उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तुत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

श्री मोक्षशास्त्र (तत्त्वार्थ सूत्र) णमोकार एवं एकीभाव विधान

आशीर्वाद

गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव
वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव

रचनाकार
आचार्य गुप्तिनंदी

प्रकाशक

श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन

C/o धर्मराजश्री तपोभूमि दिगम्बर जैन ट्रस्ट, धर्मतीर्थ
पोस्ट-धर्मतीर्थ मार्ग, कचनेर अतिशय क्षेत्र के पास
तालुका, जिला औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
www.jainacharyaguptinandiji.org
E-mail : dharamrajshree@gmail.com

पुस्तक का नाम	:	**श्री मोक्षशास्त्र (तत्त्वार्थ सूत्र), णमोकार एवं एकीभाव विधान**
आशीर्वाद	:	**गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव** **वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव**
आशीर्वाद एवं संपादन	:	**आर्षमार्ग संरक्षक प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव**
रचयित्री	:	**आर्यिका आस्थाश्री माताजी**
संघस्थ	:	**मुनि श्री विमलगुप्तजी, मुनि श्री विनयगुप्तजी** **क्षुल्लक श्री धर्मगुप्तजी, क्षुल्लक श्री शांतिगुप्तजी** **क्षुल्लिका धन्यश्री माताजी, क्षुल्लिका तीर्थश्री माताजी** **ब्र. केशरबाई**
सर्वाधिकार सुरक्षित	:	**रचनाकाराधीन**
प्रतियाँ	:	1000
संस्करण	:	**द्वितीय, वर्ष-2020**
प्रकाशक	:	**श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन, धर्मतीर्थ क्षेत्र कचनेर के पास, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)** Email : dharamrajshree@gmail.com

प्राप्ति स्थान

1. **प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव ससंघ**
2. **श्री धर्मतीर्थ, औरंगाबाद (महाराष्ट्र) 9421503332**
3. **श्री नितिन नखाते, नागपुर, 9422147288**
4. **श्री राजेश जैन (केबल वाले), नागपुर 9422816770**
5. **श्री रमणलाल साहू जी, औरंगाबाद मो. 9823182922**
6. **श्री सुबोध जैन, राधेपुरी, दिल्ली 9910582687**

मुद्रक : **राजू ग्राफिक आर्ट, जयपुर**
Mob. 9829050791 Email : rajugraphicart@gmail.com

अनुक्रमणिका

क्र.स.	विषय	रचनाकार	पेज नं.
1.	आशीर्वाद	ग.ग. कुन्थुसागरजी	4
2.	आशीर्वाद	वैज्ञानिक आचार्य कनकनन्दी जी	5
3.	''जिनागम की कुंजी मोक्षशास्त्र''	आचार्य गुप्तिनंदी जी	8
4.	''पूज्येषु गुणेषु अनुराग भक्तिः''	मुनि सुयशगुप्त	13
5.	''स्व-कथ्यम्''	गणिनी आर्यिका क्षमाश्री	14
6.	मोक्षशास्त्र की बात ही निराली है।	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	15
7.	विनय पाठ		27
8.	पूजा प्रारम्भ		28
9.	श्री नित्यमह पूजा	ग. आर्यिका राजश्री माताजी	32
10.	ऋद्धि मंत्र		36
11.	त्रय विधान मण्डल		37
12.	**तत्त्वार्थ सूत्र पूजा विधान**		38
13.	तत्त्वार्थ सूत्र प्रथम अध्याय पूजा		44
14.	तत्त्वार्थ सूत्र द्वितीय अध्याय पूजा		49
15.	तत्त्वार्थ सूत्र तृतीय अध्याय पूजा		54
16.	तत्त्वार्थ सूत्र चतुर्थ अध्याय पूजा		59
17.	तत्त्वार्थ सूत्र पंचम अध्याय पूजा		64
18.	तत्त्वार्थ सूत्र षष्ठम अध्याय पूजा		69
19.	तत्त्वार्थ सूत्र सप्तम अध्याय पूजा		74
20.	तत्त्वार्थ सूत्र अष्टम अध्याय पूजा		79
21.	तत्त्वार्थ सूत्र नवम अध्याय पूजा		84
22.	तत्त्वार्थ सूत्र दशम अध्याय पूजा		90
23.	समुच्चय जयमाला		95
24.	विधान प्रशस्ति		97
25.	**श्री णमोकार पूजा विधान**		98
26.	विधान प्रशस्ति		113
27.	एकीभाव विधान की व्रत विधि		114
28.	आदिनाथ भगवान की स्तुति		115
29.	**एकीभाव पूजन विधान (श्री ऋषभदेव विधान)**		116
30.	समुच्चय जयमाला		133
31.	विधान प्रशस्ति		136
32.	अर्घावली एवं आरतियाँ		137-139
33.	समुच्चय महाअर्घ, शांतिपाठ, विसर्जन पाठ		142-143-144
34.	साहित्य सूची		145

आशीर्वाद

पुण्य ही जीव की सद्गति कराता है, सद्गति से मनुष्य को मोक्ष प्राप्त होता, सच्चा सुख उसी को कहते हैं। संसारी जीव को सच्चे सुख के लिये ही प्रयत्न करना चाहिए, आचार्यों ने इसीलिये देवपूजा का विधान गृहस्थों के लिये अनिर्वाय किया है। सद् गृहस्थ को प्रतिदिन जिनपूजा करना चाहिए। द्रव्यपूर्वक भावपूजा करना चाहिये, पूजा पुण्यानुबंधी पुण्य कमाने के लिये है। आर्यिका आस्थाश्री माताजी ने इस **तत्त्वार्थ सूत्र विधान, आदिनाथ (एकीभाव) विधान एवं णमोकार विधान** को लिखा है, व्रत विधान करने से जीव को परम्परा से मुक्ति प्राप्ति होती है, आर्यिका आस्थाश्री माताजी का परिश्रम कब सार्थक होगा, जब सद्ग्रहस्थ व्रत करे, विधान करें। इस विधान को करके अवश्य पुण्य लाभ उठावे, ऐसा मेरा कहना है। आर्यिका आस्थाश्री माताजी को, प्रकाशक को मेरा आशीर्वाद।

–ग.ग. कुन्थुसागर

शुभाशीर्वाद

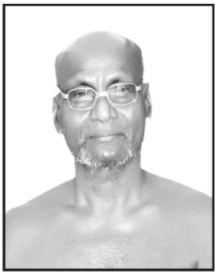

(लय – पंचमेरु पूजा जयमाला..., प्रथम सुदर्शन मेरु विराजै..)

मोक्षमार्ग प्रतिपादक ग्रंथ, उमास्वामी द्वारा रचित सूत्र।
दश अध्याय में ग्रंथित सूत्र, सुदर्शन-ज्ञान-चारित्र युक्त॥
जीव पुद्गल व धर्म-अधर्म, आकाश-काल-सह छहों द्रव्य।
जीव-अजीव आस्रव-बंध, संवर-निर्जरा-मोक्ष तत्त्व॥

पुण्य-पाप सह नव पदार्थ, इनका श्रद्धान सम्यग्दर्शन।
षट् द्रव्य लोक बनाया, केवल आकाश अलोक कहा॥
लोकालोक को शाश्वत कहा, उत्पाद-व्यय-ध्रौव बताया।
तत्त्वार्थ श्रद्धान ही सम्यग्दर्शन, निश्चय से स्वशुद्धात्मा श्रद्धान॥2॥
सम्यग्दर्शनपूर्वक होता सुज्ञान, दोनों सहित सम्यक् आचरण।
सम्यक् चारित्र के दो भेद, श्रावक (चारित्र) व मुनि चारित्र॥
पंचाणुव्रतादि युक्त श्रावक, प्रथम प्रतिमा से लेकर क्षुल्लक।
महाव्रतधारी होते श्रमण, आत्मविशुद्धि हेतु करते श्रम॥3॥

ध्यान-अध्ययन-समता युक्त, कर्मनाश हेतु सदा प्रयत्न।
घाती नाशकर बने अरिहंत, अष्टकर्म नाश से बनते सिद्ध॥
अष्टमूलगुण से होते संयुक्त, अनंतानंत गुणों से मण्डित।
भव्य जीव ही बनते सिद्ध, सिद्धप्रभु (भगवान्) ही सच्चिदानंद॥4॥
दशों अध्याय में यह वर्णित, 'कनकनन्दी' द्वारा आराध्य ग्रंथ।

दोहा- भाव भक्ति से ग्रंथ का, करता जो स्वाध्याय।
एक वास का फल मिले, क्रम से मोक्ष सिधाय॥

प्रस्तुत कृति की रचयित्री मम शिष्या आर्यिका आस्थाश्री को मेरा शुभाशीष सहित समाधिरस्तु आशीर्वाद।

– आचार्य कनकनन्दी

राग : मेरे आदर्श गुरु
(चाल – आये हो मेरी जिन्दगी में...)

आये मेरे जीवन में, आदर्श गुरु बनके।
अरिहन्त सिद्ध सूरी, पाठक साधु बनके॥ (स्थायी)
अरिहन्त गुरु मेरे, सर्वज्ञ साम्यधारी।
लोकालोक के ज्ञाता, अनन्त–गुण भण्डारी॥
शुद्ध सिद्ध भगवन्त सर्व–कर्म विनाशक।
जन्म मरण रहित, चिदानन्द के धारक॥1॥
आचार्य गुरु मेरे स्व–पर हितकारी।
आचरण सिखाते रत्नत्रय भण्डारी॥
पाठक गुरु मेरे, ज्ञानदान के दाता।
अध्ययन–अध्यापन, करते ज्ञानदाता॥2॥
श्रमण गुरु मेरे, जो समता के हैं साधक।
ज्ञान ध्यान तप के, जो हैं सतत आराधक॥
पाँचों ही गुरु मेरे, जो मेरा ही स्वरूप।
उनके ज्ञान ध्यान से, बनूँ मैं शुद्ध स्वरूप॥3॥
ख्याति पूजा व लाभ, कषाय मैं न चाहूँ।
सत्य समता शान्तिमय, आतम लाभ ही चाहूँ॥
बीज से वृक्ष तथा, बने हैं फूल–फल।
गुरु ध्यान से है चाहे 'कनक' मोक्षफल॥4॥

* अनादि अनिधन शाश्वतिक पंच परमेष्ठी सम्बन्धी **णमोकार विधान** की रचना मेरी प्रिय शिष्या **'आर्यिका आस्थाश्री'** ने की है। आस्थाश्री को मेरा मंगलमय शुभाशीर्वाद सहित शुभकामनायें हैं कि आप आत्मकल्याण को प्रमुख करके विश्वकल्याण के लिये भी जैनधर्म का प्रचार–प्रसार करें।

–आचार्य कनकनन्दी

राग : (1) ज्योति कलश छलके.. (2) वन्द्य चरण जिनके...

वन्द्य चरण जिनके..2
जिनके चरणे नतमस्तक है, इन्द्रलोक के ऽ ऽ ऽ
वन्द्य चरण जिनके...2 (टेक)

आत्मध्यान से सर्वज्ञ हुए, विश्व विद्या के ज्ञानी जो हुए।
अन्तर्यामी सभी के...2 ॥1॥ वन्द्य चरण जिनके...

सत्य अहिंसा का पाठ पढ़ाया, विश्व शान्ति का सन्देश दिया।
पवित्र भाव से...2 ॥2॥ वन्द्य चरण जिनके...

आत्म विकास को सर्वोच्च कहा, भौतिक विकास अनुगामी कहा।
अनेकान्तमय से...2 ॥3॥ वन्द्य चरण जिनके...

समता सार्वभौम है कहा, व्यवहार व भाव में कहा।
वैश्विक दृष्टि से...2 ॥4॥ वन्द्य चरण जिनके...

आत्मा में परमात्मा निहित कहा, शुद्धात्मा ही परमात्मा है।
यथा वृक्ष बीज से...2 ॥5॥ वन्द्य चरण जिनके...

उन्होंने कहा करो आत्मकल्याण, जिससे होगा विश्व कल्याण।
'कनक' भाये भाव से...2 ॥6॥ वन्द्य चरण जिनके...

हमारे संघस्था उदयमाना कवियित्री साध्वी आस्थाश्री के द्वारा रचित **'एकीभाव स्तोत्र विधान'** का सदुपयोग करके विश्व मानव सातिशय पुण्यार्जन करें एवं परम्परा से मोक्ष प्राप्त करें ऐसी मेरी शुभकामनायें हैं। साध्वी आस्थाश्री भी रत्नत्रय की साधना एवं सोलहकारण भावना के द्वारा स्व-पर विश्वकल्याण करते हुए स्वात्मोपलब्धि करें, ऐसा शुभाशीर्वाद एवं शुभकामनायें सह-

-आचार्य कनकनंदी
खाखड (उदयपुर) राज.

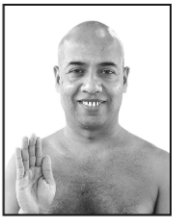

आशीर्वचन

''जिनागम की कुंजी मोक्षशास्त्र''

मोक्षशास्त्रस्य कर्त्तारः उमास्वामिने नमः।
वृत्ति वार्तिक कर्त्तारः सर्वेभ्यः गुरुभ्यो नमः॥

''मोक्षशास्त्र के कर्त्ता आचार्य श्री उमास्वामी जी'' को मैं त्रय भक्ति पूर्वक कोटि-कोटि बारम्बार नमोऽस्तु करता हूँ। उनके उत्तरवर्ती तत्त्वार्थ सूत्र ग्रंथ पर वृत्ति, वार्तिक, श्लोक टीकाकर्त्ता सभी आचार्यों को मेरा त्रय भक्ति पूर्वक नमोऽस्तु।

मोक्षशास्त्र ग्रंथ जैन संस्कृति में संस्कृत भाषा का आद्य सूत्र ग्रंथ है। यह जैन आगम की कुंजी है। सिद्धांत शास्त्रों की प्रवेशिका है। समस्त जैनागम का प्राण है। यह **''दिगम्बर जैन ऋषि, मुनियों व श्रावकों में अत्यन्त लोकप्रिय ग्रंथराज है।''** इसकी लोकप्रियता के कारण ही इस पर **''आचार्य श्री पूज्यपाद स्वामी''** ने **''सर्वार्थसिद्धि''**, **''आचार्य श्री भट्ट अकलंक स्वामी''** ने **''तत्त्वार्थ राजवार्तिक''**, **''आचार्य श्री विद्यानन्द स्वामी''** ने **''तत्त्वार्थश्लोकवार्तिकालंकार''**, **''आचार्यश्री अमृतचंद्र स्वामी''** ने **''तत्त्वार्थसार''**, **''श्री श्रुतसागर सूरि''** ने **''तत्त्वार्थवृत्ति''** एवं **''आचार्य श्री समन्तभद्र स्वामी''** ने **''गंधहस्ति महाभाष्य''** नाम से टीका ग्रंथों की रचना की है तो **''वैज्ञानिक धर्माचार्यरत्न श्री कनकनन्दी जी''** ने **''स्वतंत्रता के सूत्र''** नाम से इस पर समीक्षा ग्रंथ लिखा है। इसके अलावा भी अनेक ज्ञात-अज्ञात आचार्यों, मुनियों, आर्यिकाओं, भट्टारकों, कवियों ने इस पर अपने-अपने अंदाज में गद्य-पद्य रूप में व्याख्या, छंद, कविता, पूजन, विधान आदि लिखे हैं व आगे भी लिखते रहेंगे। इसी श्रृंखला में ''प.पू. भारत गौरव गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुंथुसागर जी गुरुदेव व वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव से दीक्षित व शिक्षित व हमारी साधर्मी संघस्था **''भक्ति कवियित्री आर्यिका आस्थाश्री''** माताजी ने **''श्री तत्त्वार्थ सूत्र विधान''** की रचना की है। यह मोक्षशास्त्र पर अब तक के विधानों में अत्यन्त सरल संक्षिप्त सुगम विधान है। प्रस्तुत ग्रंथ में माताजी ने नरेन्द्र, अडिल्ल, जोगीरासा, कुसुमलता, गीता, शंभू, चौपाई, दोहा, सोरठा, काव्य आदि विविध छंदों का प्रयोग करते हुए सुन्दर विधान की रचना की है।

प्राचीन आर्षमार्ग का एवं गुरु परम्परागत रूप से ग्रंथ लेखन का क्रमबद्ध संयोजन इस रचना में स्पष्ट झलकता है। भक्ति की शक्ति का जोरदार प्रदर्शन करते हुए कवयित्री ने लिखा है–

''पंचामृत अभिषेक करें हम आपका।
प्रभु पूजा से घड़ा फूटता पाप का॥''

वहीं विधान की समुच्चय पूजा के दस अर्घों में दस अध्यायों का संक्षिप्त परिचय आ गया है। उसकी ही जयमाला में ग्रंथकर्त्ता व टीकाकर्त्ता समस्त गुरुओं का विधिवत उल्लेख किया है।

दस अध्यायों की दस पूजा, दस अर्घ, दस अध्याय के सूत्र, दस पूर्णार्घ, दस जयमाला, उनके जाप्य मंत्र फिर ग्रंथकर्त्ता आचार्यश्री का अर्घ, बड़ी जयमाला, प्रशस्ति व आरती से सज्जित यह सम्पूर्ण विधान आप सब तक पहुँचाते हुए मन में बहुत ही ज्ञानानंद हो रहा है। इसका संपादन करते हुए ऐसा अनुभव हुआ जैसे हम साक्षात् ''**गिरनार की तलहटी**'' में ''**सिद्धय्या श्रावक**'' के घर पहुँच गए हों। जहाँ वह श्रीफल अर्पण करते हुए ''**गृद्धपिच्छाचार्य आचार्य श्री उमास्वामी**'' से ''**मोक्षशास्त्र ग्रंथ**'' लिखने का निवेदन कर रहा हो। जयमाला पढ़ते हुए हमारे नयन पटल पर ध्यान के चलचित्र में एक ओर गिरनार के जंगलों में ताडपत्र पर ''**तत्त्वार्थसूत्र ग्रंथ**'' लिखते हुए आचार्य श्री उमास्वामी जी दिखाई देते हैं तो दक्षिण भारत के सघन जंगलों में मोक्षशास्त्र की टीका, वृत्ति, वार्तिकालंकार या महाभाष्य लिखते हुए अनेक–अनेक आचार्य भगवन् दिखाई देते हैं। एक विचारणीय विषय है कि जहाँ उत्तर भारत की माटी ने तीर्थंकर जैसे महापुरुषों को जन्म दिया तो वहीं दक्षिण भारत की माटी ने अनेक प्रसिद्ध ग्रंथकार आचार्यों को जन्म दिया और इन सबमें एकमात्र गुजरात प्रांत के गिरनार तीर्थ की ऐसी पावन भूमि है जहाँ से ''**षटखंडागम सिद्धांत शास्त्र**'' और ''**तत्त्वार्थ सूत्र ग्रंथ**'' के लेखन की प्राग्भूमिका तैयार हो गई। उस तरह ''**उत्तर से तीर्थंकर**'' तो ''**दक्षिण से ग्रंथकर्ता गुरु**'' और ''**पश्चिम भारत से हमें जिनवाणी**'' जिनशास्त्र की प्राप्ति हुई है। ''**ज्ञान का दीप गुजरात से जला है।**'' इस ग्रंथ के दो नाम हैं– एक ''**मोक्षशास्त्र**'' और दूसरा ''**तत्त्वार्थ सूत्र**''। ये दोनों इसके सार्थक नाम हैं। क्योंकि यह मोक्षमार्ग से

मोक्ष प्राप्त कराने वाला शास्त्र है। इसके प्रथम अध्याय के पहले सूत्र में ही आचार्यश्री ने ''**सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणिमोक्षमार्गः**'' कहते हुए मोक्षमार्ग प्रगट किया है इसलिए इस ग्रंथ का नाम ''**मोक्षशास्त्र**'' पड़ा है। वहीं इसके 357 सूत्रों में सात तत्त्व और उनका अर्थ इसमें दिया गया है इसलिए इसे ''**तत्त्वार्थ सूत्र**'' भी कहा जाता है। इस ग्रंथ के लिए अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति दर्शाते हुए माताजी ने लिखा है–

''मोक्षशास्त्र तब तक रहे, जब तक मोक्ष महान्।
आस्था रख इस शास्त्र पर, हम पायें श्रुतज्ञान॥''

इस तरह कुल मिलाकर सिद्धांत शास्त्र में भक्ति संगीत का सुन्दर संयोजन माताजी ने किया है। हम भी उन्हें आशीर्वाद देते हैं कि उनकी उपरोक्त भावना अवश्य पूरी हो और उन्हें श्रुतज्ञान से आगे केवलज्ञान की प्राप्ति हो। आप सब भी दस उपवास के इस सरलतम विधान को अवश्य करें। अपने श्रुतज्ञान के क्षयोपशम को बढ़ायें।

णमोकार मंत्र की महिमा

णमोकार इक मंत्र है, सब मंत्रों की खान।
इससे दूजा और ना जग में मंत्र महान्॥

तीनों लोक में व तीनों काल में सर्वश्रेष्ठ मंत्र है तो एकमात्र मंत्र णमोकार मंत्र है। जिन्होंने मोक्ष पा लिया है, जो पा रहे हैं या जो पाने की साधना कर रहे हैं ऐसे मुनि, उपाध्याय, आचार्य व अरिहंत सिद्ध परमेष्ठी इसी णमोकार के वाच्य हैं। यह श्रेष्ठतम, आध्यात्मिक या सार्वभौमिक मंत्र है। इस मंत्र को आधा या पूरा, चोर या साहूकार, राजा या रंक संत या श्रावक जिसने भी श्रद्धा से जपा है उसका निश्चित ही बेड़ा पार हुआ है। जैनाचार्यों के अनुसार ये पंच नमस्कार मंत्र सब पापों का नाश करने वाला है और सब मंगलों में पहला मंगल है।

इस अपराजित अनादिनिधन मंत्र पर पूर्व में अनेक ग्रन्थ, कथा, विधान आदि अनेक आचार्यों व विद्वानों ने लिखे हैं। इसी शृंखला में साध्वी, कवियित्री, जिन भक्ति आराधिका, आर्यिका 'आस्थाश्री' माताजी ने णमोकार व्रत के उद्यापन हेतु सरल सुगम 'णमोकार विधान' की रचना की है। इससे पूर्व भी आपने अनेक

पूजन, भजन, चालीसा के साथ अनेक विधानों व कथा साहित्यों की रचना की है। आपकी सभी कृतियाँ अपने आपमें अनूठी हैं। ये अनवरत श्रुत साधना आपको सरस्वती की सिद्धी दिलायें और परभव में आपको साक्षात् दिव्य ध्वनि का अधिकारी बनायें यही आपके लिये शुभाशीर्वाद है।

देवों के अधिदेव हैं ऋषभदेव

वादिराज सूरीश का एकीभाव विधान।
सर्व व्याधि पीड़ा हरे, करें सर्व कल्याण॥

जैनागम में सर्व दुःखों से मुक्ति का सरल सुगम उपाय बताया है 'जिनभक्ति'। जब–जब राजसत्ता ने धर्मसत्ता को चुनौती दी है तब–तब जैनाचार्यों ने जिनभक्ति से, हर चुनौती का सहज सामना किया है। जब भी मिथ्यात्व ने सम्यक्त्व के अस्तित्व को मिटाने का कुचक्र चलाया है तब–तब आचार्यों ने जिनभक्ति से सम्यक्त्व की सफलता के झण्डे गाढ़े हैं।

ऐसे महान् आचार्यों में आचार्य श्री कुन्दकुन्द, आचार्य श्री समन्तभद्र, आचार्य श्री भट्टाकलंक, आचार्य श्री मानतुंग, आचार्य श्री कुमुदचन्द्र का नाम विशेष उल्लेखनीय है। इन्हीं आचार्यों में एक महान् आचार्य हैं **'श्री वादिराज सूरी'** जिनकी निस्पृहता व जिनभक्ति जगत् विख्यात है। शरीर में भयानक गलित कुष्ठ होने पर तथा उसके निवारण की शक्ति होने पर भी वे शरीर से निस्पृह रहते हुए असातावेदनीय के आक्रमण को सहन करते हुए आत्म शक्ति से कर्मों को हराने में लगे रहे; लेकिन जैसे ही उन्हें ज्ञात हुआ कि मेरी व्याधि के बहाने जैनधर्म का मजाक उड़ाया जा रहा है। साधुओं की साधना पर प्रश्न चिह्न खड़े किये जा रहे हैं। तब भक्त की प्रार्थना पर उन्होंने ऋषभदेव भगवान का ऐसा ध्यान लगाया कि उनके कविहृदय से काव्यधारा प्रवाहित हो गयी। उनके द्वारा लिखा गया वह भक्ति काव्य **'एकीभाव स्तोत्र'** के नाम से विख्यात हो गया। कहते हैं कि **'एकीभाव स्तोत्र'** की रचना के चौथे काव्य में ही उनका सम्पूर्ण कुष्ठ रोग समाप्त हो गया तथा उनकी देह स्वर्ण के समान चमकने लगी। फिर भी आचार्य भगवन् ने हम सब पर करुणा करते हुए 25 श्लोकों में भक्ति काव्य को सम्पूर्ण किया और हम सबके लिए **'एकीभाव**

स्तोत्र' के रूप में **'सर्व व्याधि निवारक आदिनाथ विधान'** का अनुपम उपहार दिया।

जिस समय राजा, प्रजा व मुनि विद्वेषी ने श्री वादिराज सूरि के स्वर्ण के समान चमचमाते निरोग शरीर को देखा तब जिनभक्ति का अतिशय जानकर सभी ने अपनी मिथ्याबुद्धि को छोड़कर सम्यक्त्व सहित जिनधर्म को स्वीकार किया। अतः इस प्रकार यह विधान तन की व्याधि के साथ–साथ आत्मा के महारोग मिथ्यात्व को भी नाश करने वाला है। अतः इसका नाम **'एकीभाव विधान'** अपर नाम **'सर्वव्याधि निवारक आदिनाथ विधान'** है।

श्री वादिराज सूरि की यह कृति संस्कृत भाषा में छन्दोबद्ध है। वर्तमान आधुनिक युग में इंग्लिश–हिन्दी का अधिक प्रचलन होने से संस्कृत भाषा का ज्ञान जन सामान्य में अब कम होता जा रहा है। संस्कृत भाषा ज्ञान के अभाव में सामान्य प्राणी इस अतिशयकारी विधान का लाभ नहीं ले पाते हैं। अतः इस विधान को सर्वत्र, सरल, सुलभ बनाने के लिए **'आर्यिका आस्थाश्री माताजी'** ने इस **'एकीभाव स्तोत्र'** का हिन्दी में भावानुवाद किया है। भावानुवाद भी भागीरथ प्रयास है, क्योंकि पूर्वाचार्यों के प्राचीन छन्दों के सभी शब्दों का, उनके भावों का पूर्ण अनुवाद करके प्रस्तुत करना अत्यन्त कठिन कार्य है। पूर्वाचार्य जैसा क्षयोपशम भी अब सबका नहीं है, फिर भी माताजी का प्रथम प्रयास सराहनीय है।

इस रचना के फलस्वरूप माताजी पर श्री वादिराज सूरि की पूर्व अनुकम्पा हो उनकी इस कृति में श्रीमद् आचार्य वादिराज सूरि जैसा ही अतिशय प्रगट हो तथा वे क्रमशः सम्पूर्ण कर्म व्याधि को जीतकर निरूपाधि आत्मोत्थ सुख की भागी बने, यही उन्हें शुभाशीर्वाद है।ग्रन्थ लेखन के सभी सहयोगी, दातार, पूजक, पाठक, मुद्रक, प्रकाशक सभी को हमारा शुभाशीर्वाद।

–आचार्य गुप्तिनंदी

''पूज्येषु गुणेषु अनुराग भक्तिः''

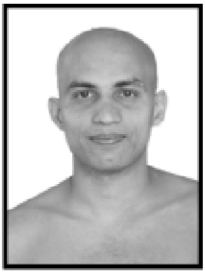

जिस प्रकार प्रातःकाल में निकली सूर्य की किरण से रात्रि का सघन अंधकार नष्ट हो जाता है उसी प्रकार हृदय से प्रस्फुटित हुए जिनभक्ति के उद्‌गार अनादि से संचित पापकर्म को नष्ट कर देते हैं।

'पूज्येषु गुणेषु अनुराग भक्तिः' अपने पूज्य व आराध्य के गुणों से अनुराग करना भक्ति है। पंचमकाल में भक्ति ही मुक्ति का मार्ग है।

आचार्यश्री मानतुंग स्वामी, श्री कुमुद्‌चंद्राचार्य स्वामी, आचार्य श्री पूज्यपाद स्वामी आदि अनेक आचार्य, मुनि, संतों ने जिनभक्ति के माध्यम से अपने नमस्कार से चमत्कार को प्रकट किया है। इसी श्रृंखला में **प.पू. वादिराज सूरी** ने देवाधिदेव श्री आदिनाथ भगवान की स्तुति करते हुए **'एकीभाव स्तोत्र'** की रचना कर असातावेदनीय कर्म से उत्पन्न कुष्ठ रोग को दूर कर दिया और जिनधर्म की महती प्रभावना की थी।

मधुर कंठ व मधुर व्यवहार की धनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी ने इस अतिशयकारी **'एकीभाव स्तोत्र'** एवं **'णमकोर विधान'** का सुन्दर काव्य व छन्दों का प्रयोग करते हुए अनुवाद कर इसे विधान का रूप दिया है। स्व–परकल्याण हेतु सृजित/रचित इस विधान को जो भी भव्यात्मा श्रद्धा–भक्ति व निष्ठापूर्वक आगमोक्त विधि से करेंगे, हमें विश्वास है यह आराधना उनके दुःख–शोक को दूर कर उनके जीवन में चमत्कार घटित करेगी और उनके सब वांछित कार्य सिद्ध होंगे।

विधान लेखिका **आर्यिका आस्थाश्री माताजी** इसी प्रकार शुभोपयोग में लीन रहते हुए शुद्धोपयोग और शीघ्र एकीभाव (मोक्ष) को प्राप्त करे यही शुभकामना एवं शुभाशीष।

विधान के प्रकाशक व द्रव्यदाता पुण्यार्जक को भी आशीर्वाद।

–मुनि सुयशगुप्त

''स्व-कथ्यम्''

11वीं शताब्दी की घटना है। उस काल में आचार्य वादिराज मुनिराज ने अपनी साधना से सिद्ध कर दिखया है कि जैन संत दिगम्बर मुनि की साधना को चुनौती देना या जिन धर्म का उपहास करने वालों को हराकर गुरु की व धर्म की शरण स्वीकार करनी पड़ी। जिनधर्म की साधना, प्रभावना, उपासना स्वार्थपरक नहीं होती परमार्थपरक होती है। मुनिराज ने यह कर दिखाया कि मैंने साधना इस नश्वर शरीर हेतु नहीं की, कुष्ठ रोग जैसे रोग की परवाह नहीं की, क्योंकि शरीर तो एक बार नहीं अनेक बार धोखा दे चुका है, इसलिए इसकी चिंता नहीं। इसकी सुरक्षा में लगूँगा तो परमात्मा की साधना से व अपने लक्ष्य से च्युत हो जाऊँगा। साधना की पराकाष्ठा पर पहुँचने वाला साधक तन की नहीं आत्मा की सोचता है। इसलिए आत्मजयी बन पाता है। **'एकीभाव स्त्रोत'** में अपने भाव व्यक्त है - देहरूपी वामी से एक नहीं कई प्रकार के कठिन रोग चले जाते हैं। हे प्रभु ! जब आप माता के गर्भ में आये तो सारा पृथ्वी मण्डल स्वर्णता को प्राप्त हुआ था तब मेरे ध्यानरूपी दरवाजे से आप मेरे मनरूपी मन्दिर में प्रविष्ट हुए तो हे भगवन् ! फिर आपका यह मन्दिर रूपी शरीर स्वर्णमय बन जाये इसमें क्या आश्चर्य ? आदि भावना से मुनि श्री वादिराज जी ने हमें यह प्रेरणा दी है कि साधक अपने चरम लक्ष्य पर पहुँचता है तो वह कुष्टि तन को ही नहीं वरन् आत्मा को भी स्वर्णमय बना लेता है। इसी भावना से साधु-संत के द्वारा एकीभाव पाठ किया जाता है और गृहस्थ श्रावक विधान आदि के माध्यम से जुड़कर इस स्त्रोत से जुड़ें, शारीरिक व मानसिक आदि रोगों से बचें इसलिए **'आर्यिका आस्थाश्री माताजी'** ने यह विधान लिखा है। वे अपने इन पुण्य कार्यों से अपनी साधना को परिमार्जित करती हुई अपने लक्ष्य पर आगे बढ़ें, यही शुभ कामना।

-गणिनी आर्यिका क्षमाश्री माताजी

''मोक्ष शास्त्र की बात ही निराली है''

मोक्षमार्गस्य नेत्तारं, भेत्तारं कर्मभूभृताम्।
ज्ञातारं विश्व तत्वानां, वन्दे तद्गुण लब्धये।।

''मोक्ष'' इन दो शब्दों में अनंत सुख का भंडार भरा हुआ है। एक क्ष हटा दे और ह शब्द लगा दे तो यह मोह बन जाता है मो+ह=मोह, मो+क्ष=मोक्ष! मोह संसार को बढ़ाने वाला है। और मोक्ष अनंत सुख दिलाने वाला है।

सुख प्राप्त करने की इच्छा हर एक जीव की रहती है। संसार का प्रत्येक प्राणी एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक और असंज्ञी से लेकर संज्ञी तक सभी सुखी बनना चाहते हैं। परन्तु सुख मिले वैसा कार्य सभी नहीं करते। मोक्ष पाने के लिये जीव को अनेक भव तक पुरुषार्थ करना पढ़ता है। मनुष्य गति से ही पुरुष मुनि बन कर मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं।

पुरुषार्थ तो चारों गति के जीव करते हैं। परन्तु पुरुषार्थ की सफलता मनुष्य जब मुनि बनता है। कर्म काटने के लिये 12,13,14 वें गुणस्थान प्राप्त कर लेता है। वही जीव वास्तविक अनंत सुख को प्राप्त करता है।

हम एक बार मोह का क्षय, क्षयोपशम उपशम करके अगर सम्यक्दर्शन प्राप्त कर लेते हैं तो हमें मोक्ष प्राप्त हो सकता है।

हमारे आचार्य उमास्वामी (गृद्ध पिच्छाचार्य) ने इस तत्त्वार्थ सूत्र ग्रंथ की रचना की है। यह ग्रंथ बहुत ही सुन्दर है। इस ग्रंथ में 357 सूत्र हैं। इसमें 10 अध्याय हैं, इस छोटे से ग्रंथ में आचार्य भगवन् ने गागर में सागर भर दिया है। सरलता से ये सूत्र समझ में आते हैं। हर व्यक्ति इन सूत्रों को मुखाग्र कर सकता है।

इन अध्यायों में क्रम से 7 तत्त्वों का ही वर्णन आचार्य भगवन् ने किया है। प्रथम अध्याय का प्रथम सूत्र ही सम्यग्दर्शन का दिया है। **'सम्यक्दर्शन ज्ञान चारित्राणि मोक्षमार्गः।'** अंत में मोक्ष तत्त्व 10वें अध्याय में बताया है। सम्यक्दर्शन

प्राप्त करने वाला ही मोक्ष प्राप्त कर सकता है। इसलिये सर्व प्रथम हमें जीवादि 7 तत्त्वों पर श्रद्धान् करके सम्यक्दर्शन प्राप्त करना चाहिए।

इस ग्रंथ पर अनेक आचार्यों ने सर्वार्थ सिद्धी, तत्त्वार्थ वृत्ति, श्लोकवार्तिकालंकार, तत्त्वार्थ राजवार्तिक, तत्त्वार्थ सार, गंध हस्ति महाभाष्य आदि और भी अनेकों ग्रंथ रचे हैं। तत्त्वार्थ सूत्र (मोक्ष शास्त्र) ग्रंथ में सम्पूर्ण जिनागम का सार समाहित है। धवला, जय धवला, महाधवला, महाबंध आदि यदि पढ़ना है तो पहले यह ग्रंथ अच्छे से पढ़ना चाहिये। तत्त्वार्थ सूत्र पढ़ने के बाद उनका ज्ञान भी शीघ्र हो जाता है।

तत्त्वार्थ सूत्र की व्रत विधि– इसके हमें 10 उपवास करना चाहिये। उपवास के दिन 6 अंग सहित पूजा विधान करना चाहिये। शुरूवात का प्रथम उपवास चतुर्दशी को किया जाता है, फिर कभी भी कोई भी तिथि को कर सकते हैं।

जो व्रत नहीं कर सकते वे लोग श्रद्धा से, शुद्धि के साथ विनय पूर्वक तत्त्वार्थ सूत्र पढ़ते हैं या सुनते हैं। उनको भी एक उपवास का फल मिलता है। सभी भक्तगण दशलक्षण पर्व के समय विशेषकर 10 दिन तो जिनवाणी के सामने श्रुत की पूजा करके तत्त्वार्थ सूत्र पढ़ते हैं और एक–एक अध्याय को अर्घ चढ़ाते हैं।

हमें हर दिन 10 अध्याय का पाठ करना चाहिये। जिससे हमारे परिणाम निर्मल बने, पुण्य का बंध हो। सूत्रों का अर्थ समझते हुये शुद्ध वस्त्रों में चटाई या पाटे पर बैठकर सूत्र पढ़ना चाहिये। चलते–फिरते, खाते–पीते या बिस्तर पर लेटकर सूत्र नहीं पढ़ना चाहिये, हाथ–पैर धोकर शांति से पढ़ना चाहिये। ज्ञान पाना है तो जिनवाणी का बहुमान करते हुये चौकी पर जिनवाणी विराजमान करके पढ़ना चाहिये।

जिनवाणी का विनय करने से ही हमारा ज्ञान बढ़ेगा इसलिए हमें हमेशा देव–शास्त्र–गुरु का विनय करते हुये प्रत्येक धार्मिक कार्य करना चाहिये।

मैंने धर्मतीर्थ में **विराजमान आदिनाथ भगवान** के चरणों में यह तत्त्वार्थ सूत्र विधान लिखा है। अल्प समय में ही प्रभु के आशीर्वाद से यह विधान पूर्ण हो गया।

आज भगवान चंद्रप्रभु और पारसनाथ भगवान का जन्म और तप कल्याणक है। उनके चरणों में कोटि–कोटि नमन, मैं आदिनाथ भगवान और 24 भगवान को नमोऽस्तु करती हूँ।

गणधर परमेष्ठी जिनवाणी को नमन करती हूँ, ग्रंथ रचियता उमास्वामी आचार्य को नमोऽस्तु, **मेरे दीक्षा दाता ग. गणधराचार्य श्री कुंथुसागर जी गुरुदेव को त्रय भक्ति से नमोऽस्तु, दीक्षा–शिक्षादाता वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदी जी गुरुदेव** को त्रय भक्तिपूर्वक नमोऽस्तु करती हूँ।

मेरे ज्ञान प्रदाता प्रज्ञायोगी महाकवि आर्षमार्ग संरक्षक आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव को त्रय भक्तिपूर्वक नमोऽस्तु... नमोऽस्तु। इस विधान का संपादन आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव ने किया है। हमारे पूज्य गुरुदेव बड़े ही सरल स्वभावी, ज्ञानी महाकवि हैं। उनकी लेखनी जब चलती है तो मेरी बिगड़ी हुई वस्तु भी सुधर जाती है। उनके चरणों में पुनः नमन वंदन।

यह विधान बनाने की मेरी बहुत दिन से इच्छा थी, यदि और कोई विधान लिखने को बोले तो वह लेखन कार्य शीघ्र हो जाता है। ब्र. रूपाली दीदी (देवलगाँवराजा) को आशीर्वाद। उन्होंने यह विधान मेरे से माँगा, निवेदन किया आपके पास बना हुआ हो तो दे दो, नहीं तो हमारे लिये बना दो, हमको चाहिये।

इनके अलावा बहुत सी माताओं, बहिनों ने भी यह विधान माँगा था, सबकी यही समस्या है व्रत करते हैं पर हमारे पास विधान नहीं है। उन सब माताओं को भी आशीर्वाद। इस विधान में दस अध्याय के दस अर्घ सामुहिक पूजन में दिये हैं। दस अध्याय की दस पूजा दी गई है। इस विधान में कुल 35 अर्घ व पूर्णार्घ हैं। इसमें 60 फल, 60 नैवेद्य व कम से कम 5 श्रीफल व विधान योग्य अष्ट द्रव्य तैयार कर ले। व्रत के दिन समुच्चय पूजा करें। व्रत पूरा होने पर यह पूरा विधान करें।

मंत्रों का राजा महामंत्र

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं॥

यह णमोकार महामंत्र एक ऐसा मंत्र है। जिसकी महिमा को अतिशय को हर एक आचार्य ने अपनी वाणी में बताया है। इस मंत्र को छोटे से लेकर बड़े तक, मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका कभी भी किसी भी समय सर्वप्रथम जपते हैं। सबसे अधिक किसी मंत्र की महिमा का वर्णन या दृष्टान्त दिया जाता है तो वह णमोकार मंत्र है। जन्म से लेकर मरण तक यह णमोकार ही सबको सुनाया जाता है। इस णमोकार मंत्र को बोलने के लिये कोई स्थान विशेष नहीं देखा जाता है। जैनधर्म का ये मूलमंत्र है इसलिये सबसे पहले ये ही सिखाया जाता है। अन्य कोई मंत्र किसी को याद हो चाहे ना हो परन्तु ये मंत्र तो हरेक बच्चे–बच्चे को आता ही है। इस णमोकार मंत्र की शक्ति का कोई पार नहीं पा सकता।

स्वयं आचार्य, उपाध्याय, साधु, परमेष्ठी भी इस मंत्र के अन्तर्गत आते हैं, फिर भी ये तीनों परमेष्ठी भी णमोकार मंत्र को अवश्य जपते हैं। जब हम बीमार होते हैं तो औषधि लेते हैं, उससे ठीक होने पर भी औषधि लेते रहते हैं कि आगे बीमारी ना हो, जैसे शुगर वालों को शुगर की दवाई रोज लेनी पड़ती है। बी.पी. वाले बी.पी. कन्ट्रोल करने के लिए रोज गोली खाते हैं। वे दवाई खाकर स्वस्थ रहते हैं इसलिये रोज खाते हैं।

उसी प्रकार ये तीनों परमेष्ठी णमोकार मंत्र में गर्भित होने पर भी दिन–रात इस मंत्र को जपते रहते हैं और मंत्र जपने से इनको फायदा होता है इसलिये जाप करते हैं। जिस चीज से हमें फायदा होता है वह कार्य हमेशा करते रहना चाहिये। इस णमोकार मंत्र में 35 अक्षर है। ये पैंतीस अक्षर बड़े ही महत्वपूर्ण है। ये बीजाक्षर मंत्र है, एक–एक अक्षर में भी बड़ा सार भरा हुआ है। हर एक बीजाक्षर का अपना महत्त्व है। हर अक्षर कुछ न कुछ विशेषताओं से युक्त है। हर अक्षर का

अर्थ अलग-अलग है। इस णमोकार मंत्र से ही 84 लाख मंत्रों की उत्पत्ति हुई। प्राणीमात्र को सुख देने वाला एक णमोकार मंत्र है। नवग्रह के दुःखों से बचने के लिये भी ये नवकार मंत्र ही बताया है।

इस मंत्र की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें किसी व्यक्ति विशेष को नमस्कार नहीं किया इसलिये यह मंत्र अनादि निधन है। किसी ने बनाया नहीं, कोई इसे मिटा नहीं सकता है। भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों काल के पाँचों परमेष्ठी को इसमें नमस्कार किया है। हमारा धर्म गुण पूजक है, व्यक्ति पूजक नहीं है। इसलिये ये मंत्र भी किसी जाति विशेष के लिए नहीं है। कोई भी इसका जाप कर सकता है, जिन्होंने अपनी आत्मा को प्राप्त कर लिया है। जो ज्ञान, ध्यान, साधना में रत है ऐसे परमेष्ठी का नाम कोई भी ले सकता है।

णमोकार मंत्र के अलावा अन्य मंत्र तो किसी इच्छा की पूर्ति के लिये किये जाते हैं परन्तु णमोकार मंत्र में किसी प्रकार की कामना नहीं रहती, शांति और सुख हर प्राणी को मिले इसी भावना से सब जाप करते हैं। प्राणीमात्र की कल्याण भावना से जो भी जाप करते हैं। उनका भी निश्चित ही कल्याण होता है।

इस णमोकार के 35 अक्षरों पर ही मैंने यह णमोकार विधान लिखा है। इसमें पैंतीस अक्षरों के 35 अर्घ है और 6 पूर्णार्घ है। इस व्रत को हर कोई व्यक्ति कर सकता है। हमारे द्वारा जाने-अनजाने में हुये अपराधों की मुक्ति के लिये यह व्रत अवश्य करना चाहिये। इस व्रत को करने से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष पुरुषार्थ की सिद्धी होती है।

इस व्रत की विधि इस प्रकार है- इस व्रत को आषाढ़ सुदी सप्तमी से प्रारम्भ करें आषाढ़ का एक, श्रावण में दो, भाद्र मास में दो, अश्विन महीने के दो उपवास इस तरह सप्तमी के सात (7) उपवास करते हैं।

पंचमी के पाँच- कार्तिक कृष्णा पंचमी के दो, अगहन के दो, पौष का एक इस तरह पंचमी के पाँच उपवास।

14 उपवास– पौष कृष्णा चतुर्दशी से चैत्र कृष्ण चतुर्दशी तक 7 उपवासकरें। चैत्र शुक्ला से 14 से आषाढ़ कृष्णा चतुर्दशी तक 7 उपवास करें।

नवमी के नव उपवास– श्रावण कृष्णा नवमी से अगहन कृष्णा नवमी तक नव उपवास करें। इस प्रकार 35 उपवास द्वारा यह व्रत पूरा करना चाहिये। व्रत के समय अभिषेक पूर्वक नवकार मंत्र पूजन करें। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करें। नहीं तो व्रत दुगुना करें। यह व्रत डेढ़ वर्ष में समाप्त करना चाहिये।

यह विधान दुःख–दारिद्र को हरने वाला है। हमारे जीवन का उत्थान करने वाला है। हम कभी भी यह विधान कर सकते हैं। व्रत करने की शक्ति नहीं हो तो भी यह विधान किया जा सकता है। विधान करके भी हम अपने पापों का नाश कर सकते हैं।

मैं हमारे संघ के मूलनायक शांतिनाथ भगवान को बारम्बार नमोऽस्तु करती हूँ। 24 भगवान को नमोऽस्तु, गणधर भगवान को नमन, जिनवाणी को नमन। मेरे आराध्य पूज्य सभी गुरुओं को त्रय भक्तिपूर्वक नमोऽस्तु।

मेरे दीक्षादाता **गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर जी गुरुदेव को एवं मेरे दीक्षा शिक्षादाता वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदी जी गुरुदेव** को त्रय भक्तिपूर्वक नमोऽस्तु–2 ।

इस विधान का संपादन करने वाले मेरे ज्ञान प्रदाता प्रज्ञायोगी महाकवि आर्षमार्ग संरक्षक कविहृदय **आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव** को त्रय भक्तिपूर्वक नमोऽस्तु–2 । आचार्यश्री की कलम से ही मेरे विधान की चमक बढ़ती है। उनकी लेखनी अनवरत रूप से चलती रहे। पुनः नमोऽस्तु।

यह विधान मैंने गुरु पूर्णिमा के दिन शुक्रवार को 31–7–2015 में चितरी ग्राम में प्रारम्भ किया और भगवान चन्द्रप्रभु के दरबार चितरी में ही 11–9–2015 शुक्रवार को ही पूर्ण किया।

भक्ति में शक्ति

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्ति हराय नाथ।
तुभ्यं नमः क्षिति-तलामल भूषणाय॥
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय।
तुभ्यं नमो जिन ! भवोदधि शोषणाय॥26॥

युग प्रवर्त्तक आदिब्रह्मा, युगनिर्माता, देवाधिदेव प्रथम ज्ञानसूर्य श्री आदिनाथ भगवान को नमोऽस्तु, कल्पतरु श्री शांतिनाथ भगवान को नमोऽस्तु, चौबीस तीर्थंकर भगवान को नमोऽस्तु। गणधर परमेष्ठी को नमन, द्वादशांग सरस्वती जिनवाणी माता को नमन, पंच परमेष्ठी भगवान को नमन, वंदन।

आचार्य वादिराज मुनिराज को बारम्बार नमोऽस्तु-नमोऽस्तु-नमोऽस्तु। आचार्य महावीरकीर्ति गुरुदेव को नमोऽस्तु। मम् दीक्षादाता गणाधिपति **गणधराचार्य श्री कुंथुसागरजी गुरुदेव को त्रय भक्तिपूर्वक नमोऽस्तु। आचार्यरत्न श्री कनकनंदीजी गुरुदेव को त्रय भक्तिपूर्वक नमोऽस्तु। प्रज्ञायोगी कविहृदय, आर्षमार्ग संरक्षक आचार्य श्री गुप्तिनन्दीजी गुरुदेव को** त्रय भक्तिपूर्वक नमोऽस्तु-नमोऽस्तु-नमोऽस्तु।

यह एकीभाव विधान (श्री ऋषभदेव विधान) आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव एवं मुनि श्री सुयशगुप्तजी की प्रेरणा व आशीर्वाद से लिखा है।

यह अतिशयकारी **'एकीभाव स्तोत्र'** है। जिसके पढ़ने-सुनने मात्र से सातिशय पुण्य का बंध होता है। इस **'एकीभाव स्तोत्र'** की रचना के पीछे एक चमत्कारी घटना छिपी है; क्योंकि बिना कारण के कोई कार्य नहीं होता, हर कार्य के पीछे कुछ-न-कुछ कारण अवश्य होता है। यह **'एकीभाव स्तोत्र'** किसी छोटे से साधु ने नहीं लिखा बल्कि एक महाविद्वान् तार्किक चूड़ामणि महाज्ञानी गुरुवर **वादिराज आचार्य** के द्वारा लिखा गया है। कहते हैं कि इनके सामने जब कोई वाद-विवाद करने पास में आता था तो वह आपके सामने ठहर नहीं पाता था,

हारकर चला जाता था। इस कारण आचार्यश्री का नाम ही वादिराज पड़ गया। वाद–विवाद में कोई भी इनसे जीत नहीं सकता था।

कथा

एक समय घोर असातावेदनीय कर्म के उदय से आचार्यश्री के शरीर में गलित कुष्ठ रोग हो गया, फिर भी इनको तन की कोई परवाह नहीं थी। मुनिराज समता में रहते हुए साधना कर रहे थे। इनका राजा–महाराजा भी बहुत सम्मान करते थे। राजा जयसिंह के दरबार में आपका बड़ा सम्मान था।

एक समय, एक मिथ्यादृष्टि व्यक्ति राजदरबार में जैनधर्म की व जैन मुनियों की हँसी कर रहा था। मुनियों का उपहास कर रहा था। राजा को भटकाने का प्रयास कर रहा था। जयसिंह राजा के दरबार में एक जैन श्रेष्ठी भी था, वह अपने गुरु की निंदा व धर्म की निंदा नहीं सुन सका। उसने कहा–हमारे गुरु समताधारी होते हैं, त्यागी हैं, तपस्वी हैं। उनकी काया स्वर्ण के समान चमकती है। उनके तप का तेज तो सूर्य से भी अधिक है।

मिथ्यात्वी व्यक्ति बोला–नहीं महाराज, यह सब झूठ बोल रहा है। इनके नंगे साधु भिखारी की तरह होते हैं। रोगी होते हैं, कुरूप होते हैं। आपको विश्वास ना हो तो आप खुद चलकर देख लो। मैं तो अभी–अभी जंगल में इसके नंगे साधु को देखकर आ रहा हूँ। उनके ऊपर मक्खियाँ भिन–भिना रही हैं। रोग से पूरा शरीर गल रहा है।

श्रेष्ठी ने कहा–नहीं महाराज, यह असत्य है। मेरे गुरु ऐसे नहीं हो सकते, यह सब झूठ है। राजा ने कहा हम प्रातःकाल स्वयं जाकर देखेंगे ? क्या सत्य है और क्या असत्य है ? श्रेष्ठी वन में गया जहाँ वादिराज सूरी बैठे हुए थे। उसने जाकर नमोऽस्तु किया और सारी घटना ज्यों की त्यों बता दी। साथ में गुरुवर से निवेदन किया कि ''हे गुरुवर ! मैं जानता हूँ आपको तो तन की परवाह नहीं है; परन्तु अब जैनधर्म की शक्ति का सवाल है, धर्म की आस्था पर प्रश्न है। आप कुछ भी करिये, धर्म को बचाइये'' इतना कहकर श्रेष्ठी घर आ गया। फिर

मुनिराज रात्रि में ध्यान लगाते हैं और आदिनाथ भगवान का ध्यान करते हैं। उन्हीं के ऊपर लिखते हुए 'एकीभाव स्तोत्र' की रचना करते हैं। जब चौथे श्लोक को बोलते हैं तभी आचार्य भगवान का कुष्ठ रोग मिट जाता है। श्लोक नं. 4–

प्रागवेह त्रिदिव भावना देष्यता भव्य पुण्यात्–
पृथ्वीचक्रं कनकमयतां देव निन्येत्वयेदम्।
ध्यानद्वारं मम रुचिकरं स्वान्तगेहं प्रविष्ट–
स्तत्किंचित्रं जिनवपुरिदं यत्सुवर्णी करोषि।।4।।

अर्थ– जबकि स्वर्ग लोक से माता के गर्भ में आने के छह महीने पहले ही आपने इस पृथ्वी मण्डल को सुवर्णमय बना दिया, तो फिर ध्यान के द्वारा मेरे मनोहर अन्तःकरण रूप मंदिर में प्रविष्ट हुए आप कुष्ठरोग से पीड़ित मेरे इस शरीर को यदि सुवर्णमय बना दें तो इसमें क्या आश्चर्य है अर्थात् कुछ नहीं।

इस प्रकार 25 श्लोक आचार्यश्री बनाते हैं। 26वाँ श्लोक आचार्य भगवन् के नाम का है। एक ही रात में पूरे **'एकीभाव स्तोत्र'** की रचना करते हैं और भगवान आदिनाथ की भक्ति से आचार्यश्री का कुष्ठरोग पूरा समाप्त हो जाता है, परन्तु वे एक कनिष्ठा ऊँगली में दिखाने के लिये कुष्ठ रखते हैं। यह है–भगवान की भक्ति का चमत्कार।

कहते हैं– एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का कुछ नहीं करता अगर ऐसा होता तो भगवान की भक्ति से कुष्ठ रोग नहीं मिटता परन्तु जब तक हम संसार में हैं तब तक एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का कथंचित् कर्त्ता–धर्त्ता है। अनेक उदाहरण हमारे प्रथमानुयोग में पढ़ने के लिये मिल जायेंगे।

प्रातःकाल राजा अपनी प्रजा के साथ मुनिराज के दर्शन के लिये आया तो दूर से ही उसे जंगल में मुनिराज का चमकता हुआ तेज दिखाई दिया। राजा गुरुवर के निकट आया। श्रेष्ठी से पूछा–ये ही तुम्हारे गुरु हैं। श्रेष्ठी ने कहा–हाँ महाराज ! ये ही मेरे गुरु हैं। गुरु की चमचमाती स्वर्ण–सी काया देखकर राजा

आश्चर्य में पड़ गया और भक्तिपूर्वक प्रणाम किया तथा मिथ्यादृष्टि व्यक्ति पर क्रोध करने लगा।

इतने में मुनिराज ने कहा कि हे राजन्! उसका कथन भी सत्य है और जो मैं आपके सामने हूँ वह भी सत्य है। परन्तु इस व्यक्ति की और सब बातें सत्य नहीं हैं कि सभी साधु कोड़ी होते हैं, रोगी होते हैं, कुरूप हैं। जैनधर्म के समान और कोई धर्म नहीं है। जैन साधु के समान कोई क्षमावान नहीं है। मुनिराज ने अपनी ऊँगली दिखाई और कहा–यह हमारे धर्म का प्रभाव है। कल तक मुझे कुष्ठरोग अवश्य था; परन्तु भगवान की भक्ति में इतनी शक्ति है कि वह कुष्ठरोग क्षणमात्र में समाप्त हो गया और मेरी काया सोने सी चमकने लगी।

इतना सुनते ही सारे निंदा करने वाले मुनिराज के चरणों में झुक गये, सब ने क्षमायाचना की। राजा ने भी क्षमा माँगी। सब ने क्षमा माँगकर मिथ्यात्व को छोड़ दिया। राजा व सारी प्रजा ने सम्यक्दर्शन को प्राप्त किया।

भगवान की भक्ति करके आचार्य भगवन् ने सारे संसार को बता दिया कि जिसके मन में सच्ची श्रद्धा होती है उसकी भक्ति उस भक्त को दुःखों से छुटकारा दिलाती है, मुक्त कराती है।

वादिराज मुनिराज की भक्ति जग में प्रसिद्ध हुई। एक रात में काया स्वर्ण की बन गई। हम भी भगवान की भक्ति सच्ची श्रद्धा से करें तो आज भी हमारे जीवन में अतिशय पूर्ण कार्य घटित हो सकते हैं। श्रद्धा व समर्पण भाव से अपने आपको जो प्रभु के चरणों में नतमस्तक कर लेते हैं, भगवान को अपने हृदय मंदिर की वेदी पर बिठा लेते हैं, फिर उनके दुःख, संकट कोसों दूर चले जाते हैं।

पंचमकाल में दुःखों से मुक्त होने का यदि कोई एक साधन है, मार्ग है तो वह है–प्रभु की भक्ति एवं गुरु की सेवा।

''जिसने की प्रभु की भक्ति उसने पाई मुक्ति।
जिसने की गुरु की सेवा उसने पाया सुखों का मेवा।''

इनसे पूर्व व इसके बाद भी जब–जब भी जिन गुरुओं पर असातावेदनीय कर्म का तीव्र उदय आया तब–तब गुरुओं ने अपने मन को प्रभु की भक्ति में लगाया। संकट आया, रोग आया, उपसर्ग आया, वाद–विवाद हुआ, जैनधर्म पर किसी प्रकार का प्रश्न आया उस समय आचार्यों ने बड़े समता भाव से भक्ति करके कष्टों को मिटाया, जैनधर्म का ध्वज फहराया।

किसी भी आचार्य ने संकट या अस्वस्थ अवस्था में सीधे समाधिमरण नहीं किया बल्कि सारे जगत को यह संदेश दिया कि प्रभु की भक्ति करते जाओ, सारे संकट, आधि–व्याधि सब स्वयमेव मिट जायेंगे।

आचार्य समन्तभद्र को जब भस्मक व्याधि हुई तो उन्होंने **'स्वयंभू स्तोत्र'** की रचना की, रोग निदान किया। पूज्यपाद आचार्य की नेत्र ज्योति चली गई तो उन्होंने **शांति भक्ति** की रचना की, अपना रोग मिटाया। मानतुंग आचार्य को राजा ने 48 तालों में बंद किया तो उन्होंने **भक्तामर स्तोत्र** रचकर जन–जन का कल्याण किया। अकलंक स्वामी ने वाद–विवाद के समय **अकलंक स्तोत्र** की रचना की। स्वयं वादिराज मुनिराज को जब कुष्ठ रोग हुआ तो उन्होंने **'एकीभाव स्तोत्र'** की रचना की। इन सब आचार्यों ने प्रभु की भक्ति करके सभी प्रकार के कष्टों को मिटाया, भक्तों को भक्ति का मार्ग बताया। आजकल लोग स्तोत्र आदि पढ़ना नहीं चाहते हैं। केवल स्वाध्याय करना चाहते हैं; परन्तु इन आचार्यों से हमें शिक्षा लेना चाहिये। हमारे आचार्य, हमारे लिये इतने सुन्दर–सुन्दर स्तोत्र बनाकर रख गये हैं जिनको पढ़कर हम अपने कष्ट मिटा सके। जब आचार्यों के तन में व्याधि हुई तो उन्होंने मात्र स्वाध्याय नहीं किया उस समय प्रभु की भक्ति की ऐसी भक्ति की कि उनकी भक्ति इतिहास में अजर अमर हो गई।

'भक्तामर स्तोत्र' में एक श्लोक आता है–

आपादकण्ठ–मुरु–शृंखल–वेष्टिताङ्गाः
गाढं बृहन्–निगड–कोटि–निघृष्ट–जंघाः।
त्वन्नाम–मन्त्र–मनिशं मनुजाः स्मरन्तः
सद्यः स्वयं विगत–बन्ध–भया भवन्ति॥46॥

केवल भगवान का नाम मात्र लेने से हमारे दुःख, संकट दूर हो सकते हैं। हमें चाहे संस्कृत स्तोत्र का अर्थ समझ में नहीं भी आये तो भी श्रद्धा से आचार्यों के द्वारा जो स्तोत्र जिस भाषा में लिखा है उसे उसी भाषा में पढ़ने व सुनने से अधिक पुण्य का बंध होता है। 24 घण्टे में एक न एक स्तोत्र का पाठ अवश्यमेव सभी भक्तों को करना चाहिये। स्तोत्र पढ़ना, पाठ करना, मंत्र जाप करना, भगवान के नाम मंत्र का स्मरण करना, स्तुति करना; ये सब भक्ति हैं।

मनुष्य का मन बड़ा चंचल है, एक चीज को अधिक समय तक कोई भी व्यक्ति नहीं पढ़ सकता इसलिये मन को भक्ति में लगाने के लिये आचार्यों ने अनेक स्तोत्र बनाये, पाठ आदि रचाये हैं। दुःखों से मुक्त होने के उपाय बताये हैं। श्रद्धा भक्ति व आस्था से इन सभी स्तोत्र को पढ़ते रहें और कर्मों की शृंखला को काटकर भव से तिर जाये। ऐसे मोक्षमार्ग को बताने वाले भक्ति का मार्ग दिखाने वाले आचार्य **वादिराज महामुनिराज** के चरणों में बारम्बार नमोऽस्तु–नमोऽस्तु–नमोऽस्तु।

इस विधान का संपादन करने वाले प्रज्ञायोगी **दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव** जो कि कविहृदय हैं। काव्य कुशलता के धनी कवियों के कवि महाकवि गुरुदेव की लेखनी में मानो साक्षात् श्रुतदेवी माँ शारदा विराजमान होकर उनके हाथों से कलम चलवाती है, अपनी उपस्थिति का उल्लेख करवा जाती है। मैय्या सरस्वती से एवं भगवान आदिनाथ से यही प्रार्थना करती हूँ कि गुरुदेव की लेखनी इसी तरह भक्ति में चलती रहे, भक्ति के रस में भक्तों को लगाती रहे। ऐसे गुरुवर के श्री चरणों में आस्थाश्री का त्रय भक्तिपूर्वक नमोऽस्तु–नमोऽस्तु–नमोऽस्तु।

तीनों विधानों को छपवाने वाले दान–दातारों को एवं मुद्रक, प्रकाशक, विधान करने वाले, कराने वाले सभी भक्तों को मंगलमय शुभाशीर्वाद।

–आर्यिका आस्थाश्री

पूजन की थाली में निम्नलिखित श्लोक बोलते हुए स्वस्तिक बनायें व अंक लिखें–

श्लोक– रयणत्तयं च वंदे चउवीस जिणे च सव्वदा वंदे।
पञ्च गुरुणां वंदे चारण–चरणं च सव्वदा वंदे।।

3

2 卐 24

5

विनय पाठ

(दोहा)

प्रथम जिनेश्वर देव हो, वीतराग सर्वज्ञ।
हित उपदेशी नाथ तुम, ज्ञानरवि मर्मज्ञ।।1।।
केवलज्ञानी बन प्रभो, हरा जगत् अंधियार।
तीन लोक के बंधु बन, किया जगत् उपकार।।2।।
धर्म देशना से मिला, जग को दिव्य प्रकाश।
तव चरणों में नित रहे, यही करें अरदास।।3।।
कर्म बेड़ियाँ तोड़ने, भक्ति करें त्रयकाल।
तीन योग से हे प्रभो !, चरणों में नत भाल।।4।।
चतुर्गति भव भ्रमण से, तारों हमें जिनेश।
दयानिधि जिन ! कर दया, हरलो पाप विशेष।।5।।
प्रभुवर पूजा आपकी, सर्व रोग विनशाय।
विष भी अमृत हो प्रभो !, शत्रु मित्र बन जाय।।6।।
हलधर बलधर चक्रधर, अर्चा के उपहार।
परम्परा जिनभक्ति से, दे प्रभु पद उपहार।।7।।
बड़े पुण्य से जिन मिले, मिला प्रभु का द्वार।
मुक्त करो त्रय रोग से, विनती बारम्बार।।8।।
हम सेवक प्रभु आपके, हे अबोध ! अनजान।
राग–द्वेष अज्ञान हर, दे दो सच्चा ज्ञान।।9।।

मंगल उत्तम शरण है, मंगलमय जिनधर्म।
मंगलकारी सब गुरु, हरो हमारे कर्म॥10॥
चौबीसों जिनवर नमूँ, नमन पंच परमेश।
जिनवाणी गणधर गुरु, 'आस्था' नमें हमेश॥11॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पूजा आरंभ (हिन्दी)

ॐ जय-जय-जय - नमोस्तु-नमोस्तु-नमोस्तु।
णमो अरिहन्ताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं॥

(ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः परिपुष्पाञ्जलि क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पवज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा, पुरिपुष्पाञ्जलि क्षिपामि।

णमोकार मंत्र महिमा

(चौपाई)

अपवित्र या जन पवित्र हो, सुस्थित हो या दुस्थित भी हो।
नमस्कार मंत्रों को ध्यायें, पापों से छुटकारा पायें॥1॥
सर्व अवस्था में भी ध्यायें, पापी भी पावन बन जाये।
जो सुमिरे नित परमातम को, अन्दर बाहर शुचि बने वो॥2॥
अपराजित ये मंत्र कहाता, सब विघ्नों को दूर भगाता।
सब मंगल में मंगलकारी, प्रथम सुमंगल जग उपकारी॥3॥
महामंत्र णवकार हमारा, सब पापों से दे छुटकारा।
सब मंगल में प्रथम कहाता, महामंत्र मंगल कहलाता॥4॥

परम ब्रह्म परमेष्ठी वाचक, सिद्धचक्र सुन्दर बीजाक्षर।
मैं मन–वच–काया से नमता, नमस्कार मंत्रों को करता॥5॥
अष्टकर्म से मुक्त जिनेश्वर, श्रीपति जिन मंदिर परमेश्वर।
सम्यक्त्वादि गुणों के स्वामी, नमस्कार मैं करता स्वामी॥6॥
जिनवर की संस्तुति करने से, मुक्ति मिले सारे विघ्नों से।
भूतादि का भय मिट जाता, विष निर्विष निश्चित हो जाता॥7॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे कल्याणमहंयजे॥1॥

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनइष्टमहंयजे॥2॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्ध आचार्य उपाध्याय सर्वसाधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाममहंयजे॥3॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल विधान

(शंभु छंद)

श्री मज्जिनेन्द्र हो विश्ववंद्य, तुम तीन जगत के ईश्वर हो।
तुम चऊ अनंत गुण के धारी, स्याद्वाद धर्म परमेश्वर हो॥
श्री मूल संघ की विधि से मैं, अपना बहु पुण्य बढ़ाने को।
मैं मंगल पुष्प चढ़ाता हूँ, जिन पूजा यज्ञ रचाने को॥1॥
त्रैलोक्य गुरु हे जिनपुंगव !, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ।
अपने स्वभाव में सुस्थित जिन, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ॥
सम्पूर्ण रत्नत्रय के धारी, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ।
हे समवशरण वैभव धारी, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ॥2॥
अविराम प्रवाहित ज्ञानामृत, सागर को पुष्प समर्पित है।
निज परभावों के भेद विज्ञ, जिनवर को पुष्प समर्पित है॥

त्रिभुवन को सारे द्रव्यों के, नायक को पुष्प समर्पित है।
त्रैकालिक सर्व पदार्थों के, ज्ञायक को पुष्प समर्पित है॥3॥
पूजा के सारे द्रव्यों को, श्रुत सम्मत शुद्ध बनाया है।
यह भाव शुद्धि के अवलम्बन, द्रव्यों को शुद्ध सजाया है॥
शुचि परमातम का अवलम्बन, आतम को शुद्ध बनाता है।
उसको पाने हे जिन ! तेरी, यह पूजा भव्य रचाता है॥4॥
अर्हत् पुराण पुरुषोत्तम जिन, उनमें न सचमुच गुरुता है।
मैं भी स्वभाव से उन सम हूँ, मुझमें न निश्चय लघुता है॥
प्रभु से हो एकाकार मेरा, मैं ऐसी भक्ति रचाता हूँ।
केवल ज्ञानाग्नि में अपना, मैं पुण्य समग्र चढ़ाता हूँ॥5॥

ॐ ह्रीं जिनप्रतिमोऽपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्वस्ति मंगल पाठ

(चौपाई)

वृषभ सुमंगल करे हमारा, अजित सुमंगल करे हमारा।
संभव स्वामी मंगलकारी, अभिनंदन हैं मंगलकारी॥1॥
सुमतिनाथ हैं मंगलकारी, पद्मप्रभु हैं मंगलकारी।
श्री सुपार्श्व जिन मंगलकारी, चंद्रप्रभु हैं मंगलकारी॥2॥
पुष्पदंत हैं मंगलकारी, शीतल स्वामी मंगलकारी।
श्री श्रेयांस जिन मंगलकारी, वासुपूज्य हैं मंगलकारी॥3॥
विमलनाथ हैं मंगलकारी, श्री अनंत जिन मंगलकारी।
धर्मनाथ हैं मंगलकारी, शांतिनाथ हैं मंगलकारी॥4॥
कुंथुनाथ हैं मंगलकारी, अरहनाथ हैं मंगलकारी।
मल्लिनाथ हैं मंगलकारी, मुनिसुव्रत हैं मंगलकारी॥5॥
नमि जिनवर हैं मंगलकारी, नेमीनाथ हैं मंगलकारी।
पार्श्वनाथ हैं मंगलकारी, वीर जिनेश्वर मंगलकारी॥6॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्वस्ति मंगल विधान

(यहाँ प्रत्येक श्लोक के अंत में पुष्पाञ्जलि क्षेपण करना चाहिए।)

नित्य अचल क्षायिक ज्ञानधारी, विशुद्ध मनःपर्यय ज्ञानधारी।
देशावधि आदि युत ऋषि मुनिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥1॥

महाकोष्ठ बीजबुद्धि पदानुसारि, संभिन्न संश्रोतृ स्वयं बुद्धिधारी।
प्रत्येकबुद्ध-बोधिबुद्ध ऋषिवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥2॥

अभिन्नदशपूर्व-चतुर्दश पूर्वी, दिव्य मतिज्ञान महाबलधारी।
अष्टांगनिमित्त ज्ञाता ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥3॥

स्पर्श-चक्षु-कर्ण-घ्राण-रसना, आदि प्रबल इन्द्रिय के धारी।
महाशक्तिवन्त जिनमुनि-यति-ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥4॥

फल-तन्तु-नीर-जंघा-श्रेणी, पुष्प-बीज-अंकुर-रवि-अग्नि-गामी।
नभ-जल-वायुचारण ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥5॥

अणु-महालघु-गुरुऋद्धिधारी, सकामरूपित्व-वशित्वधारी।
वर्द्धमान बल के धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥6॥

मन औ वचनबल-कायबल ऋद्धि, प्राकाम्य-अप्रतिघात गुणधारी।
विक्रिया-क्रियाऋद्धि धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥7॥

उग्रोग्रतप-दीप्त-तप-तप्ततपसी, अवस्थित-उग्रतप-महातपऋद्धि।
तपो-लब्धि आदि से युक्त ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥8॥

आमर्ष-सर्वौषध ऋद्धिधारी, आषीर्विष-दृष्टिविष बल धारी।
सखिल्ल-विडजल्ल-मल्लौषधियुक्त, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥9॥

क्षीरास्रवी-घृतस्रावी मुनीश्वर, अमृत-मधु-महारस के धारी।
अक्षीणआलय-महानस आदि, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥10॥

इति परमर्षि स्वस्ति मंगल विधानं

(9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें)

श्री नित्यमह पूजा

रचियित्री : ग. आर्यिका राजश्री माताजी

शंभु छन्द *(तर्ज- हे वीर तुम्हारे...)*

अरिहंत, सिद्ध, सूरी, पाठक, साधु और जिनवर चौबीसों।
गणधर जिन पंच बालयतिवर, जिन आगम गुरु प्रभुवर बीसों॥
माँ जिनवाणी, निर्वाणभूमि, रत्नत्रय, दशलक्षण प्यारा।
नंदीश्वर पंचमेरू जिनवर, जिनचैत्य चैत्यालय मनहारा॥
जिनधर्म जिनागम बाहुबली, सोलहकारण पूजन करता।
इनका आह्वानन करके मैं, श्री मोक्ष महल का सुख वरता॥1॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

नरेन्द्र छन्द *(तर्ज : माइन-माइन...)*

धीर वीर गंभीर प्रभु की अर्चा मैं नित करता हूँ।
निर्मल जल की त्रय धारा दे जन्म-जरा-मृत हरता हूँ॥
देव-शास्त्र-गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा॥
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा॥1॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चंदन चरण चढ़ाता शीतलता मुझको देना।
भव का बन्धन हरने वाले भव की ज्वाला हर लेना॥ देव शास्त्र..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल मनोहर अक्षत लाया अक्षयपद पाने हेतू।
अक्षयपद को देने वाली पूजन है सबका सेतू॥ देव शास्त्र..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जल भूमिज बहु पुष्प चढ़ाऊँ श्रद्धा से जिन गुण गाऊँ।
कामबाण को वश में करके मन ही मन मैं हर्षाऊँ ॥
देव-शास्त्र-गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा॥
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा॥4॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पुआ पकौडी रबड़ी घेवर आदिक व्यंजन मैं लाया।
क्षुधावेदनी के भेदन को प्रभु सन्मुख दौड़ा आया॥ देव शास्त्र..॥5॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग दीपों की थाली ले आरती प्रभु की गाऊँगा।
मोहकर्म का नाश मेरा हो सम्यक्भाव बनाऊँगा॥ देव शास्त्र..॥6॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप धूपायन में खेकर मैं अष्टकर्म का हनन करूँ।
प्रभु प्रतिमा के दर्शन करके निज स्वभाव का वरण करूँ॥ देव शास्त्र..॥7॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे मीठे फल से अर्चा मनवांछित फल देती है।
प्रभु की अर्चा मेरे जीवन के संकट हर लेती है॥ देव शास्त्र..॥8॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादिक आठों द्रव्यों का सुन्दर थाल सजाया है।
पद अनर्घ्य की अभिलाषा से भक्तिभाव जगाया है॥ देव शास्त्र..॥9॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : **वीतराग भगवान की, पूजा सब सुख खान।**
त्रयधारा जल की करूँ, छोड़ूँ सब अभिमान॥

शांतये शांतिधारा।

दोहा- काम सृष्टि का नाश हो, पुष्पवृष्टि के साथ।
पुष्पांजलि क्षेपण करूँ, पूर्ण विनय के साथ।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : जयमाला की माल से, गूंजे जय-जयकार।
जयमाला हम पढ़ रहे, मिलकर सब नर-नार।।

शंभु छन्द *(तर्ज : ये देश है वीर...)*

श्री वीतराग सर्वज्ञ हितैषी अरिहंतों को नमन करूँ।
श्री सिद्ध सूरी पाठक साधु जिनचैत्य जिनालय नमन करूँ।।
सब द्वीपों के प्रभुवर न्यारे सीमंधर आदिक को ध्याऊँ।
श्री पंचमेरू अरू नंदीश्वर के चैत्यालय के गुण गाऊँ।।1।।

दशलक्षणधर्म हृदय धारूँ सोलहकारण भावन भाऊँ।
रत्नत्रय धारण करने के सम्यक् साधन को अपनाऊँ।।
चौदह सौ बावन गणधर जी सब ऋद्धि-सिद्धि देने वाले।
प्रभु के पाँचों कल्याणक भी सबका संकट हरने वाले।।2।।

जिनवर के सब जन्मस्थल को करता हूँ मैं शत-शत वंदन।
श्रावस्ती कौशाम्बी काशी अयोध्या चंद्रपुरी वंदन।।
काकंदी राजगृही मिथिला चंपापुर कुंडलपुर वंदन।
वैशाली सिंहपुरी कम्पिल हस्तिनापुर आदि वंदन।।3।।

अतिशय औ सिद्धक्षेत्र जी का सुमरण सब पाप तिमिर हरता।
मैं चंपा पावा ऊर्जयंत सम्मेदशिखर वंदन करता।।

पावा द्रोणा सोना तुंगी कैलाश चूलगिरी ध्याऊँगा।
रेसंदी मुक्ता उदयरत्न कुंथलगिरी को मैं जाऊँगा॥4॥

विपुलाचल पोदनपुर मथुरा तारंगा गजपंथा वंदन।
श्री सिद्धवरकूट कमलदहजी गुणावा शत्रुंजय वंदन॥
अहिक्षेत्र अणिंदा णमोकार जटवाडा पैठण चंवलेश्वर।
कचनेर चाँदखेड़ी पाटन जिन्तूर तिजारा गोमटेश्वर॥5॥

कुन्थुगिरी नवग्रह धर्मतीर्थ मांडल केशरिया को वंदन।
श्री महावीरजी पदमपुरा ऋषितीर्थ आदि को भी वंदन॥
जय ऊर्ध्व मध्य और अधोलोक के सब चैत्यालय मनहारी।
निर्वाण सिधारे पूज्य पुरुष की पूजा सब संकटहारी॥6॥

श्री राम हनु सुग्रीव नील महानील कुम्भ शम्बु ज्ञानी।
लवमदनांकुश सागर वरदत्त श्री बाहुबली स्वामी ध्यानी।
गौतम जम्बू सुधर्मा श्री त्रय पांडवसुत अनिरूद्ध नमन।
इस ढाईद्वीप से मोक्ष पधारे उन गुरूओं को है वंदन॥7॥

श्री पँचबालयति को ध्यायें नवदेवों की शरणा पायें।
सातिशय पुण्य कमाने को मंगलमय पूजा हम गायें॥
जिनगुण के अनुरागी बनकर संसार भ्रमण का नाश करें।
शिवपुर के राजतिलक हेतु यह 'राज' प्रभुगुण आश करें॥8॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : श्री जिन के आशीष से, प्रगटाऊँ निज ज्ञान।
पूजन-कीर्तन-भजन से 'राज' वरे शिव थान॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

ऋद्धि मंत्र

स्वाहा बोलते हुये प्रत्येक मंत्र में यहाँ पुष्प चढ़ायें या धूप चढ़ायें। विधान करने से पूर्व ऋद्धि मंत्र अवश्य पढ़े।

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ।।1 ।।

1. णमो जिणाणं
2. णमो ओहि-जिणाणं
3. णमो परमोहि-जिणाणं
4. णमो सव्वोहि-जिणाणं
5. णमो अणंतोहि-जिणाणं
6. णमो कोट्ठ-बुद्धीणं
7. णमो बीज-बुद्धीणं
8. णमो पादाणु-सारीणं
9. णमो संभिण्ण-सोदारणं
10. णमो सयं-बुद्धाणं
11. णमो पत्तेय-बुद्धाणं
12. णमो बोहिय-बुद्धाणं
13. णमो उजु-मदीणं
14. णमो विउल-मदीणं
15. णमो दस पुव्वीणं
16. णमो चउदस-पुव्वीणं
17. णमो अट्ठंग-महा-णिमित्त-कुसलाणं
18. णमो विउव्वइड्ढि-पत्ताणं
19. णमो विज्जाहराणं
20. णमो चारणाणं
21. णमो पण्ण-समणाणं
22. णमो आगासगामीणं
23. णमो आसी-विसाणं
24. णमो दिट्ठिविसाणं
25. णमो उग्ग-तवाणं
26. णमो दित्त-तवाणं
27. णमो तत्त-तवाणं
28. णमो महा-तवाणं
29. णमो घोर-तवाणं
30. णमो घोर-गुणाणं
31. णमो घोर-परक्कमाणं
32. णमो घोर-गुण-बंभयारीणं
33. णमो आमोसहि-पत्ताणं
34. णमो खेल्लोसहि-पत्ताणं
35. णमो जल्लोसहि-पत्ताणं
36. णमो विप्पोसहि-पत्ताणं
37. णमो सव्वोसहि-पत्ताणं
38. णमो मण-बलीणं
39. णमो वचि-बलीणं
40. णमो काय-बलीणं
41. णमो खीर-सवीणं
42. णमो सप्पि-सवीणं
43. णमो महुर सवीणं
44. णमो अमिय-सवीणं
45. णमो अक्खीण महाणसाणं
46. णमो वड्ढमाणाणं
47. णमो सिद्धायदणाणं
48. णमो सव्व साहूणं
(णमो भयवदो-महदि-महावीर-वड्ढमाण-बुद्ध-रिसीणो चेदि।)

इति पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

तत्त्वार्थ सूत्र विधान मंडल

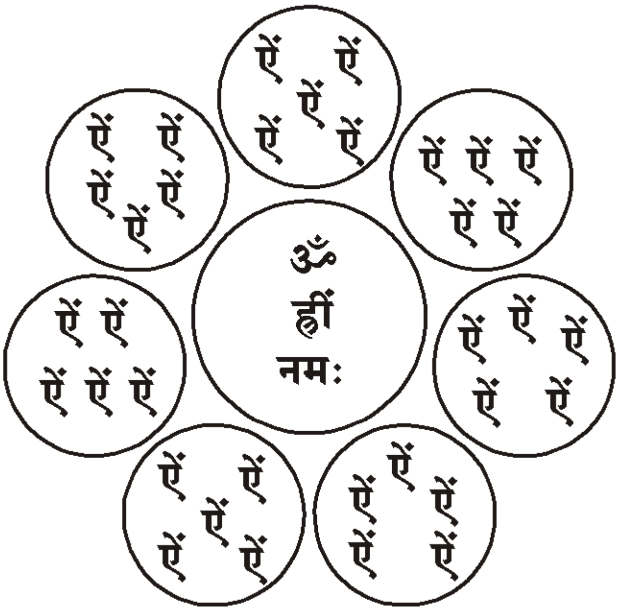

णमोकार विधान का मांडला

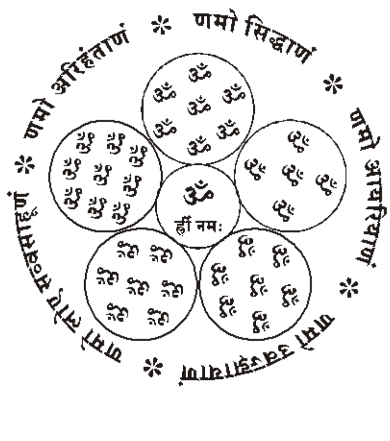

एकीभाव विधान का माण्डला

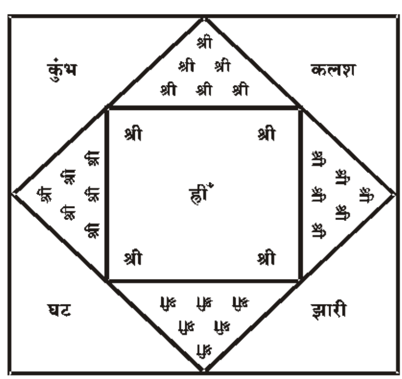

श्री तत्त्वार्थ सूत्र पूजा विधान

(नरेन्द्र छंद)

मोक्ष मार्ग के अभिनेता हैं, वीतराग सर्वज्ञ प्रभो।
हित उपदेशी ज्ञाता दृष्टा, केवलज्ञानी सिद्ध प्रभो।।
पुष्पांजलि हाथों में लेकर, हम उनका आह्वान करें।
उनके पथ पर चलकर हम सब, मुक्ति मार्ग अभियान करें।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्र दश अध्याय अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अडिल्ल छंद)

पंचामृत अभिषेक करें प्रभु आप का।
प्रभु पूजा से घड़ा फूटता पाप का।।
प्रभु पूजा से पुण्य मिले यह जानिये।
परम्परा से मुक्ति हेतु भी मानिये।।1।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे दश अध्यायेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु चरणों में हम चंदन अर्पण करें।
चंदन पूजा से भव का तर्पण करें।। प्रभु पूजा...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे दश अध्यायेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवलाक्षत से प्रभु की हम पूजा करें।
अक्षत पूजा से हम अक्षय पद वरें।। प्रभु पूजा...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे दश अध्यायेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कमलादिक पुष्पों से हम अर्चा करें।
पुष्प अर्चना काम रिपू को वश करे।। प्रभु पूजा...।।4।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे दश अध्यायेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंजन से प्रभुवर की हम पूजा करें।
नैवज अर्चा क्षुधा तृषादिक अघ हरे।।
प्रभु पूजा से पुण्य मिले यह जानिये।
परम्परा से मुक्ति हेतु भी मानिये।।5।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे दश अध्यायेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत कपूर से प्रभु की हम अर्चा करें।
मोह तिमिर का हनन दीप अर्चा करे।। प्रभु पूजा...।।6।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे दश अध्यायेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि में हम धूप चढ़ा पूजा करें।
धूप अर्चना से हम आठों अघ हरें।। प्रभु पूजा...।।7।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे दश अध्यायेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व फलों से हम प्रभु की अर्चा करें।
फल अर्चा से हम मुक्ति का सुख वरें।। प्रभु पूजा...।।8।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे दश अध्यायेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य से हम प्रभु की पूजा करें।
अर्घ चढ़ा प्रभु को अनर्घ पदवी वरें।। प्रभु पूजा...।।9।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे दश अध्यायेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधान प्रारम्भ

दोहा– मोक्षशास्त्र श्री ग्रन्थ का, करते भव्य विधान।
हाथ जोड़ विनती करें, दो प्रभु हमको ज्ञान।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

दस अध्याय के अर्घ (नरेन्द्र छंद)

मोक्ष शास्त्र अध्याय प्रथम में, जीव तत्त्व बतलाया।
सम्यक् दर्शन और ज्ञान का, इसमें वर्णन आया।।

मोक्ष शास्त्र के सर्वसूत्र को, हम सब अर्घ चढ़ायें।
सर्व सूत्र के पठन श्रवण से, एक वास फल पायें॥1॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे प्रथम अध्यायाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष शास्त्र अध्याय दूसरा, पंच भाव दर्शाये।
जीवों के तन का विकास क्रम, सहज सरल समझाये॥ मोक्ष.. ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे द्वितीय अध्यायाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है अध्याय तीसरा सुन्दर, दोनों लोक बताये।
अधोलोक व मध्यलोक संग, नर पशु लोक बताये॥ मोक्ष.. ॥3॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे तृतीय अध्यायाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्षशास्त्र अध्याय चार में, देवों का है वर्णन।
ऊर्ध्व लोक व देवायू का, उसमें पूर्ण विवेचन॥ मोक्ष.. ॥4॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे चतुर्थ अध्यायाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्षशास्त्र अध्याय पाँच में, तत्त्व अजीव बताया।
पुद्गल धर्म अधर्म काल नभ, छहों द्रव्य समझाया॥ मोक्ष.. ॥5॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे पंचम अध्यायाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्षशास्त्र अध्याय छठे में, आस्रव तत्त्व बताया।
आश्रव का संक्षिप्त विवेचन, गुरुवर ने दर्शाया॥ मोक्ष.. ॥6॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे षष्ठम अध्यायाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्षशास्त्र अध्याय सातवाँ, श्रावक धर्म बताये।
कर्मास्रव से बचने का वह, उत्तम मार्ग बताये॥ मोक्ष.. ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे सप्तम अध्यायाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्षशास्त्र अध्याय आठवाँ, बंध तत्त्व समझाये।
जीव कर्म की बंध व्यवस्था, श्री गुरुवर समझायें॥ मोक्ष.. ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे अष्टम अध्यायाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संवर और निर्जरा दोनों, नवम पाठ में आये।
मुनियों के सम्यक् चारित्र को, ये अध्याय बताये।।
मोक्ष शास्त्र के सर्वसूत्र को, हम सब अर्घ चढ़ायें।
सर्व सूत्र के पठन श्रवण से, एक वास फल पायें।।9।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे नवम अध्यायाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष शास्त्र अध्याय दशम में, मोक्ष तत्त्व दर्शाया।
मोक्षगमन व मुक्त जीव का, इसमें वर्णन आया।। मोक्ष.. ।।10।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे दशम अध्यायाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (गीता छंद)

श्रीफल ध्वजा दीपक लिये, लड्डू चढ़ायें साथ में।
अर्घों में भी पूर्णार्घ हम, अर्पण करें द्वय हाथ से।।
प्रभु को विनय से सर झुकायें, ज्ञान का वरदान दो।
मम पाप दुःख वसु कर्म क्षय हो, बोधि लब्धि प्राप्त हो।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अर्हत् सिद्ध श्रुतदेवताभ्यो तत्त्वार्थ सूत्रे सर्व अध्यायेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– मोक्षमार्ग के देवता, श्री अरिहंत जिनेश।
शांतिधार पुष्पाञ्जलि, उन पर करें हमेश।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री मोक्षशास्त्राय नमः स्वाहा।

(9, 27 या 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– मोक्ष शास्त्र के सृजक हैं, उमास्वामी आचार्य।
उनकी जयमाला पढ़ूँ, नमूँ प्रथम अनिवार्य।।

नरेन्द्र छंद

मोक्ष मार्ग के नेता हैं जो, कर्म पर्वतों के भेत्ता।
विश्व तत्त्व के ज्ञाता को मैं, तद्गुण हित वंदन करता।।

तीन काल में नव पदार्थ हैं, सात तत्त्व छह द्रव्य कहे।
अस्तिकाय भी पाँच बताये, व्रत समिति गति ज्ञान कहे॥1॥

चरित आदि के भेद बताये, मोक्ष तत्त्व के मूल कहे।
त्रिभुवन पूजित अर्हत् जिनवर, मूल सृजेता इसके हैं॥
गणधर गुंथित आचार्यों कृत, मूल शास्त्र की धारा ये।
उनका पूजन वंदन कीर्त्तन, करता हृदय हमारा है॥2॥

वर्तमान जिनशासन नायक, वर्द्धमान महावीर हुये।
उनके बाद केवली क्रमयुत, श्रुत केवली आचार्य हुये॥
अंग पूर्व सिद्धांत वेत्ता, क्रम से बहु आचार्य हुये।
अंतिम अंग अंश के ज्ञाता, श्री धरसेनाचार्य हुये॥3॥

उनसे शिक्षित सूरि युगल[1] ने, षट् खंडागम ग्रंथ रचा।
इससे पूर्व सूरि गुणधर ने, कषाय पाहुड ग्रंथ रचा॥
इत्यादिक सिद्धांत विशारद, ज्ञानी कई आचार्य हुये।
इस ही क्रम में नग्न दिगम्बर, उमास्वामी आचार्य हुये॥4॥

एक समय आचार्य मुनीश्वर, उर्जयन्तगिरि पर आये।
चर्या हित इक श्रावक के घर, पुनः उतर कर वे आये॥
श्री सिद्धय्य नामक का श्रावक, काष्ठ फलक पर सूत्र रचे।
सम्यक् बिन वह सूत्र अधूरा, उमास्वामी को नहीं जचें॥5॥

अतः सूत्र के आगे गुरुवर, सम्यक् शब्द लगाते हैं।
पूर्ण सूत्र पा सिद्धय्या अब, गुरु चरणों में आते हैं॥
श्री गुरुवर से कहते अब वे, इसे आप ही पूर्ण करो।
सर्व शास्त्र के ज्ञाता गुरुवर, मेरी इच्छा पूर्ण करो॥6॥

1. आचार्य पुष्पदंत व आचार्य भूतबलि।

इस विध उमास्वामी सूरी ने, बहुत बड़ा उपकार किया।
जैनागम सिद्धान्त शास्त्र को, संस्कृत सूत्राकार दिया।।
हर जैनी साधु व श्रावक, इसे अवश ही पढ़ते हैं।
इसके आश्रय से निशंक हो, मोक्षमार्ग पर बढ़ते हैं।।7।।

यहीं ग्रन्थ जैनों की गीता, सिद्धांतों की कुंजी है।
मोक्षमहल ले जाने वाली, यह रत्नत्रय पूंजी है।।
इस पर श्री सर्वार्थसिद्धी लिख, पूज्यपाद विख्यात हुए।
भट्ट अकलंक राजवार्तिक लिख, और अधिक विख्यात हुए।।8।।

श्री तत्त्वार्थ श्लोक रचना कर, विद्यानंद प्रसिद्ध हुए।
गंधहस्ति महा भाष्य सृजन कर, समंतभद्र जग सिद्ध हुए।।
इत्यादि कई आचार्यों ने, वृत्ति वार्तिक श्लोक लिखे।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र यों, जैनागम का रत्न दिखे।।9।।

इसके दश अध्याय पठन से, इक अनशन का लाभ मिले।
त्रय शत सत्तावन सूत्रों के, चिंतन से श्रुत लाभ मिले।।
इसे सदा पढ़कर चिंतन कर, समिति गुप्ति व्रत प्राप्त करूँ।
मोक्षशास्त्र पर 'आस्था' रखकर, मैं भी मोक्ष महान् वरूँ।।10

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे सर्वअध्याय संबंधी सप्त पंचाशत अधिक त्रिशतक सूत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

मोक्ष शास्त्र तब तक रहे, जब तक मोक्ष महान्।
'आस्था' रख इस शास्त्र पर, हम पायें श्रुत ज्ञान।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

तत्त्वार्थ सूत्र प्रथम अध्याय पूजा

(अडिल्ल छंद)

श्री तत्त्वार्थ सूत्र जग में अतिश्रेष्ठ है।
लिखे अनेकों ग्रंथ सूत्र पे श्रेष्ठ हैं।।
आह्वानन हम करें प्रथम अध्याय का।
बहु महत्त्व है पठन और स्वाध्याय का।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्र प्रथम अध्याय ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शंभु छंद)

अभिषेक सहित प्रभु की पूजा, जिन आगम में बतलायी है।
छह अंग सहित जो भक्ति करें, उनने की पुण्य कमायी है।।
जिन चैत्य चैत्यालय के संग में, हम आगम की पूजा करते।
तत्त्वार्थ सूत्र का वाचन कर, शुद्धि पूर्वक अर्चा करते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे प्रथम अध्यायाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनशास्त्र अचेतन होकर भी, सब चेतन का कल्याण करे।
हम देव शास्त्र को गंध चढ़ा, उनपे सच्चा श्रद्धान करें।। जिन..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे प्रथम अध्यायाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन आगम की हम श्रद्धा से, निशदिन ही अर्चा करते हैं।
हम जल से धोकर के अक्षत, द्रय मुट्ठी अर्पण करते हैं।। जिन..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे प्रथम अध्यायाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जो पुष्प सुगंधित हो सुन्दर, जिसपे भौंरे मंडराते हैं।
वो पुष्प प्रभु के चरण चढ़ा, हम मदन भाव विनशाते हैं।। जिन..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे प्रथम अध्यायाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्धि से शुद्ध मिठाई बना, हम पूजन करने आते हैं।
इस क्षुधा रोग को विनशाने, छप्पन पकवान चढ़ाते हैं।।
जिन चैत्य चैत्यालय के संग में, हम आगम की पूजा करते।
तत्त्वार्थ सूत्र का वाचन कर, शुद्धि पूर्वक अर्चा करते।।5।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे प्रथम अध्यायाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोने चाँदी व मिट्टी के, घृत के दीपक हम लाये हैं।
मिथ्यात्व नशाने हम अपना, प्रभु आरती करने आये हैं।। जिन..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे प्रथम अध्यायाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि में धूप चढ़ाने से, जिन मंदिर देखो महक गया।
प्रभुवर की पूजा करने से, यह आतम मेरा महक गया।। जिन..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे प्रथम अध्यायाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अति पुण्य उदय जब आता है, तब हम विधान कर पाते हैं।
हमको ये अवसर सदा मिले, हम श्रीफल आदि चढ़ाते हैं।। जिन..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे प्रथम अध्यायाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे पद अनर्घधारी स्वामी, हमको अविनाशी पद देना।
हम अर्घ चढ़ायें नाथ तुम्हें, बस इतनी अरजी सुन लेना।। जिन..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे प्रथम अध्यायाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगलाचरण

मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृताम्।
ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वन्दे तद्गुण-लब्धये।।

त्रैकाल्यं द्रव्य-षट्कं, नव-पद-सहितं जीव षट्काय-लेश्याः,
पञ्चान्ये चास्तिकाया, व्रत-समिति-गति-ज्ञान-चारित्र-भेदाः।
इत्येतन्मोक्षमूलं, त्रिभुवन-महितैः प्रोक्तमर्हद्भिरीशैः
प्रत्येति श्रद्धधाति, स्पृशति च मतिमान्, यः स वै शुद्धदृष्टिः।।1।।

सिद्धे जयप्पसिद्धे, चउव्विहाराहणाफलं पत्ते।
वंदित्ता अरहंते, वोच्छं आराहणा कमसो ।।2 ।।
उज्जोवणमुज्जवणं, णिव्वहणं साहणं च णिच्छरणं।
दंसण-णाण-चरित्तं, तवाणमाराहणा भणिया ।।3 ।।

(नरेन्द्र छंद)

मोक्ष शास्त्र है ग्रंथ हमारा, सबका ज्ञान कराये।
सूत्र रूप में रचा गुरु ने, आगम सार बताये।।
इसके लेखक उमा स्वामी हैं, उनको शीश झुकायें।
त्रय भक्ति से इसका व्रत कर, मोक्ष महल पा जायें।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे मंगलाचरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम अध्याय सूत्र

सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः ।।1 ।। तत्त्वार्थ-श्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ।।2 ।। तन्निसर्गादधि-गमाद्वा ।।3 ।। जीवाजीवास्रव-बन्ध-संवर-निर्जरा-मोक्षास्तत्त्वम् ।।4 ।। नाम-स्थापना-द्रव्यभावतस्त-न्न्यासः ।।5 ।। प्रमाण-नयैरधिगमः ।।6 ।। निर्देशस्वामित्व-साधनाधिकरण-स्थिति-विधानतः ।।7 ।। सत्संख्या-क्षेत्र-स्पर्शन-कालान्तर-भावाल्पबहुत्वैश्च ।।8 ।। मति-श्रुतावधि-मनःपर्ययकेवलानि ज्ञानम् ।।9 ।। तत्प्रमाणे ।।10 ।। आद्ये परोक्षम् ।।11 ।। प्रत्यक्षमन्यत् ।।12 ।। मतिः स्मृतिः संज्ञा चिन्ताभिनिबोध इत्यनर्थान्तरम् ।।13 ।। तदिन्द्रियानिन्द्रिय-निमित्तम् ।।14 ।। अवग्रहेहावाय-धारणाः ।।15 ।। बहुबहुविध-क्षिप्रा निःसृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणाम् ।।16 ।। अर्थस्य ।।17 ।। व्यञ्जन-स्यावग्रहः ।।18 ।। न चक्षुरनिन्द्रियाभ्याम् ।।19 ।। श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेक-द्वादश-भेदम् ।।20 ।। भव-प्रत्ययोऽवधिर्देव नारकाणाम् ।।21 ।। क्षयोपशमनिमित्तः षड् विकल्पः शेषाणाम् ।।22 ।। ऋजु-विपुलमती मनःपर्ययः ।।23 ।। विशुद्ध्यप्रतिपाताभ्यां तद्विशेषः ।।24 ।। विशुद्धि-क्षेत्र - स्वामि-विषयेभ्योऽवधि-मनःपर्यययोः ।।25 ।। मति-श्रुतयोर्निबन्धो

द्रव्येष्वसर्व-पर्यायेषु॥26॥ रूपिष्ववधेः॥27॥ तदनन्तभागे मनः पर्ययस्य॥28॥ सर्व-द्रव्य-पर्यायेषु केवलस्य॥29॥ एकादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्ना-चतुर्भ्यः॥30॥ मति-श्रुतावधयो विपर्ययश्च॥31॥ सदसतोरविशेषाद्य-दृच्छोपलब्धेरुन्मत्तवत्॥32॥ नैगम-संग्रह-व्यवहारर्जुसूत्र-शब्द-समभिरुढैवंभूता नयाः॥33॥

॥ इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे प्रथमोऽध्यायः॥1॥

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

मोक्षशास्त्र के प्रथम पाठ में, तैंतीस सूत्र बताये।
सम्यक्दर्शन प्राप्त करें हम, प्रथम सूत्र में आये॥
पाठ करें तत्त्वार्थ सूत्र का, श्रद्धा और भक्ति से।
हम पूर्णार्घ चढ़ायें भगवन्, स्वात्मभाव शक्ति से॥

ॐ ह्रीं श्री मोक्षशास्त्र ग्रंथस्य प्रथम अध्याय संबंधी त्रयस्त्रिंशत् सूत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- एक बार हम नियम से, करें सूत्र का पाठ।
उच्चारण हो शुद्धि से, हरे करम ये आठ॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री मोक्षशास्त्रे प्रथमोध्यायाय नमः स्वाहा।

(9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- जीव तत्त्व वर्णन करे, अग्रिम चऊ अध्याय।
जयमाला पढ़ हम करें, उनका नित स्वाध्याय॥

(शंभु छंद)

प्रवचनकर्त्ता अर्हंतों को, तीर्थंकर जिन को नमन करें।
उनसे प्रगटी श्रुत गंगा को, जिनवाणी को हम नमन करें॥
अर्हत् भाषित गणधर गुंथित, आचार्य रचित जिनवाणी है।
द्वादश अंगों में सजी हुई, कल्याणी माँ जिनवाणी है॥1॥

जैनागम की कुंजी स्वरूप, तत्त्वार्थ सूत्र इसमें आता।
उसमें इसका अध्याय प्रथम, रत्नत्रय पथ को दिखलाता॥
सम्यक्त्व आदि रत्नत्रय का, इसमें संक्षिप्त विवेचन है।
उनकी प्राप्ति के सर्व सूत्र, उनका ही विशद विवेचन है॥2॥

तत्त्वार्थों पर श्रद्धा करना, सम्यक्दर्शन कहलाता है।
वह भी निसर्ग से अधिगम से, भव्यात्मा को हो पाता है॥
जीवाजीवाश्रव बंध तत्त्व, संवर निर्जर व मोक्ष कहें।
इनके बोधक निक्षेप चार, निर्देश आदि अनुयोग कहें॥3॥

सम्यक्त्वादि कैसे किसको कब, कहाँ प्राप्त हो सकते हैं।
सत्संख्यादिक अनुयोगों से, इनका अनुभव कर सकते हैं॥
मति आदि सम्यक्ज्ञान पांच, सम्यक्ज्ञानी को होते हैं।
नय व प्रमाण से भवि प्राणी, आगम के ज्ञानी होते हैं॥4॥

पाँचों ज्ञानों का मोक्ष शास्त्र, विस्तृत स्वरूप समझाता है।
नैगम आदि नय भंगों से, ज्ञानी प्रवीण हो जाता है॥
सम्यग्दर्शन पाने वाला, निश्चय सिद्धाचल पाता है।
इनसे विपरीत चले जो भी, वो मिथ्यात्वी दुःख पाता है॥5॥

हम नितप्रति इसके प्रतिपादक, जिनवर को अर्घ चढ़ाते हैं।
इसका विधान व्रत पूजन कर, सूत्रों का ध्यान लगाते हैं॥
हम इस पर सच्ची श्रद्धा कर, रत्नत्रय को अपनायेंगे।
त्रय गुप्ति समिति व्रत पालन कर, हम मोक्ष महल को पायेंगे॥6॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे प्रथम अध्याय संबंधी त्रयस्त्रिंशत् सूत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– मोक्ष शास्त्र तब तक रहे, जब तक मोक्ष महान्।
'आस्था' रख इस शास्त्र पर, हम पायें श्रुत ज्ञान॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

तत्त्वार्थ सूत्र द्वितीय अध्याय पूजा

(अडिल्ल छंद)

जैनधर्म के सूत्रों को हम ध्या रहे।
जिनवर वा जैनागम के गुण गा रहे।।
सर्व सूत्र के अक्षर पे श्रद्धा करें।
मोक्ष शास्त्र का हम भी आह्वानन करें।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्र द्वितीय अध्याय ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौपाई)

निर्मल सलिल कलश में लाये, कलश सजा सिर पे रख लाये।
प्रभु का हम अभिषेक करेंगे, प्रभुवर सारे पाप हरेंगे।।1।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे द्वितीय अध्यायाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन प्रभु के चरण लगायें, वही शेष हम शीश लगायें।
यही नाथ की रज कहलाये, इससे अपना भाग्य जगायें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे द्वितीय अध्यायाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवलाक्षत मन धवल बनाये, प्रभु को अक्षत पुंज चढ़ायें।
हम भी अक्षय पदवी पायें, मोक्ष शास्त्र का व्रत अपनायें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे द्वितीय अध्यायाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प सभी को लगते प्यारे, प्रभु पद पुष्प चढ़ायें सारे।
कामबाण अपना विनशायें, काम विजेता प्रभु को ध्यायें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे द्वितीय अध्यायाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध बना नैवेद्य चढ़ायें, प्रभु की अर्चा भव्य रचायें।
क्षुधारोग से मुक्ति पायें, मुनि बन मोक्ष महल में जायें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे द्वितीय अध्यायाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करें आरती नाथ तुम्हारी, बने प्रभु के चरण पुजारी।
मोह तिमिर की हरो बिमारी, यही आपसे अरज हमारी॥6॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे द्वितीय अध्यायाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप जला मंदिर महकायें, कर्म काष्ठ को दहन करायें।
हम प्रभु पूजन करने आये, पूजन कर उत्तम पद पायें॥7॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे द्वितीय अध्यायाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हरे भरे फल आज चढ़ायें, हरा भरा जीवन बन जाये।
महामोक्ष फल प्रभु दिलवाये, हम उनके निशदिन गुण गायें॥8॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे द्वितीय अध्यायाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंध अक्षत हम लाये, पुष्प धूप अर्घादि चढ़ायें।
अर्घ चढ़ायें भक्ति रचायें, झूम-झूम कर नृत्य रचायें॥9॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे द्वितीय अध्यायाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय अध्याय सूत्र

औपशमिक-क्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्व-मौदयिक-पारिणामिकौ च॥1॥ द्वि नवाष्टा-दशैकविंशति-त्रि-भेदा यथाक्रमम्॥2॥ सम्यक्त्व-चारित्रे॥3॥ ज्ञान-दर्शन-दान-लाभ-भोगोपभोग-वीर्याणि च॥4॥ ज्ञानाऽज्ञानदर्शन-लब्धयश्चतुस्त्रित्रि-पंच भेदाः सम्यक्त्व-चारित्र-संयमासंयमाश्च॥5॥ गति-कषाय-लिङ्ग-मिथ्यादर्शनाज्ञाना-संयतासिद्ध-लेश्याश्चतुश्चतुस्त्र्येकैकैकैक-षड्भेदाः॥6॥ जीव-भव्या-भव्यत्वानि च॥7॥ उपयोगो लक्षणम्॥8॥ स द्विविधोऽष्ट-चतुर्भेदः॥9॥ संसारिणो मुक्ताश्च॥10॥ समनस्कामनस्काः॥11॥ संसारिणस्त्र-सस्थावराः॥12॥ पृथिव्यप्तेजोवायु-वनस्पतयः स्थावराः॥13॥ द्वीन्द्रियादय-स्त्रसाः॥14॥ पञ्चेन्द्रियाणि॥15॥ द्विविधानि॥16॥

निर्वृत्त्युपकरणे द्रव्येन्द्रियम॥17॥ लब्ध्युपयोगौ भावेन्द्रियम्॥18॥ स्पर्शन-रसन-घ्राण-चक्षुः-श्रोत्राणि॥19॥ स्पर्श-रस-गन्ध-वर्ण-शब्दास्तदर्थाः॥20॥ श्रुत-मनिन्द्रियस्य॥21॥ वनस्पत्यन्ताना-मेकम्॥22॥ कृमि-पिपीलिका-भ्रमर-मनुष्या-दीनामेकैक-वृद्धानि॥23॥ संज्ञिनः समनस्काः॥24॥ विग्रह-गतौ कर्मयोगः॥25॥ अनुश्रेणि गतिः॥26॥ अविग्रहा जीवस्य॥27॥ विग्रहवती च संसारिणः प्राक् चतुर्भ्यः॥28॥ एकसमयाऽविग्रहा॥29॥ एकं द्वौ त्रीन्वा-नाहारकः॥30॥ संमूर्च्छन-गर्भोपपादा जन्म॥31॥ सचित्त-शीत-संवृताः सेतरा मिश्राश्चैकशस्तद्योनयः॥32॥ जरायु-जाण्डज-पोतानां गर्भः॥33॥ देव-नारकाणा-मुपपादः॥34॥ शेषाणां संमूर्च्छनम्॥35॥ औदारिक-वैक्रियिकाहारक-तैजस-कार्मणानि शरीराणि॥36॥ परं परं सूक्ष्मम्॥37॥ प्रदेशतोऽसंख्येयगुणं प्राक् तैजसात्॥38॥ अनन्त-गुणे परे॥39॥ अप्रतीघाते॥40॥ अनादि-संबन्धे च॥41॥ सर्वस्य॥42॥ तदादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः॥43॥ निरुपभोग-मन्त्यम्॥44॥ गर्भ-संमूर्च्छनजमाद्यम्॥45॥ औपपादिकं वैक्रियिकम्॥46॥ लब्धि-प्रत्ययं च॥47॥ तैजसमपि॥48॥ शुभं विशुद्धमव्याघाति चाहारकं प्रमत्तसंयतस्यैव॥49॥ नारक-संमूर्च्छिनो नपुंसकानि॥50॥ न देवाः॥51॥ शेषास्त्रि-वेदाः॥52॥ औपपादिक-चरमोत्तमदेहासंख्येय-वर्षायुषोऽनपवर्त्यायुषः॥53॥

॥ इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे द्वितीयोऽध्यायः॥2॥

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

मोक्षशास्त्र के द्वितीय पाठ में, त्रैपन सूत्र बताये।
इन सूत्रों को पढ़कर हम भी, जीवन सुखी बनायें॥

हम पूर्णार्घ चढ़ायें मैय्या, ज्ञान निधि हम पायें।
पाठ करें व जाप करें हम, कर्म कलंक नशायें॥

ॐ ह्रीं श्री मोक्षशास्त्र ग्रन्थस्य द्वितीय अध्याय संबंधी त्रिपंचाशत् सूत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- प्रभु दर पे होती सदा, भक्ति विविध प्रकार।
कैसी भी भक्ति करो, मिलता पुण्य अपार॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री मोक्षशास्त्रे द्वितीय अध्यायाय नमः स्वाहा।
(9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- जीव देह व भाव को, कहे द्वितीय अध्याय।
इसकी जयमाला पढ़ें, व्रत विधान अपनाय॥

(कुसुमलता छंद)

मोक्षशास्त्र अध्याय दूसरा, वर्णन करे जीव विज्ञान।
इसके कर्त्ता अर्हत् गणधर, उमास्वामी आचार्य महान्॥
जीव तत्त्व के पाँच भाव हैं, क्षायिक आदि बहु परिणाम।
इनके दो नौ अठरा इक्कीस, और तीन विध हैं अविराम॥1॥

दर्शन ज्ञान चेतना वाला, जीवों का लक्षण उपयोग।
आठ भेद ज्ञानोपयोग के, चऊ प्रकार दर्शन उपयोग॥
संसारी व मुक्त जीव हैं, संज्ञी और असंज्ञी जीव।
संसारी में त्रस स्थावर, पंच भेद स्थावर जीव॥2॥

दो इन्द्रिय आदिक त्रस होते, इन्द्रिय होती हैं कुल पाँच।
द्रव्येन्द्रिय भावेन्द्रिय दो विध, सभी इन्द्रियाँ जानों पाँच॥

पृथ्वी आदि वनस्पति के, इन्द्रिय होती है कुल एक।
कृमि से नर तक बढ़ें इन्द्रियाँ, सर्व प्राणियों की प्रत्येक।।3।।

चौ इन्द्रिय तक रहे असंज्ञी, पंचेन्द्रिय में उभय प्रकार।
मन वाले होते हैं संज्ञी, विग्रह गति में कर्म विकार।।
उनकी अनुश्रेणी गति होती, विस्तृत वर्णन शास्त्र बताय।
जन्म योनि का विस्तृत वर्णन, बतलाता है ये अध्याय।।4।।

मनुज पशु खग गर्भज होते, देव नारकी के उपपाद।
शेष सभी सम्मूर्छन जन्में, पाते हैं वे घोर विषाद।।
औदारिक आदिक तन जानों, निश्चय से सब पाँच प्रकार।
सब शरीर का अनुपम वर्णन, करे शास्त्र यह रुचिराकार।।5।।

सभी नारकी और सम्मूच्र्छन, इनके होय नपुंसक वेद।
देव नपुंसक कभी न होते, शेष सभी के तीनों वेद।।
देव नारकी चरम शरीरी, या हो भोग भूमि के जीव।
इनका नहीं अकाल मरण हो, कहे शारदा आगम दीव[1]।6।।

हम दूजा अध्याय पढ़ें नित, 'आस्था' से जयमाला गाय।
इसका व्रत उपवास करें नित, मंत्र जाप कर पुण्य कमाय।।
देह सृष्टि को जान समझ हम, जन्म मरण के बंध छुड़ाय।
समिति गुप्ति संयम धारें हम, मोक्ष महल अविरल पा जाय।।7।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्र द्वितीय अध्याये त्रिपंचाशत् सूत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

मोक्ष शास्त्र तब तक रहे, जब तक मोक्ष महान्।
'आस्था' रख इस शास्त्र पर, हम पायें श्रुत ज्ञान।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

1.दीपक।

तत्त्वार्थ सूत्र तृतीय अध्याय पूजा

(दोहा)

मोक्ष शास्त्र अध्याय त्रय, भूमण्डल बतलाय।
मध्य अधो द्वय लोक का, वर्णन इसमें आय॥
पाप करे जो जीव नित, वो नरकों में जाय।
पुण्यवान मुक्ति वरें, उनकी भक्ति रचाय॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्र तृतीय अध्याय ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(दोहा)

पत्र पुष्प युत कुंभ ले, करते हम अभिषेक।
प्रभुवर का अभिषेक ही, नाशे दुःख प्रत्येक॥1॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे तृतीय अध्यायाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभुवर के सर्वांग में, चंदन लेप कराय।
मिले सुगन्धित तन उसे, जो नित गंध लगाय॥2॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे तृतीय अध्यायाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जैसे अक्षत धवल है, वैसे ही हो भाव।
पूजा हम करते प्रभो, मन में भर उत्साह॥3॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे तृतीय अध्यायाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

विविध रंग के पुष्प ले, प्रभु के चरण चढ़ाय।
कामाग्नि हम क्षय करें, ब्रह्मचर्य गुण पाय॥4॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे तृतीय अध्यायाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हे प्रभुवर हमको लगा, क्षुधा व्याधि का रोग।
षट्रस व्यंजन से भजें, बनने पूर्ण निरोग॥5॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे तृतीय अध्यायाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्ष्य दीप से अर्चना, हम करते जिन आज।
करें आरती भक्ति से, बजा–बजा कर साज॥6॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे तृतीय अध्यायाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप धूपायन में चढ़ा, करें मंत्र का जाप।
ॐ ह्रीं हम बोलते, हरो नाथ ! सब पाप॥7॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे तृतीय अध्यायाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मनोज्ञ फलादि से, पूजा करें विशेष।
प्रभु पूजा से पूज्य बन, इक दिन बनें जिनेश॥8॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे तृतीय अध्यायाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल से फल तक अर्घ में, आठों द्रव्य मिलाय।
अष्टम मही के नाथ को, उत्तम अर्घ चढ़ाय॥9॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे तृतीय अध्यायाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय अध्याय सूत्र

रत्न–शर्करा–बालुका–पङ्क–धूम–तमो–महातमः– प्रभा भूमयो घनाम्बुवाताकाश–प्रतिष्ठाः सप्ताधोऽधः॥1॥ तासु त्रिंशत्पंचविंशति–पंचदश–दश–त्रि–पंचोनैक–नरक–शतसहस्राणि पञ्च चैव यथाक्रमम्॥2॥ नारका नित्याशुभतर–लेश्या–परिणाम–देह–वेदना–विक्रियाः॥3॥ परस्परोदीरित–दुःखाः॥4॥ संक्लिष्टाऽसुरोदीरित–दुःखाश्च प्राक् चतुर्थ्याः॥5॥ तेष्वेक–त्रि–सप्त–दश–सप्तदश–द्वाविंशति–त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमा सत्त्वानां परा स्थितिः॥6॥ जम्बूद्वीप–लवणोदादयः शुभनामानो द्वीपसमुद्राः॥7॥ द्विर्द्विर्विष्कम्भाः पूर्व–पूर्व–परिक्षेपिणो वलयाकृतयः॥8॥ तन्मध्ये मेरुनाभिर्वृत्तो योजन–शतसहस्रविष्कम्भो जम्बूद्वीपः॥9॥ भरतहैमवतहरिविदेहरम्यक–

हैरण्यवतैरावतवर्षाः क्षेत्राणि ।।10।। तद्विभाजिनः पूर्वापरायता हिमवन्महाहिम-वन्निषध-नील-रुक्मि-शिखरिणो वर्षधर-पर्वताः ।।11।। हेमार्जुन-तपनीय-वैडूर्य-रजत-हेममयाः ।।12।। मणिविचित्र-पार्श्वा उपरिमूले च तुल्य-विस्ताराः ।।13।। पद्म-महापद्म-तिगिञ्छ-केशरि-महापुण्डरीक-पुण्डरीका ह्रदा-स्तेषामुपरि ।।14।। प्रथमो योजन-सहस्रायामस्तदर्द्ध-विष्कम्भो ह्रदः ।।15।। दशयोजना-वगाहः ।।16।। तन्मध्ये योजनं पुष्करम् ।।17।। तद्द्विगुण-द्विगुणा ह्रदाः पुष्कराणि च ।।18।। तन्निवासिन्यो देव्यः श्री-ह्री-धृति-कीर्ति-बुद्धि-लक्ष्म्यः पल्योपमस्थितयः ससामानिक-परिषत्काः ।।19।। गङ्गा-सिन्धु-रोहिद्रोहितास्या-हरिद्धरिकान्ता-सीता-सीतोदा-नारी-नरकान्ता-सुवर्ण-रूप्य-कूला-रक्ता-रक्तोदाः सरित-स्तन्मध्यगाः ।।20।। द्वयोर्द्वयोः पूर्वाः पूर्वगाः ।।21।। शेषास्त्वपरगाः ।।22।। चतुर्दश-नदी-सहस्र-परिवृता गङ्गा-सिन्ध्वादयो नद्यः ।।23।। भरतः षड्विंशति-पञ्चयोजनशत-विस्तारः षट् चैकोनविंशति-भागा योजनस्य ।।24।। तद्द्विगुण-द्विगुण-विस्तारा वर्षधर-वर्षा विदेहान्ताः ।।25।। उत्तरा-दक्षिण-तुल्याः ।।26।। भरतैरावतयोर्वृद्धिह्रासौ षट्समयाभ्यामुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभ्याम् ।।27।। ताभ्यामपरा भूमयोऽव-स्थिताः ।।28।। एक-द्वि-त्रि-पल्योपम-स्थितयो हैमवतक-हारि-वर्षक-दैवकुरवकाः ।।29।। तथोत्तराः ।।30।। विदेहेषु संख्येय-कालाः ।।31।। भरतस्य विष्कम्भो जम्बूद्वीपस्य नवति-शत-भागः ।।32।। द्विर्धातकीखण्डे ।।33।। पुष्करार्धे च ।।34।। प्राङ्मानुषोत्तरान्मनुष्याः ।।35।। आर्या म्लेच्छाश्च ।।36।। भरतैरावतविदेहाः कर्मभूमयोऽन्यत्र देवकुरूत्तर-कुरुभ्यः ।।37।। नृस्थिती पराऽवरे त्रिपल्यो-पमान्तर्मुहूर्ते ।।38।। तिर्यग्योनिजानां च ।।39।।

।। इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे तृतीयोऽध्यायः ।।3।।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

मोक्षशास्त्र के तृतीय पाठ में, कहे सूत्र उन्चालीस।
इन सूत्रों का अर्थ समझकर, मिटे कर्म की नालिश[1]॥
दीप ध्वजा लड्डू श्रीफल ले, जिन मंदिर हम आये।
इन सूत्रों को अर्घ चढ़ाकर, निज भव भ्रमण मिटायें॥

ॐ ह्रीं श्री मोक्षशास्त्र ग्रंथस्य तृतीय अध्याय संबंधी एकोन्चत्वारिंशत् सूत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- ये तीजा अध्याय है, त्रय गुण हमें दिलाय।
शांतिधारा पुष्पांजलि, प्रभु के चरण चढ़ाय॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री मोक्षशास्त्रे तृतीय अध्यायाय नमः स्वाहा।
(9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- चौबीसों जिनवर नमें, श्रुत गणधर गुरुराय।
कहें भूगोल त्रिलोक का, पूजें त्रय अध्याय॥

(जोगीरासा छंद)

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु को वन्दन।
जैनधर्म श्रुत चैत्य जिनालय, उनका नित अभिनन्दन॥
तीन लोक संस्थान विचय का, हम सब ध्यान लगायें।
मोक्षशास्त्र अध्याय तीन की, जयमाला अब गायें॥1॥

रत्नप्रभादिक सात पृथ्वियां, नीचे क्रम से होती।
तीन वलय पर अवलम्बित वे, नरक भूमियाँ होती॥

---

1. मुकदमा।

उनमें कुल बिल चौरासी लख, शास्त्र हमें बतलाये।
नरक दुःखों का वर्णन इसमें, छह सूत्रों में आये॥2॥

जम्बू आदिक द्वीप असंख्यों, मध्य लोक में जानों।
लवणादिक सागर भी अनगिन, वलयाकृति में मानो॥
द्वीपों को सागर ने घेरा, सागर को द्वीपों ने।
इक से दूजे दूने घेरे, चूड़ी की आकृति में॥3॥

उनके बीच जगत् नाभि सम, मेरू सुदर्शन जानो।
एक लाख चालीस योजन का, उसको ऊँचा मानो॥
सभी द्वीप में क्षेत्र कुलाचल, सरवर पुष्कर नदियाँ।
सभी अकृत्रिम रत्नमयी हैं, उत्तर दक्षिण तुल्या॥4॥

छह कम उनचालिस सूत्रों में, मध्य लोक का वर्णन।
जिज्ञासु तत्त्वार्थ सूत्र का, करें पूर्ण अवलोकन॥
मध्यलोक में मनुज पशु व, देव देवियाँ रहते।
मुनिगण इसमें तप साधन कर, मुक्ति रमा को वरते॥5॥

मध्यलोक के जीव यहाँ से, चारों गति में जाते।
यहीं तीर्थंकर आदिक होते, मोक्ष यहाँ से पाते॥
इस विधान को करके हम भी, मोक्ष महल को पायें।
समिति गुप्ति व्रत पालन करके, आठों कर्म नशायें॥6॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे तृतीय अध्याये एकोन्चत्वारिंशत् सूत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

मोक्ष शास्त्र तब तक रहे, जब तक मोक्ष महान्।
'आस्था' रख इस शास्त्र पर, हम पायें श्रुत ज्ञान॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

तत्त्वार्थ सूत्र चतुर्थ अध्याय पूजा

(नरेन्द्र छंद)

जिनवाणी जिन सूत्र जिनालय, जैनागम हितकारी।
गुरुओं के हर एक वाक्य हैं, जन–जन के उपकारी।।
हम उनका आह्वानन् करते, कर में पुष्प सजायें।
मन मंदिर में उन्हें बिठाकर, अपना ज्ञान बढ़ायें।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्र चतुर्थ अध्याय ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अडिल्ल छंद)

प्रभु के पद हम निर्मल नीर चढ़ा रहे।
जन्मादिक त्रय रोग नशाने ध्या रहे।।
नर नारी सुर पूजा करते आपकी।
पूजक पूज्य बने पूजा कर नाथ की।।1।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे चतुर्थ अध्यायाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के चरणन् गंध लगायें हाथ से।
तिलक करें हम उसी गंध का माथ पे।। नर–नारी...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे चतुर्थ अध्यायाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम भक्ति करें हम उत्तम व्रत धरें।
उत्तम अक्षत से प्रभु की पूजा करें।। नर–नारी...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे चतुर्थ अध्यायाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कमल सुलोचन जिनके प्यारे पद कमल।
उनके चरण चढ़ायें हम खिलते कमल।। नर–नारी...।।4।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे चतुर्थ अध्यायाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध मिठाई प्रभु हम नित्य चढ़ा रहे।
झूम झूमकर प्रभु की पूजा गा रहे॥
नर नारी सुर पूजा करते आपकी।
पूजक पूज्य बने पूजा कर नाथ की॥5॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे चतुर्थ अध्यायाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप जलाकर करें प्रभु की आरती।
प्रभु आरती मोह तिमिर परिहारती॥ नर-नारी...॥6॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे चतुर्थ अध्यायाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

करें धूप से प्रभुवर की शुभ अर्चना।
अष्ट कर्म क्षय हेतु करते वंदना॥ नर-नारी...॥7॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे चतुर्थ अध्यायाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वश्रेष्ठ सब ऋतु के फल हम ला रहे।
हे त्रैलोक्यपति ! प्रभु तुम्हें चढ़ा रहे॥ नर-नारी...॥8॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे चतुर्थ अध्यायाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंध अक्षत पुष्पादिक ला रहे।
दीप धूप चरु फल व अर्घ चढ़ा रहे॥ नर-नारी...॥9॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे चतुर्थ अध्यायाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ अध्याय सूत्र

देवाश्चतुर्णिकायाः॥1॥ आदितस्त्रिषु पीतान्त-लेश्याः॥2॥ दशाष्ट-पञ्च द्वादश विकल्पाः कल्पोपपन्न-पर्यन्ताः॥3॥ इन्द्र-सामानिकत्रायस्त्रिंशपारिषदात्मरक्ष - लोक - पालानीक-प्रकीर्णकाभियोग्यकिल्विषिकाश्चैकशः॥4॥ त्रायस्त्रिंशलोकपालवर्ज्या व्यन्तर-ज्योतिष्काः॥5॥ पूर्वयोर्द्वीन्द्राः॥6॥ कायप्रवीचारा आ ऐशानात्॥7॥ शेषाः स्पर्श-रूप-शब्द-मनः-प्रवीचाराः॥8॥

परेऽप्रवीचाराः ॥9॥ भवनवासिनोऽसुरनाग-विद्युत्सुपर्णाग्नि-वातस्त-
नितोदधि-द्वीप-दिक्कुमाराः ॥10॥ व्यन्तराः किन्नर-किंपुरुषमहोरग-
गन्धर्व-यक्ष-राक्षस-भूत-पिशाचाः ॥11॥ ज्योतिष्काः सूर्याचन्द्रमसौ
ग्रहनक्षत्र-प्रकीर्णक-तारकाश्च ॥12॥ मेरु-प्रदक्षिणा नित्य-गतयो
नृलोके ॥13॥ तत्कृतः काल-विभागः ॥14॥ बहिरवस्थिताः ॥15॥
वैमानिकाः ॥16॥ कल्पोपपन्नाः कल्पातीताश्च ॥17॥ उपर्युपरि ॥18॥
सौधर्मैशानसानत्कुमार-माहेन्द्र-ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर-लान्तव-कापिष्ठ-
शुक्रमहाशुक्र-शतार-सहस्रारेष्वानत-प्राणतयोरारणा-च्युतयोर्नवसु
ग्रैवेयकेषु विजय-वैजयन्त-जयन्तापराजितेषु सर्वार्थसिद्धौ च ॥19॥
स्थिति-प्रभाव-सुख-द्युति-लेश्या-विशुद्धीन्द्रियावधि-विषय-
तोऽधिकाः ॥20॥ गतिशरीर-परिग्रहाऽभिमानतो हीनाः ॥21॥ पीत-
पद्म-शुक्ल-लेश्या द्वि-त्रि-शेषेषु ॥22॥ प्राग्ग्रैवेयकेभ्यः कल्पाः ॥23॥
ब्रह्म-लोकालया लौकान्तिकाः ॥24॥ सारस्वतादित्यवह्न्य-रुण-
गर्दतोय-तुषिताव्याबाधारिष्टाश्च ॥25॥ विजयादिषु द्विचरमाः ॥26॥
औपपादिक-मनुष्येभ्यः शेषास्तिर्य-ग्योनयः ॥27॥ स्थितिरसुर-नाग-
सुपर्ण-द्वीप-शेषाणां सागरोपम-त्रिपल्योपमार्द्धहीनमिताः ॥28॥
सौधर्मैशानयोः सागरोपमे-अधिके ॥29॥ सानत्कुमार-माहेन्द्रयोः
सप्त ॥30॥ त्रिसप्त-नवैकादश-त्रयोदश-पञ्चदशभिरधिकानि
तु ॥31॥ आरणाच्युतादूर्ध्वमेकैकेन नवसु ग्रैवेयकेषु विजयादिषु
सर्वार्थसिद्धौ च ॥32॥ अपरा पल्योपममधिकम् ॥33॥ परतःपरतः पूर्वा
पूर्वाऽनन्तरा ॥34॥ नारकाणां च द्वितीयादिषु ॥35॥ दशवर्ष-सहस्राणि
प्रथमायाम् ॥36॥ भवनेषु च ॥37॥ व्यन्तराणां च ॥38॥ परा
पल्योपममधिकम् ॥39॥ ज्योतिष्काणां च ॥40॥ तदष्टभागोऽपरा ॥41॥
लौकान्तिकानामष्टौ सागरोपमाणि सर्वेषाम् ॥42॥

॥ इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे चतुर्थोऽध्यायः ॥4॥

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

मोक्षशास्त्र अध्याय चार में, सूत्र बयालिस आये।
भाव सहित पढ़-सुन हर प्राणी, इक अनशन फल पाये॥
अर्घ सजाकर इन सूत्रों को, हम पूर्णार्घ चढ़ायें।
पढ़ें-सुनें श्रद्धा हम धारें, व्रत पालें सुख पायें॥

ॐ ह्रीं श्री मोक्षशास्त्र ग्रंथस्य चतुर्थ अध्याय संबंधी द्विचत्वारिंशत् सूत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- मोक्ष शास्त्र शुभ ग्रंथ को, पढ़े सुने जो कोय।
इसका फल उपवास है, श्रद्धा मन में होय॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री मोक्षशास्त्रे चतुर्थ अध्यायाय नमः स्वाहा।
(9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- नमन करें नव देव को, सर्व सिद्ध को ध्याय।
मोक्षशास्त्र चऊ पाठ की, जयमाल अब गाय॥

(नरेन्द्र छंद)

लोक अग्र में सिद्ध विराजें, उनका ध्यान लगायें।
ऊर्ध्वलोक के चैत्यालय को, हम सब अर्घ चढ़ायें॥
मोक्षशास्त्र अध्याय चार में, देव गति का वर्णन।
उसका हम स्वाध्याय करें नित, मोक्षशास्त्र है दर्पण॥1॥

भवनवासी व्यंतर व ज्योतिष, वैमानिक सुर जानों।
चार निकाय इन्हें ही कहते, भक्त प्रभु के मानो॥
भवनवासी सुर दस प्रकार हैं, व्यंतर आठ प्रकारा।
ज्योतिष पंच प्रकार बतायें, मोक्षशास्त्र श्रुत द्वारा॥2॥

कल्पवासी सुर बारह विध हैं, इनमें भेद अनेकों।
इन्द्र और सामानिक आदि, दस-दस अन्तर देखों॥
ब्यालिस सूत्रों में देवों का, पूरा वर्णन आया।
जिसने सम्यक् आदिक साधा, उसने सुर पद पाया॥3॥

सब देवों के आठ ऋद्धियाँ, तीन ज्ञान नित होते।
सब कुमारवत अति सुन्दर वा, वैभवशाली होते॥
भवनत्रिक से अच्युत सुर तक, देव-देवियाँ जानों।
आगे फिर अहमिन्द्र अकेले, देव मात्र ही जानो॥4॥

देव विमानों में जिनवर के, चैत्यालय अतिशायी।
उनमें देव युगल नित पूजें, श्री जिनवर सुखदायी॥
सम्यक्दृष्टि देव प्रभु की, सम्यक् भक्ति रचाते।
मिथ्यात्वी कुल देव मानकर, जिनवर को ही ध्याते॥5॥

पंचकल्याणक उत्सव में व, अष्टाह्निक पर्वों में।
पूजा करने पुण्य कमाने, आते ये स्वर्गों से॥
या मुनि का उपसर्ग दूर कर, भारी पुण्य कमाते।
जिससे इक भव अवतारी हो, क्रम से शिवपुर जाते॥6॥

देव दुबारा देव बने ना, नहीं नरक में जाये।
वैक्रियक से वैक्रियक तन, कोई तुरत ना पाये॥
देवों जैसी पूजा भक्ति, हम भी नित्य रचायें।
गुप्ति समिति व्रत पालन करके, मोक्ष सदन को पायें॥7॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे चतुर्थ अध्याये द्विचत्वारिंसद् सूत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- मोक्ष शास्त्र तब तक रहे, जब तक मोक्ष महान्।
'आस्था' रख इस शास्त्र पर, हम पायें श्रुत ज्ञान॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

तत्त्वार्थ सूत्र पंचम अध्याय पूजा

(नरेन्द्र छंद)

मोक्ष शास्त्र है शास्त्र अनोखा, इसकी महिमा गायें।
बड़े-बड़े आचार्यों ने भी, इस पे शास्त्र बनाये॥
सूत्र रूप में रचा गुरु ने, सबका ज्ञान बढ़ाये।
हम उनकी अब भक्ति रचाने, पुष्प सजाकर लाये॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्र पंचम अध्याय ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(काव्य छंद)

इन्द्र-इन्द्राणी भव्य, करते न्हवन प्रभु का।
ॐ ह्रीं श्री बोल, न्हवन करें हम विभु का॥
मंदिर के जिनबिम्ब, जग में मंगलकारी।
उनकी पूजा भक्ति, भक्तों को दुःखहारी॥1॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे पंचम अध्यायाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

नशने भव संताप, प्रभु पद गंध लगायें।
तीन लोक के ईश, सबको सुखी बनायें॥ मंदिर..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे पंचम अध्यायाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुल अक्षत लेय, प्रभु को पुंज चढ़ायें।
अक्षय दाता नाथ, हम उन सम पद पायें॥ मंदिर..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे पंचम अध्यायाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

रंग-बिरंगे पुष्प, चुन-चुन कर हम लायें।
काम विजेता नाथ, उनको पुष्प चढ़ायें॥ मंदिर..॥4॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे पंचम अध्यायाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

तिल्ली मोदक आदि, बहु पकवान बनायें।
क्षुधा व्याधि शमनार्थ, प्रभु के चरण चढ़ायें॥
मंदिर के जिनबिम्ब, जग में मंगलकारी।
उनकी पूजा भक्ति, भक्तों को दुःखहारी॥5॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे पंचम अध्यायाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत कर्पूर के दीप, अंधकार विनशाये।
प्रभु की आरती गाय, हम निज मोह नशायें॥ मंदिर..॥6॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे पंचम अध्यायाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित धूप चढ़ाय, मंदिर को महकायें।
धूपार्चा से नाथ, हम वसु कर्म नशायें॥ मंदिर..॥7॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे पंचम अध्यायाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम बिजौरा जाम, केला दाडिम लाये।
पाने मोक्ष मुकाम, प्रभु को सुफल चढ़ायें॥ मंदिर..॥8॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे पंचम अध्यायाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसुविधि द्रव्य सजाय, प्रभु को अर्पण करते।
मंगल वाद्य बजाय, प्रभु दर नर्तन करते॥ मंदिर..॥9॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे पंचम अध्यायाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम अध्याय सूत्र

अजीव - कायाधर्माधर्माकाश - पुद्गलाः ॥1॥ द्रव्याणि॥2॥ जीवाश्च॥3॥ नित्यावस्थितान्यरूपाणि॥4॥ रूपिणः पुद्गलाः॥5॥ आ आकाशादेकद्रव्याणि॥6॥ निष्क्रियाणि च॥7॥ असंख्येयाः प्रदेशा धर्माधर्मैकजीवानाम्॥8॥ आकाशस्यानन्ताः॥9॥ संख्येयासंख्येयाश्च पुद्गलानाम्॥10॥ नाणोः॥11॥ लोकाकाशेऽवगाहः॥12॥ धर्माऽधर्मयोः कृत्स्ने॥13॥ एकप्रदेशादिषु भाज्यः पुद्गलानाम्॥14॥

असंख्येयभागादिषु जीवानाम् ॥15॥ प्रदेश-संहार-विसर्पाभ्यां प्रदीपवत् ॥16॥ गति-स्थित्युपग्रहौ धर्माधर्मयोरुपकारः ॥17॥ आकाशस्यावगाहः ॥18॥ शरीर-वाङ्मनः प्राणापानाः-पुद्गलानाम् ॥19॥ सुख-दुःख-जीवित-मरणोपग्रहाश्च ॥20॥ परस्परोपग्रहो जीवानाम् ॥21॥ वर्तना-परिणाम-क्रियाःपरत्वाऽपरत्वे च कालस्य ॥22॥ स्पर्श-रस-गन्ध-वर्णवन्तः पुद्गलाः ॥23॥ शब्द-बन्ध-सौक्ष्म्य-स्थौल्य-संस्थान-भेद-तमश्छायाऽऽतपोद्योत-वन्तश्च॥24॥ अणवः स्कन्धाश्च ॥25॥ भेद-संघातेभ्य उत्पद्यन्ते ॥26॥ भेदादणुः ॥27॥ भेद-संघाताभ्यां चाक्षुषः ॥28॥ सद्द्रव्य-लक्षणम् ॥29॥ उत्पाद-व्ययध्रौव्य-युक्तं सत् ॥30॥ तद्भावाऽव्ययं नित्यम् ॥31॥ अर्पिताऽनर्पितसिद्धेः ॥32॥ स्निग्ध-रूक्ष-त्वाद् बन्धः ॥33॥ न जघन्य-गुणानाम् ॥34॥ गुणसाम्ये सदृशानाम् ॥35॥ द्व्यधिकादि-गुणानां तु ॥36॥ बन्धेऽधिकौ परिणामिकौ च ॥37॥ गुण-पर्ययवद् द्रव्यम् ॥38॥ कालश्च ॥39॥ सोऽनन्तसमयः ॥40॥ द्रव्याश्रया निर्गुणा गुणाः ॥41॥ तद्भावः परिणामः ॥42॥

॥ इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे पञ्चमोऽध्यायः ॥5॥

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

मोक्षशास्त्र अध्याय पाँच में, सूत्र बयालिस आये।
विश्व द्रव्य विज्ञान समुच्चय, इसमें विस्तृत आये॥
इन सूत्रों का पठन मनन कर, पूर्ण ज्ञान हम पायें।
भाव सहित पूर्णार्घ चढ़ा हम, परमेष्ठी पद पायें॥

ॐ ह्रीं श्री मोक्षशास्त्र ग्रंथस्य पंचम अध्याय संबंधी द्विचत्वारिंशत् सूत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

इस पंचम अध्याय में, आते हैं षट् द्रव्य।
उनके सर्व स्वरूप को, जानें इससे भव्य॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री मोक्षशास्त्रे पंचम अध्यायाय नमः स्वाहा।

(9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– नमन पंच परमेष्ठी को, नमन जिनागमसार।
मोक्षशास्त्र श्रुतदेव की, जयमाला सुखकार॥

(नरेन्द्र छंद)

पंच परम परमेष्ठी प्रभु के, प्रतिदिन गुण हम गायें।
मोक्षशास्त्र अध्याय पाँच की, जयमाला अब गायें॥
मूर्त्त अमूर्त्त अजीव तत्त्व को, यह अध्याय बताये।
जीव सृष्टि विज्ञान जगत् को, सम्यक् विध समझाये॥1॥

पुद्गल धर्म अधर्म गगन व, काल पाँच ये जानो।
जीव सहित छह द्रव्य कहे ये, सम्यक् विध श्रद्धानो॥
नित्य अवस्थित और अरूपी, पुद्गल बिन सब जानो।
पुद्गल नित्य रूपी मूर्तिक है, इसे शास्त्र से जानो॥2॥

धर्म अधर्म आकाश द्रव्य ये, एक-एक निष्क्रिय हैं।
पुद्गल जीव अनंत अनोखे, योग सहित सक्रिय हैं॥
धर्म अधर्म व एक जीव ये, होय असंख्य प्रदेशी।
पुद्गल संख्य असंख्य प्रदेशी, और अनंत प्रदेशी॥3॥

छह द्रव्यों का विस्तृत वर्णन, इसमें विधिवत् आया।
ब्यालिस सूत्रों में गुरुवर ने, सम्यक् बोध कराया।।
विश्व सृष्टि का कोई न कर्त्ता, कोई न पालक हंता।
छहों द्रव्य ही स्वयं-स्वयं के, कर्त्ता पालक हंता।।4।।

लोकालोक अनादि अकृत्रिम, अविनश्वर असहायी।
तीन लोक के चैत्यालय की, हमने भक्ति रचायी।।
इस विध जो संस्थान विचय व, छह द्रव्यों को ध्याये।
गुप्ति समिति व्रत पालन करके, केवल लक्ष्मी पाये।।5।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे पंचम अध्याये द्विचत्वारिंशत् सूत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- मोक्ष शास्त्र तब तक रहे, जब तक मोक्ष महान्।
'आस्था' रख इस शास्त्र पर, हम पायें श्रुत ज्ञान।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

तत्त्वार्थ सूत्र षष्ठम अध्याय पूजा

(चौपाई)

मोक्ष शास्त्र ये ग्रंथ हमारा, सबको लगता ये अति प्यारा।
पाठ करें और व्रत अपनायें, आह्वानन हम करने आये।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्र षष्ठम अध्याय ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शेर छंद)

नर देव–देवी बन के भक्त नाथ को भजें।
हाथों में द्रव्य लेके चले वो सजे–धजे।।
जल से करें हम नाथ की जिन भक्ति अर्चना।
गुरु शास्त्र देव की करें त्रिकाल वंदना।।1।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे षष्ठम अध्यायाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन सुगंध घिस के भक्त पात्र में लाये।
उस गंध को जिनदेव के पादाग्र लगाये।।
चंदन चढ़ा के आज करें भव्य अर्चना।। गुरु.... ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे षष्ठम अध्यायाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्ति से भक्त नाथ को बहु रत्न चढ़ाते।
गजमोती व अक्षत चढ़ाके पुण्य कमाते।।
अक्षय अखंड पद की प्राप्ति हेतू अर्चना।। गुरु.... ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे षष्ठम अध्यायाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदार कुंद केवड़ा गुलाब चढ़ायें।
नर–नारी सर्वफूल चढ़ा काम नशायें।।
पुष्पों से करें नाथ की हम दिव्य अर्चना।। गुरु.... ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे षष्ठम अध्यायाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना प्रकार की मिठाई शुद्ध बनायें।
हम झूमते गाते प्रभु को पूजने आये।।
नैवेद्य चढ़ा नाथ की करें सदार्चना।
गुरु शास्त्र देव की करें त्रिकाल वंदना।।5।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे षष्ठम अध्यायाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पीली चटक से कहीं भी ना होय उजाला।
ऐसी चटक से कैसे मिले ज्ञान उजाला।।
सुज्ञान ज्योति पाने करें दीप अर्चना।। गुरु.... ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे षष्ठम अध्यायाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि में धूप खेने से ही कर्म जलेंगे।
जो धूप के बिना भजे वो हाथ मलेंगे।
हम धूप अग्नि में चढ़ाके करते अर्चना।। गुरु.... ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे षष्ठम अध्यायाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सूखे फल चढ़ायें वो सूखे ही रहेंगे।
जो फल सरस चढ़ाये वो ही सरस रहेंगे।।
हम मोक्ष धाम पाने करें फल से अर्चना।। गुरु.... ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे षष्ठम अध्यायाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदनादि अष्ट द्रव्य थाल सजायें।
भर-भर के प्रभु आपको हम अर्घ चढ़ायें।।
अनर्घ पद की प्राप्ति हेतु करते अर्चना।। गुरु.... ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे षष्ठम अध्यायाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्ठम अध्याय सूत्र

कायवाङ्मनः कर्मयोगः ॥1॥ स आस्रवः ॥2॥ शुभः पुण्यस्याशुभःपापस्य ॥3॥ सकषायाऽकषाययोः साम्परायिकेर्या-पथयोः ॥4॥ इन्द्रिय-कषायाऽव्रतक्रियाः पञ्च-चतुःपञ्च-पञ्चविंशति-संख्याः पूर्वस्य भेदाः ॥5॥ तीव्र-मन्द-ज्ञाताऽज्ञातभावाऽधिकरण-वीर्य-विशेषेभ्यस्तद्विशेषः ॥6॥ अधिकरणं जीवाजीवाः ॥7॥ आद्यं संरम्भ-समारम्भारम्भ-योग-कृत-कारिताऽनुमत-कषायविशेषै-स्त्रिस्त्रिस्त्रिश्चतुश्चैकशः ॥8॥ निर्वर्तना-निक्षेप-संयोगनिसर्गा-द्विचतुर्द्वि-त्रिभेदाः परम् ॥9॥ तत्प्रदोष-निह्नवमात्सर्यान्तराया-सादनोपघाता ज्ञान-दर्शनावरणयोः ॥10॥ दुःख-शोक-तापाक्रन्दनवध-परिदेवनान्यात्म-परोभय-स्थान्यसद्वेद्यस्य ॥11॥ भूतव्रत्यनुकम्पादान-सराग-संयमादियोगः क्षान्तिः शौचमिति सद्वेद्यस्य ॥12॥ केवलि-श्रुतसंघ-धर्म-देवाऽवर्णवादो दर्शनमोहस्य ॥13॥ कषायो-दयात्तीव्र-परिणामश्चारित्रमोहस्य ॥14॥ बह्वारम्भ-परिग्रहत्वं नारकस्याऽऽयुषः ॥15॥ माया तैर्यग्योनस्य ॥16॥ अल्पारम्भ-परिग्रहत्वं मानुषस्य ॥17॥ स्वभाव-मार्दवं च ॥18॥ निःशीलव्रतत्वं च सर्वेषाम् ॥19॥ सरागसंयमसंयमा-संयमाकामनिर्जराबालतपांसि दैवस्य ॥20॥ सम्यक्त्वं च ॥21॥ योगवक्रता विसंवादनं चाऽशुभस्य नाम्नः ॥22॥ तद्विपरीतं शुभस्य ॥23॥ दर्शनविशुद्धि-र्विनयसंपन्नता शीलव्रतेष्वनतीचारो-ऽभीक्ष्णज्ञानोपयोगसंवेगौ शक्तितस्त्याग - तपसी - साधु-समाधिर्वैयावृत्यकरणमर्हदाचार्य-बहुश्रुत-प्रवचन-भक्तिराऽऽवश्यका-ऽपरिहाणिर्मार्ग-प्रभावना प्रवचन-वत्सलत्वमिति तीर्थकरत्वस्य ॥24॥ परात्मनिन्दा-प्रशंसे सदसद्गुणोच्छादनोद्भावने च नीचैर्गोत्रस्य ॥25॥ तद्विपर्ययो नीचैर्वृत्त्यनुत्सेकौ चोत्तरस्य ॥26॥ विघ्नकरणमन्तरायस्य ॥27॥

॥ इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे षष्ठोऽध्यायः ॥6॥

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

मोक्षशास्त्र अध्याय छठे में, सूत्र सत्ताइस आये।
पापों के आस्रव से बचने, प्रभु के गुण हम गायें॥
कर्मों की आस्रव की व्याख्या, ये अध्याय बताये।
उनको नित पूर्णार्घ चढ़ा हम, शुद्ध भावना भायें॥

ॐ ह्रीं श्री मोक्षशास्त्र ग्रंथस्य षष्ठम अध्याय संबंधी सप्तविंशति सूत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धत्ता– जिन ग्रंथ की महिमा, उसकी गरिमा, उनकी पूजा भक्ति रचाय।
कर जल की धारा, प्रभु पथ प्यारा, जिन चरणन् में पुष्प चढ़ाय॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री मोक्षशास्त्रे षष्ठम अध्यायाय नमः स्वाहा।

(9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– देव–शास्त्र–गुरु को नमूँ, नमूँ सर्व जिनराय।
ध्याऊँ आस्रव तत्त्व अब, पढ़ षष्ठम अध्याय॥

(नरेन्द्र छंद)

जय–जय जिन सर्वज्ञ केवली, मोक्षमार्ग दर्शाया।
जय–जय गणधर श्रुतधर गुरुवर, आगम ग्रंथ रचाया॥
मोक्षशास्त्र अध्याय छठे में, तत्त्व तीसरा आया।
उमास्वामी आचार्यश्री ने, आस्रव तत्त्व बताया॥1॥

आत्म परिस्पन्दन जब होता, मन–वच–तन के द्वारा।
कर्मों का आना आस्रव है, जानों सूत्रों द्वारा॥
शुभ भावों से पुण्यास्रव हो, अशुभ करे पापास्रव।
निष्कषाय जीवों के होता, इक ईर्यापथ आस्रव॥2॥

और कषाय सहित जीवों के, होता आस्रव दूजा।
निष्कषाय जिनवर की हमने, की श्रद्धा से पूजा॥
कर्मों का आना कब कैसे, किस विध कितना होवे।
ये छट्ठा अध्याय बताये, किस विध आस्रव होवे॥3॥

तीव्र मंद ज्ञाता अज्ञाते, जैसा आस्रव होवे।
अधिष्ठान व बल जैसा हो, वैसा आस्रव होवे॥
सत्ताईस सूत्रों से गुरुवर, आस्रव को समझायें।
जो जाने श्रद्धा से इसको, वो इससे बच पाये॥4॥

केवली श्रुत औ संघ धर्म वा, देवों का अपवादी।
इनमें जो अपवाद लगाये, बाँधे मोह प्रमादी॥
इत्यादि सम्पूर्ण कर्म का, आस्रव समझो जानो।
इनसे बचने पंच गुरु को, नव कोटी श्रद्धानो॥5॥

अशुभ भाव परिहार करो सब, श्रेष्ठ भाव अपनाओ।
पाप क्रियायें छोड़ हृदय से, निर्मल पुण्य कमाओ॥
उमा स्वामी के सूत्र समझ कर, मोक्ष मार्ग अपनाओ।
गुप्ति समिति व्रत पालन करके, जीवन सुखी बनाओ॥6॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे षष्ठम अध्याये सप्तविंशति सूत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

मोक्षशास्त्र तब तक रहे, जब तक मोक्ष महान्।
'आस्था' रख इस शास्त्र पर, हम पायें श्रुतज्ञान॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

तत्त्वार्थ सूत्र सप्तम अध्याय पूजा

(दोहा)

हाथों में ले पुष्प हम, आये प्रभु के द्वार।
मोक्ष शास्त्र इस ग्रंथ की, महिमा अपरम्पार॥
हृदय बुलाये नाथ को, आह्वानन् कर आज।
अष्ट द्रव्य की थाल ले, पूजन करते आज॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्र सप्तम अध्याय ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(दोहा)

प्रभु चरणों में जल चढ़ा, जोड़ें प्रभु को हाथ।
पूजक से हम पूज्य हो, यही प्रार्थना नाथ॥
भक्त आपके हम प्रभो, आप हमारे नाथ।
पूजा करते आपकी, पाने भव–भव साथ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे सप्तम अध्यायाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन से शीतल अति, प्रभु के पावन चर्ण।
गंध प्रभु के पद लगा, पायें हम जिन शर्ण॥ भक्त... ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे सप्तम अध्यायाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

दानी है ना आप सा, सबको सब मिल जाय।
हम अक्षत अर्पण करें, जिन गुण निधि मिल जाय॥ भक्त... ॥3॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे सप्तम अध्यायाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तच्छद चंपक तरु, पुष्प अनेक प्रकार।
सर्व पुष्प प्रभु पद चढ़ा, नाशें कर्म विकार॥ भक्त... ॥4॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे सप्तम अध्यायाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लाडु बाटी वा पुड़ी, बरफी मेवा खीर।
चढ़ा रहे हम नाथ को, हरो क्षुधा की पीर॥
भक्त आपके हम प्रभो, आप हमारे नाथ।
पूजा करते आपकी, पाने भव-भव साथ॥5॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे सप्तम अध्यायाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर प्रभुवर की आरती, करें मोह परिहार।
दे दो केवलज्ञान का, हे जिनवर ! उपहार॥ भक्त... ॥6॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे सप्तम अध्यायाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य सहित जिन अर्चना, देती पुण्य अपार।
धूप चढ़ा प्रभु आपको, पायें शिवपुर द्वार॥ भक्त... ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे सप्तम अध्यायाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो प्रभु को फल से भजे, पाये सुख भंडार।
मिले अतुल सुख-संपदा, सुखी रहे परिवार॥ भक्त... ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे सप्तम अध्यायाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शाश्वत अष्टम भू बसे, सर्व सिद्ध भगवान।
पूजा अष्टम भूमि की, करें परम कल्याण॥ भक्त... ॥9॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे सप्तम अध्यायाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तम अध्याय सूत्र

हिंसाऽनृत-स्तेयाब्रह्म-परिग्रहेभ्यो विरतिर्व्रतम् ॥1॥ देशसर्वतोऽणु-महती ॥2॥ तत्स्थैर्यार्थं भावनाः पञ्च पञ्च ॥3॥ वाङ्मनोगुप्तीर्याऽऽदाननिक्षेपण-समित्यालोकितपान-भोजनानि पञ्च ॥4॥ क्रोध-लोभ-भीरुत्व-हास्य-प्रत्याख्यानान्यनुवीचि-भाषणं च पञ्च ॥5॥ शून्यागार विमोचितावास-परोपरोधाकरण भैक्ष्यशुद्धि-सधर्माविसंवादाः पञ्च ॥6॥ स्त्रीरागकथाश्रवण-तन्मनोहराङ्गनिरीक्षण-

पूर्वरतानुस्मरण-वृष्येष्टरस-स्वशरीर-संस्कारत्यागाः पञ्च ॥7॥
मनोज्ञाऽमनोज्ञेन्द्रिय-विषय-राग-द्वेष-वर्जनानि पञ्च ॥8॥ हिंसादि-
ष्विहामुत्राऽपायाऽवद्यदर्शनम् ॥9॥ दुःखमेव वा ॥10॥ मैत्री-प्रमोद-
कारुण्य-माध्यस्थ्यानि च सत्त्वगुणाधिकक्लिश्यमानाऽविनयेषु ॥11॥
जगत्काय-स्वभावौ वा संवेग-वैराग्यार्थम् ॥12॥ प्रमत्तयोगात्प्राण-
व्यपरोपणं हिंसा ॥13॥ असदभिधानमनृतम् ॥14॥ अदत्तादानं
स्तेयम् ॥15॥ मैथुनमब्रह्म ॥16॥ मूर्च्छापरिग्रहः ॥17॥ निशल्यो-
व्रती ॥18॥ अगार्यनगारश्च ॥19॥ अणुव्रतोऽगारी ॥20॥
दिग्देशाऽनर्थ-दण्डविरति-सामायिक-प्रोषधोपवासोपभोग-परिभोग-
परिमाणाऽतिथि-संविभाग व्रत-सम्पन्नश्च ॥21॥ मारणान्तिकीं
सल्लेखनां जोषिता ॥22॥ शङ्काकांक्षाविचिकित्सान्य-दृष्टि-प्रशंसा-
संस्तवाः सम्यग्दृष्टेरतीचाराः ॥23॥ व्रत-शीलेषु पञ्च पञ्च
यथाक्रमम् ॥24॥ बन्ध-वधच्छेदातिभारारोपणाऽन्नपान-निरोधाः ॥25॥
मिथ्योपदेश-रहोभ्याख्यान-कूटलेखक्रिया-न्यासापहार-साकार-
मन्त्रभेदाः ॥26॥ स्तेनप्रयोग-तदाहृताऽऽदान-विरुद्ध-राज्यातिक्रम-
हीनाधिक मानोन्मान-प्रतिरूपक-व्यवहाराः ॥27॥ परविवाहकरणे-
त्वरिका-परिगृहीताऽपरि-गृहीतागमनाऽनङ्गक्रीडा-कामतीव्राभि-
निवेशाः ॥28॥ क्षेत्रवास्तुहिरण्यसुवर्ण-धनधान्य-दासीदास-कुप्य-
प्रमाणातिक्रमाः ॥29॥ ऊर्ध्वाधस्तिर्यग्व्य-तिक्रमक्षेत्र-वृद्धि-
स्मृत्यन्तराधानानि ॥30॥ आनयनप्रेष्य-प्रयोग-शब्दरूपानुपात-
पुद्गलक्षेपाः ॥31॥ कन्दर्प-कौत्कुच्य-मौखर्यासमीक्ष्याधिकरणोपभोग
परिभोगाऽऽनर्थक्यानि ॥32॥ योगदुः-प्रणिधानाऽनादर-स्मृत्यनुप-
स्थानानि ॥33॥ अप्रत्यवेक्षिताऽप्रमार्जितोत्सर्गादान-संस्तरोप-
क्रमणाऽनादरस्मृत्यनुपस्थानानि ॥34॥ सचित्तसम्बन्ध-संमिश्राभि-
षव-दुःपक्वाहाराः ॥35॥ सचित्त-निक्षेपापिधान-परव्यपदेश-

मात्सर्य्य–कालाऽतिक्रमाः ॥36॥ जीवित–मरणाशंसा–मित्रानुराग–सुखानुबन्ध–निदानानि ॥37॥ अनुग्रहार्थं स्वस्यातिसर्गो दानम् ॥38॥ विधि–द्रव्यदातृपात्र–विशेषात्तद्विशेषः ॥39॥

॥ इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे सप्तमोऽध्यायः ॥7॥

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

मोक्षशास्त्र अध्याय सात में, श्रावक चर्या आये।
उन्चालिस सूत्रों में सुन्दर, शुभ पुण्यास्रव आये॥
सूत्रों को पूर्णार्घ चढ़ा हम, आत्म पुनीत बनायें।
पूजन नमन करें हम प्रभु को, झुक–झुक शीश नवायें॥

ॐ ह्रीं श्री मोक्षशास्त्र ग्रंथस्य सप्तम अध्याय संबंधी एकोन्चत्वारिंशत् सूत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– बोलें जय जयकार, परमेश्वर भगवान की।
पायें शांति अपार, पुष्पाञ्जलि कर पुष्प से॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री मोक्षशास्त्रे सप्तम अध्यायाय नमः स्वाहा।
(9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– सब जिनवर को पूजकर, पंच परम पद ध्याय।
जयमाला में हम पढ़ें, अब सप्तम अध्याय॥

(नरेन्द्र छंद)

हिंसादिक पाँचों पापों से, विरति व्रत कहलाये।
वही महाव्रत और अणुव्रत, दो रूपों में आये॥
पंच व्रतों की स्थिरता में, पाँच भाव सहकारी।
भेद सभी के पाँच–पाँच हैं, कुल पच्चीस दुःखारी॥1॥

हिंसादिक पाँचों पापों से, जीव महादुःख पाये।
इस भव में अपयश बंधन पा, भव-भव में दुःख पाये॥
मैत्री आदिक चार भावना, इनको हम नित भायें।
जगत् काय स्वभाव विचारें, दृढ़ वैराग्य जगायें॥2॥

उन्चालिस सूत्रों में गुरु ने, श्रावक धर्म सिखाया।
जिसने श्रावक धर्म निभाया, उसने सुरपद पाया॥
पूर्ण महाव्रत पाल मुनीश्वर, निश्चय मुक्ति पायें।
अणुव्रत द्वारा श्रावक गण भी, क्रम से मुक्ति पायें॥3॥

पंचाणुव्रत चऊ शिक्षाव्रत, त्रय गुणव्रत अपनायें।
अंत समय में धार समाधि, सुरपति का पद पाये॥
श्री यमपाल अहिंसाणुव्रत, पाल प्रसिद्ध हुआ है।
श्री धनदेव सत्याणुव्रत को, पाल प्रसिद्ध हुआ है॥4॥

वारिषेण तीजा अणुव्रतधर, मुनि बन मुक्ति पाये।
सीता आदिक चौथे व्रत से, महासती कहलाये॥
जय कुमार पंचम अणुव्रत से, गणधर पदवी पायें।
एक-एक व्रत से सुर द्वारा, ये सब पूजें जायें॥5॥

ये अणुव्रत सब पाप विनाशक, पुण्यास्रव करवाये।
पुण्ण फला अरहंता उत्तम, आगम हमें बताये॥
जिन पूजा आहार दान हम, निशदिन करते जायें॥
व्रत उपवास समिति गुप्ति से, आठों कर्म नशायें॥6॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे सप्तम अध्याये एकोन्चत्वारिंशत् सूत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- मोक्षशास्त्र तब तक रहे, जब तक मोक्ष महान्।
'आस्था' रख इस शास्त्र पर, हम पायें श्रुतज्ञान॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

तत्त्वार्थ सूत्र अष्टम अध्याय पूजा

(नरेन्द्र छंद)

प्रभु के चैत्य चैत्यालय की हम, पूजा पाठ रचायें।
प्रभु के चरणों में आकर हम, अपने कष्ट मिटायें॥
नाथ निरंजन जन मनरंजन, उनको पुष्प चढ़ायें।
अभिवंदन स्वागत हे भगवन् !, तुमको हृदय बसायें॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्र अष्टम् अध्याय ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(नरेन्द्र छंद)

क्षीर समुंदर से पय घट भर, प्रभु का न्हवन करें हम।
जन्म–जरा–मृत रोग नशाने, पूजा–पाठ करें हम॥
जिनमंदिर की सब प्रतिमायें, जग में मंगलकारी।
मन–वच–तन से जैन शास्त्र के, चरणन् ढ़ोक हमारी॥1॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे अष्टम अध्यायाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के पद में चंदन लेपन, करें कपूर मिलाकर।
उसी गंध से तिलक लगायें, चरणन् शीश झुकाकर॥ जिन.... ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे अष्टम अध्यायाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम अक्षत भेंट तुम्हें जिन, उत्तम भाव बनाने।
अक्षयदानी जिन ! हम तुमको, पूजें वह पद पाने॥ जिन.... ॥3॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे अष्टम अध्यायाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जो भी काम अरि विनशाये, वो ही नाम कमाये।
श्री जिनवर ही काम नशायें, उनको पुष्प चढ़ायें॥ जिन.... ॥4॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे अष्टम अध्यायाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्रस व्यंजन जन मनरंजन, लायें शुद्ध मिठायी।
क्षुधा रोग विनशाने हमने, प्रभुवर तुम्हें चढ़ायी।।
जिनमंदिर की सब प्रतिमायें, जग में मंगलकारी।
मन-वच-तन से जैन शास्त्र के, चरणन् ढ़ोक हमारी।।5।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे अष्टम अध्यायाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुल दीपक की रक्षा करने, प्रभु दर दीप लगायें।
आरती करके नाथ तुम्हारी, केवल ज्योति पायें।। जिन.... ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे अष्टम अध्यायाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप सुगंध लगे अति प्यारी, जब अग्नि में जलायें।
प्रभु के सन्मुख धूप जलाकर, कर्मन् धूल उड़ायें।। जिन.... ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे अष्टम अध्यायाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मधुर सुगंधित आमादिक फल, हम जिन तुम्हें चढ़ायें।
मुक्ति वधू को पाने हेतू, प्रभु की पूजा गायें।। जिन.... ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे अष्टम अध्यायाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आदिक अर्घ मिलाकर, अर्चा नाथ तुम्हारी।
अर्घ चढ़ायें भक्ति रचायें, आयें शरण तुम्हारी।। जिन.... ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे अष्टम अध्यायाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम अध्याय सूत्र

मिथ्यादर्शनाऽविरति-प्रमाद-कषाय-योगा बन्ध-हेतवः ।।1।। सकषायत्वाज्जीवः कर्मणो योग्यान् पुद्गलानाऽऽदत्ते स बन्धः ।।2।। प्रकृतिस्थित्यनुभवप्रदेशा-स्तद्विधयः ।।3।। आद्यो ज्ञानदर्शनावरण-वेदनीय-मोहनीयायुर्नामगोत्रान्तरायाः ।।4।। पञ्च-नवद्व्यष्टा विंशति-चतुर्द्विचत्वारिंशद्-द्वि-पञ्च-भेदा यथाक्रमम् ।।5।। मतिश्रुता

वधिमनःपर्यय–केवलानाम् ॥6॥ चक्षुरचक्षुरवधि–केवलानां निद्रा–निद्रानिद्राप्रचलाप्रचलाप्रचलास्त्यानगृद्धयश्च ॥7॥ सदसद्वेद्ये ॥8॥ दर्शनचारित्र–मोहनीया–कषाय–कषायवेदनीयाख्यास्त्रिद्वि–नवषोडशभेदाः सम्यक्त्व–मिथ्यात्व–तदुभयान्य–कषायकषायौ हास्य–रत्यरतिशोकभयजुगुप्सास्त्रीपुन्नपुंसकवेदा अनन्तानुबन्ध्यप्रत्याख्यान–प्रत्याख्यान–संज्वलन–विकल्पाश्चैकशः क्रोध–मान–माया–लोभाः ॥9॥ नारक–तैर्यग्योन–मानुष–दैवानि ॥10॥ गतिजाति–शरीराङ्गोपाङ्गनिर्माण–बन्धन–संघात–संस्थान–संहनन–स्पर्श–रस–गन्ध–वर्णानुपूर्व्यागुरुलघूप–घात–परघातातपोद्योतोच्छ्वास–विहायोगतयः प्रत्येकशरीर–त्रस–सुभग सुस्वरशुभ–सूक्ष्म–पर्याप्तिस्थिरादेययशःकीर्ति–सेतराणि तीर्थकरत्वं च ॥11॥ उच्चैर्नीचैश्च ॥12॥ दानलाभ–भोगोपभोग–वीर्याणाम् ॥13॥ आदितस्तिसृणामन्तरायस्य च त्रिंशत्सागरोपम–कोटीकोट्यः परा–स्थितिः ॥14॥ सप्ततिर्मोहनी–यस्य ॥15॥ विंशतिर्नामगोत्रयोः ॥16॥ त्रयस्त्रिंशत्सागरोप–माण्यायुषः ॥17॥ अपरा द्वादश–मुहूर्त्ता वेदनीयस्य ॥18॥ नाम–गोत्रयोरष्टौ ॥19॥ शेषाणामन्तर्मुहूर्ता ॥20॥ विपाकोऽनुभवः ॥21॥ स यथानाम् ॥22॥ ततश्च निर्जरा ॥23॥ नामप्रत्ययाः सर्वतो योगविशेषात् सूक्ष्मैकक्षेत्रावगाह–स्थिताः सर्वात्मप्रदेशेष्वनन्तानन्त–प्रदेशाः ॥24॥ सद्वेद्य–शुभायुर्नामगोत्राणि पुण्यम् ॥25॥ अतोऽन्यत्पापम् ॥26॥

॥ इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे अष्टमोऽध्यायः ॥8॥

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

मोक्षशास्त्र अध्याय आठ में, कर्म विवेचन आये।
छब्बीस सूत्रों में कर्मों के, व्याख्या सूत्र समायें॥

कर्म बंध के कारण प्राणी, भव का भ्रमण बढ़ाये।
कर्म बेड़ियाँ कैसे काटें, गुरुवर ये समझायें।।

ॐ ह्रीं श्री मोक्षशास्त्र ग्रंथस्य अष्टम अध्याय संबंधी षट्विंशति सूत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

शांति पथ जिनसे मिले, करें उन्हीं पे धार।
पुष्प हार प्रभु को चढ़ा, नमन करें शत बार।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री मोक्षशास्त्रे अष्टम अध्यायाय नमः स्वाहा।
(9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– **कर्म बंध से मुक्त हैं, सर्व सिद्ध भगवान।**
कर्म नाश हित हम करें, उनका निशदिन ध्यान।।

(नरेन्द्र छंद)

मिथ्यादर्शन अविरत आदि, पाँच बंध के हेतु हैं।
जीव कषाय सहित त्रिभुवन में, निज कर्मों का बंधक है।।
उन कर्मों के प्रकृति आदि, चार भेद बतलाये।
इनमें अग्रिम प्रकृति बंध के, आठ भेद बतलायें।।1।।

उनके उत्तर भेद शास्त्र में, बहुत प्रकार बताये।
पहला ज्ञानावरण पाँच विध, मति आदि कहलाये।।
दर्शनावरणीय के नो विध, वेदनीय के दो हैं।
मोहनीय के हैं अट्ठाईस, उसमें अंतर दो है।।2।।

आयु कर्म के चार भेद हैं, ब्यालिस नाम कर्म के।
ऊँच-नीच दो भेद गोत्र के, अंतिम पाँच कर्म के।।
छब्बीस सूत्रों में गुरुवर ने, बंध तत्त्व समझाया।
कर्म रूप कानून पाश से, कोई नहीं बच पाया।।3।।

त्रिंशत् कोड़ाकोड़ी सागर, स्थिति चार[1] करम की।
सत्तर कोड़ाकोड़ी सागर, दर्शन मोह करम की।।
विंशति कोड़ाकोड़ी सागर, नाम गोत्र करम की।
तैंतीस सागर उच्च स्थिति, जानो आयु करम की।।4।।

सब कर्मों की जघन स्थिति, मोक्ष शास्त्र समझाये।
वसु कर्मों का पूर्ण विवेचन, वसु अध्याय बताये।।
कर्म सभी कानून से ऊपर, सब यंत्रों से न्यारा।
जिसने किया कर्म का संवर, उसे मिला शिव द्वारा।।5।।

कर्म जीव के अपकारी हैं, धर्ममात्र उपकारी।
जो तोड़ें कर्मों के बंधन, उसकी है बलिहारी।।
कर्मजाल अपना विनशाने, समिति गुप्ति अपनायें।
ग्रंथ सृजेता उमास्वामी को, 'आस्था' से हम ध्यायें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे अष्टम अध्याये षड्विशंति सूत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- मोक्षशास्त्र तब तक रहे, जब तक मोक्ष महान्।
'आस्था' रख इस शास्त्र पर, हम पायें श्रुतज्ञान।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

---

1. ज्ञानावरणीय, (2) दर्शनावरणीय (3) वेदनीय (4) अंतराय।

तत्त्वार्थ सूत्र नवम अध्याय पूजा

(अडिल्ल छंद)

मोक्ष शास्त्र इस ग्रंथ राज को ध्या रहे।
आह्वानन् स्थापन करने आ रहे।।
रत्नत्रय निधि पाने हम पूजा करें।
उनके गुण कीर्त्तन से सुख शांति वरें।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्र नवम अध्याय ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अडिल्ल छंद)

स्वच्छ जलाशय का जल भरकर ला रहे।
प्रभु चरणों में निर्मल नीर चढ़ा रहे।।
सब तीर्थंकर प्रभु की हम पूजन करें।
प्रभु पूजा ही हम सबका मंगल करें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे नवम अध्यायाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन से प्रभुवर की हम पूजा करें।
प्रभु पूजा से पाप ताप अपना हरें।। सब.....।।2।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे नवम अध्यायाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पदवी धारी सब भगवान को।
अक्षत उन्हें चढ़ाकर कोटि प्रणाम हो।। सब.....।।3।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे नवम अध्यायाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

रंग-बिरंगे पुष्प बाग से ला रहे।
प्रभु के चरणन् हम सब पुष्प चढ़ा रहे।। सब.....।।4।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे नवम अध्यायाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् रस व्यंजन शुद्ध बनाकर ला रहे।
क्षुधा विजेता प्रभु को नित्य चढ़ा रहे।।
सब तीर्थंकर प्रभु की हम पूजन करें।
प्रभु पूजा ही हम, सबका मंगल करें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे नवम अध्यायाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग करता दीपक तम हरता सदा।
प्रभु आरती करते भविजन सर्वदा।। सब.....।।6।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे नवम अध्यायाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि पात्र में धूप चढ़ायें हाथ से।
कर्म नाशकर पहुँचे प्रभु के पास में।। सब.....।।7।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे नवम अध्यायाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम द्राक्ष केला नारंगी ला रहे।
महामोक्ष फल पाने भक्ति रचा रहे।। सब.....।।8।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे नवम अध्यायाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्पादिक अर्घ ले।
श्रीफल ध्वजा चढ़ायें भक्ति तरंग से।। सब.....।।9।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे नवम अध्यायाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवम अध्याय सूत्र

आस्रव-निरोधः संवरः।।1।। स गुप्ति-समिति-धर्मानुप्रेक्षापरीषहजय-चारित्रैः।।2।। तपसा निर्जरा च।।3।। सम्यग्योगनिग्रहो गुप्तिः।।4।। ईर्याभाषैषणादाननिक्षेपोत्सर्गाः समितयः।।5।। उत्तम-क्षमामार्दवार्जवशौचसत्यसंयमतप-स्त्यागाकिञ्चन्यब्रह्मचर्याणि धर्मः।।6।। अनित्याशरण-

संसारैकत्वान्यत्वाशुच्यास्रव-संवर-निर्जरा-लोक -बोधिदुर्लभ-धर्मस्वाख्याततत्वानुचिन्तनमनुप्रेक्षाः ॥7॥ मार्गाच्यवननिर्जरार्थं परिषोढव्याः परीषहाः ॥8॥ क्षुत्पिपासाशीतोष्ण-दंशमशक-नाग्न्यारति-स्त्रीचर्या-निषद्याशय्याक्रोशवध-याचनालाभ-रोग-तृणस्पर्श-मल-सत्कारपुरस्कार-प्रज्ञाज्ञानाऽदर्शनानि ॥9॥ सूक्ष्मसाम्पराय-छद्मस्थवीत-रागयोश्चतुर्दश ॥10॥ एकादश जिने ॥11॥ बादर-साम्पराये सर्वे ॥12॥ ज्ञानावरणे प्रज्ञाऽज्ञाने ॥13॥ दर्शनमोहान्तराययोर-दर्शनाऽलाभौ ॥14॥ चारित्रमोहे नाग्न्यारति-स्त्री-निषद्या-ऽऽक्रोश-याचना-सत्कार-पुरस्काराः ॥15॥ वेदनीये शेषाः ॥16॥ एकादयो भाज्या युगपदेकस्मिन्नैकोन-विंशतेः ॥17॥ सामायिकच्छेदोपस्थापना परिहार-विशुद्धि-सूक्ष्मसाम्पराय-यथाख्यातमिति चारित्रम् ॥18॥ अनशनावमौदर्य-वृत्तिपरिसंख्यान-रसपरित्याग-विविक्तशय्यासनकायक्लेशा बाह्यं तपः ॥19॥ प्रायश्चित्तविनय-वैयावृत्त्य-स्वाध्याय-व्युत्सर्ग-ध्यानान्युत्तरम् ॥20॥ नवचतुर्दश-पञ्च-द्विभेदा यथाक्रमं प्राग्ध्यानात् ॥21॥ आलोचना-प्रतिक्रमणतदुभय-विवेक-व्युत्सर्ग-तपश्छेदपरिहारोपस्थापनाः ॥22॥ ज्ञानदर्शन-चारित्रोपचाराः ॥23॥ आचार्योपाध्याय-तपस्वि-शैक्ष्य-ग्लान-गण-कुल-संघ-साधुमनोज्ञानाम् ॥24॥ वाचना-पृच्छनानुप्रेक्षाम्नाय-धर्मोपदेशाः ॥25॥ बाह्याभ्यन्तरोपध्योः ॥26॥ उत्तमसंहननस्यैकाग्रचिन्ता-निरोधो ध्यानमान्तर्मुहूर्तात् ॥27॥ आर्त्त-रौद्रधर्म्यशुक्लानि ॥28॥ परे मोक्षहेतू ॥29॥ आर्त्तममनोज्ञस्य संप्रयोगे तद्विप्रयोगाय स्मृति-समन्वाहारः ॥30॥ विपरीतं मनोज्ञस्य ॥31॥ वेदनायाश्च ॥32॥ निदानं च ॥33॥ तदविरत-देशविरत-प्रमत्तसंयतानाम् ॥34॥ हिंसानृतस्तेय-विषयसंरक्षणेभ्यो रौद्रमविरत-

देशविरतयोः ॥35॥ आज्ञाऽपाय-विपाक-संस्थान-विचयाय धर्म्यम्॥36॥ शुक्ले चाद्ये पूर्वविदः॥37॥ परे केवलिनः॥38॥ पृथक्त्वैकत्ववितर्कसूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति-व्युपरत-क्रियानिवर्तीनि॥39॥ त्र्येकयोग-काय-योगाऽयोगानाम्॥40॥ एकाश्रये सवितर्कवीचारे पूर्वे॥41॥ अवीचारं द्वितीयम्॥42॥ वितर्कः श्रुतम्॥43॥ वीचारोऽर्थ व्यञ्जन योग-सङ्क्रान्तिः॥44॥ सम्यग्दृष्टि-श्रावक-विरतानन्तवियोजक-दर्शनमोह-क्षपकोपशमकोपशांतमोह-क्षपक-क्षीणमोह जिनाः क्रमशोऽसंख्येय-गुण-निर्जराः॥45॥ पुलाकबकुश-कुशील-निर्ग्रन्थस्नातका निर्ग्रन्थाः॥46॥ संयम-श्रुत-प्रतिसेवना-तीर्थलिङ्ग-लेश्योपपाद-स्थान-विकल्पतः साध्याः॥47॥

॥ इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे नवमोऽध्यायः॥9॥

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

मोक्षशास्त्र अध्याय नवम में, श्रमणाचार समाये।
सैंतालिस सूत्रों में विस्तृत, सम्यक् चारित्र आये॥
संवर निर्जरा उभय तत्त्व भी, इसमें सहज समाये।
उनको हम पूर्णार्घ चढ़ाकर, श्रेष्ठ श्रमण पद पायें॥

ॐ ह्रीं श्री मोक्षशास्त्र ग्रंथस्य नवम अध्याय संबंधी सप्तचत्वारिंशत् सूत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- जहाँ त्रिलोकी नाथ हैं, वहाँ शांति का द्वार।
प्रभुवर के दरबार में, है आनंद अपार॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री मोक्षशास्त्रे नवम अध्यायाय नमः स्वाहा।
(9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- पंच परम पद को नमूँ, करूँ उन्हीं का ध्यान।
संवर हो सब कर्म का, इस हित करूँ विधान॥

(नरेन्द्र छंद)

जय-जय श्री चौबीस तीर्थंकर, जय-जय उनके गणधर।
जय-जय सब पूर्वाचार्यों की, श्रुत कर्त्ता सब गुरुवर॥
उमास्वामी ने मोक्षशास्त्र में, सात तत्त्व बतलाये।
नवम पाठ में संवर निर्जर, तत्त्व युगल समझाये॥1॥

आस्रव का निरोध संवर है, वह चरित्र से होता।
गुप्ति समिति धर्मानुप्रेक्षा, परिषह जय से होता॥
तप से संवर और निर्जरा, दोनों युगपत् होते।
मुनि तपस्वी इनके द्वारा, कर्म कालिमा धोते॥2॥

सैंतालिस सूत्रों में गुरु ने, श्रमण धर्म समझाया।
जिन-जिनने इनको अपनाया, उनने कर्म नशाया॥
तीन गुप्तियाँ पाँच समिति, दशविध धर्म बतायें।
द्वादश अनुप्रेक्षायें होती, बाईस परिषह गायें॥3॥

तप के बारह भेद बताये, उनको दो विध जानों।
पंच प्रकार चरित्र कहा है, मुनिगण दशविध मानों॥
स्वाध्याय के पाँच भेद हैं, उपधि उभय कही है।
उत्तम संहनन युत ध्यानी को, मिलती मुक्ति मही है॥4॥

आर्त्त रौद्र व धर्मशुक्ल ये, ध्यान चार विध जानो।
धर्मशुक्ल मुक्ति के हेतू, आगम से श्रद्धानो॥

ध्यान कहा कब किसको होता, इन सूत्रों में आया।
बिना ध्यान मुक्ति नहीं होती, गुरुवर ने बतलाया॥5॥

श्रावक से केवली जिनवर तक, कर्म निर्जरा बढ़ती।
असंख्यात गुण इक दूजे से, क्रम से बढ़ती रहती॥
पुलाक आदिक पंच प्रकारा, भावलिंगी होते हैं।
संयम श्रुताभ्यास आदि से, ये बहुविध होते हैं॥6॥

हे जिन ! हम उत्तम चरित्र को, तीन योग से पालें।
अविरति क्लेश प्रमाद आदि को, समता से धो डालें॥
मोक्षशास्त्र अध्याय नवम को, उत्तम अर्घ चढ़ायें।
त्रय गुप्ति व्रत समिति आदि धर, कर्म कलंक नशायें॥7॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे नवम अध्याये सप्तचत्वारिंशत् सूत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **मोक्षशास्त्र तब तक रहे, जब तक मोक्ष महान्।**
'आस्था' रख इस शास्त्र पर, हम पायें श्रुतज्ञान॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

तत्त्वार्थ सूत्र दशम अध्याय पूजा

(नरेन्द्र छंद)

प्रभु आपका अभिनंदन कर, जागे भाग्य हमारा।
मिला भाग्य से प्रभु पूजन का, यह सौभाग्य हमारा॥
देवों के भी देव आप हो, आओ–आओ स्वामी।
पुष्पों से आह्वान करें हम, घट–घट अन्तर्यामी॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्र दशम अध्याय ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(नरेन्द्र छंद)

जल की झारी भरकर लायें, प्रभु का न्हवन कराने।
जन्म–जरा–मृत रोग नाश हो, आये भक्ति रचाने॥
मोक्ष मार्ग के सच्चे नेता, वीतराग कहलाये।
ज्ञाता दृष्टा हित उपदेशी, इनको हम नित ध्यायें॥1॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे दशम अध्यायाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर में कर्पूर मिलाकर, हाथों से घिस लायें।
प्रभु के चरण कमल चर्चित कर, भव आताप नशायें॥ मोक्ष... ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे दशम अध्यायाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तन्दुल दोनों हाथों में भर, मुट्ठी बाँध चढ़ायें।
हे त्रैलोकीनाथ आप सम, अक्षय पद हम पायें॥ मोक्ष... ॥3॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे दशम अध्यायाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

वसुन्धरा के बहु पुष्पों को, चुन–चुनकर हम लायें।
तोरणद्वार व गुलदस्तों से, प्रभु का द्वार सजायें॥ मोक्ष.. ॥4॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे दशम अध्यायाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जो नैवेद्य लगे अति सुन्दर, सबके मन को भाये।
क्षुधारोग विनशाने अपना, निशदिन अवश्य चढ़ायें॥
मोक्ष मार्ग के सच्चे नेता, वीतराग कहलाये।
ज्ञाता दृष्टा हित उपदेशी, इनको हम नित ध्यायें॥5॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे दशम अध्यायाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुबह शाम घृत दीप जलाकर, प्रभु की आरती गायें।
जिन मंदिर में प्रभु के सन्मुख, नित्य प्रदीप जलायें॥ मोक्ष... ॥6॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे दशम अध्यायाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

असली धूप चढ़ायें प्रभु को, घट में अग्नि जलायें।
तभी हमारे कर्म जलेंगे, जिनगुरु शास्त्र बताये॥ मोक्ष... ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे दशम अध्यायाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मधुर-मधुर रस वाले फल के, भर-भर थाल चढ़ायें।
अंतिम शाश्वत एक मोक्ष पद, प्रभु से पाने आये॥ मोक्ष... ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे दशम अध्यायाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम वसुधा के स्वामी को, आठों द्रव्य चढ़ायें।
मिले हमें भी मही आठवी, यही भावना भाये॥ मोक्ष... ॥9॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे दशम अध्यायाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशम अध्याय सूत्र

मोहक्षयाज्ज्ञान-दर्शनावरणान्तराय-क्षयाच्च केवलम्॥1॥ बन्धहेत्वभाव-निर्जराभ्यां कृत्स्न-कर्म-विप्रमोक्षो मोक्षः॥2॥ औपशमिकादि-भव्यत्वानां च॥3॥ अन्यत्र केवलसम्यक्त्व-ज्ञान-दर्शनसिद्धत्वेभ्यः॥4॥ तदनन्तरमूर्ध्वं गच्छत्याऽऽलोकान्तात्॥5॥ पूर्वप्रयोगादसंगत्वाद्-बन्धच्छेदात् तथागतिपरिणामाच्च॥6॥ आविद्धकुलालचक्रवद्-व्यपगतलेपाऽलाम्बुवदेरण्डबीजवदग्नि-

शिखावच्च ॥7 ॥ धर्मास्तिकायाभावात् ॥8 ॥ क्षेत्रकाल-गति-लिङ्ग-तीर्थ-चारित्रप्रत्येकबुद्धबोधित-ज्ञानाऽवगाहनान्तर-संख्याल्पबहुत्वतः साध्याः ॥9 ॥

॥ इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोऽध्यायः ॥10 ॥

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

मोक्षशास्त्र अध्याय दशम में, नौ ही सूत्र बताये।
इन सूत्रों में मोक्ष तत्त्व का, विस्तृत अर्थ समाये॥
मोक्ष तत्त्व का ध्यान लगा हम, मोक्षमहल को पायें।
मोक्षमहल के वासी प्रभू को, हम पूर्णार्घ चढ़ायें॥

ॐ ह्रीं श्री मोक्षशास्त्र ग्रंथस्य दशम अध्याय संबंधी नव सूत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षर-मात्रा-पद-स्वर-हीनं, व्यञ्जन-संधि-विवर्जित-रेफम्।
साधुभिरत्र मम क्षमितव्यं, को न विमुह्यति शास्त्रसमुद्रे॥1 ॥

दशाध्याये परिच्छिन्ने, तत्त्वार्थे पठिते सति।
फलं स्यादुपवासस्य, भाषितं मुनिपुङ्गवैः ॥2 ॥

तत्त्वार्थ-सूत्र-कर्तारं, गृद्धपिच्छोपलक्षितम्।
वन्दे गणीन्द्र-संजात, मुमास्वामी-मुनीश्वरम् ॥3 ॥

पढम-चक्के पढमं, पंचमए जाण पोग्गलं तच्चं।
छह-सत्तमे हि आस्सव, अट्ठमए बंध णादव्वं ॥4 ॥

णवमे संवर-णिज्जर, दहमे मोक्खं वियाणेहि
इह सत्त-तच्च भणिदं, दह-सुत्ते मुणिवरिंदेहिं ॥5 ॥

जं सक्कइ तं कीरइ, जं च ण सक्कइ तहेव सद्दहणं।
सद्दमाणो जीवो, पावइ अजरामरं ठाणं ॥6 ॥

तवयरणंवयधरणं, संजम-सरणं च जीव-दया-करणं।
अंते समाहिमरणं, चउगई-दुक्खं णिवारेइ ॥7॥
अरहंत-भासियत्थं, गणहरदेवेहिं गंथियं सम्मं
पणमामि भत्तिजुत्तो, सुदणाण-महोवहिं सिरसा ॥8॥
गुरवः पांतु नो नित्यं, ज्ञान-दर्शन-नायकाः।
चारित्रार्णव - गंभीराः मोक्ष - मार्गोपदेशकः ॥9॥
कोटिशतं द्वादशं चैव कोट्यो, लक्षाण्यशीतिस्त्र्यधिकानि चैव।
पंचाशदष्टौ च सहस्र-संख्यमेतद्श्रुतं पंचपदं नमामि ॥10॥

॥ इति तत्त्वार्थसूत्रापरनाम-तत्त्वार्थसूत्रे मोक्षशास्त्रं समाप्तम् ॥

357 सूत्रों का पूर्णार्घ (शंभु छंद)

श्री उमास्वामी सूरीश्वर ने, तत्त्वार्थ सूत्र शुभ ग्रन्थ लिखा।
त्रयशत सत्तावन सूत्रबद्ध, संस्कृत भाषा में प्रथम लिखा॥
उन सूत्रों को हम श्रद्धा से, पूर्णार्घ समर्पण करते हैं।
ये जैन धर्म की गीता है, हम इसका वाचन करते हैं॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री उमास्वामी आचार्य विरचित दश अध्याय संबंधी सप्त पंचाशत अधिक त्रिशतक सूत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- वीतरागी सर्वज्ञ जिन, हित उपदेशी नाथ।
हम अर्हंत व सिद्ध को, सदा झुकायें माथ॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री मोक्षशास्त्रे दशम अध्यायाय नमः स्वाहा।
(9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- मोह विजेता सर्व जिन, उनको करूँ प्रणाम।
मोक्ष शास्त्र अध्याय दस, पढ़ूँ नित्य अभिराम॥

(नरेन्द्र छंद)

मोह ज्ञान दर्शन आवरणी, अंतराय का क्षय जब हो।
चार घातिया का क्षय हो तब, केवल रवि उद्भाषित हो॥
बंध हेतुओं का अभाव व, पूर्ण निर्जरा जब-जब हो।
मोक्ष तत्त्व कहलाय वही जब, पूर्ण कर्म मल का क्षय हो॥1॥

औपशमिक आदि भावों का, और अभाव भव्यता का।
मोक्ष यही है सौख्य यही है, निश्चय से सब सिद्धों का॥
निज आतम के सहज गुणों का, होता नहीं अभाव कभी।
मुक्त जीव लोकान्त भाव तक, एक समय में जाय तभी॥2॥

पूर्व प्रयोग व संग अभावे, बंध छेद से ऊर्ध्वगमन।
ऊर्ध्वगामी गुण के कारण ही, सिद्ध करे लोकाग्र गमन॥
धर्म द्रव्य के ही अभाव में, होता नहीं अलोक गमन।
इसीलिये सब सिद्ध जिनेश्वर, लोक अंत में रहे मगन॥3॥

क्षेत्रकाल गति लिङ्ग अपेक्षा, उनमें भेद अनंते हैं।
पर स्वभाव गुणद्रव्य अपेक्षा, सब समान भगवंते हैं॥
नौ सूत्रों में मोक्ष तत्त्व का, सुन्दर वर्णन आया है।
उमास्वामी के उपकारों को, कोई चुका न पाया है॥4॥

दस अध्यायों में गुरुवर ने, सात तत्त्व समझाया है।
सूत्रबद्ध श्रुत रचना करके, मोक्ष मार्ग दर्शाया है॥
श्रुतकर्त्ता सब परम गुरु को, हम नित शीश झुकाते हैं।
त्रय गुप्ति से मुक्ति गमन हो, यही भावना भाते हैं॥5॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्रे दशम अध्याये नव सूत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- मोक्षशास्त्र तब तक रहे, जब तक मोक्ष महान्।
'आस्था' रख इस शास्त्र पर, हम पायें श्रुतज्ञान॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र- (1) ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्राय नमः स्वाहा।
(2) ॐ ह्रीं श्री मोक्षशास्त्राय नमः स्वाहा।
(9, 27, 108 बार जाप करें।)

समुच्चय जयमाला

दोहा- मोक्षशास्त्र श्री ग्रंथ पे, टीका ग्रंथ विशाल।
सब गुरुओं के चरण में, सदा झुकायें भाल॥

नरेन्द्र छंद

जिनने मोक्ष मार्ग बतलाया, उनको शीश झुकायें।
श्री गणधर व मुनिराजों को, हम सब मिलकर ध्यायें॥
अति उपकार गुरु का हम पे, जिनने ग्रंथ रचे हैं।
इन ग्रंथों के कारण हम सब, निश्चय आज बचे हैं॥1॥

प्रभु वाणी को गणधर झेले, उनसे गुरुवर पायें।
परम्परा से प्रभु की वाणी, गुरुवर लिखते जायें॥
जिनवाणी में क्या लिखा है, हमको समझ न आये।
गुरु ही प्रभुवर की वाणी को, सदा हमें समझायें॥2॥

जिसने प्रभु की वाणी समझी, वो भव से तिर जाये।
जो प्रभुवर की बात न समझे, वो भव भ्रमण बढ़ाये॥
सम्यक् दर्शन की परिभाषा, सारे गुरु बतायें।
सम्यक्दर्शन ही प्राणी को, मनु से प्रभु बनाये॥3॥

मोक्ष शास्त्र के ग्रंथ सृजेता, उमास्वामी गुरुदेवा।
श्री सर्वार्थ सिद्धी के कर्त्ता, पूज्यपाद गुरुदेवा॥
श्री तत्त्वार्थ श्लोक वार्तिक, राजवार्तिक सुन्दर।
गंध हस्ति महाभाष्य ग्रन्थ है, अनुपम ज्ञान समुन्दर॥4॥

श्री तत्त्वार्थ सूत्र का व्रत हम, श्रद्धा से अपनायें।
दस उपवास करें हम इसके, ये ही गुरु बतायें।।
चतुर्दशी से शुरू करे व्रत, पूजा भव्य रचायें।
दश अध्याय पढ़ें जो निशदिन, अनशन का फल पाये।।5।।

सूत्र तीन सौ सत्तावन हैं, उनका पाठ करें हम।
मन-वच-काया शुद्धि पूर्वक, इसका जाप करें हम।।
विनय और भक्ति श्रद्धा से, इसको पढ़ते जायें।
गुरुवर कहते नित्य अहर्निश, इसका पाठ करायें।।6।।

ये विधान और यह व्रत हमको, बोधि समाधि दिलाये।
चारों गति के दुःख संकट से, हम को मुक्त कराये।।
उमास्वामी आचार्य गुरु के, पद हम शीश झुकायें।
गुप्ति समिति व्रत पालन कर हम, सिद्ध अवस्था पायें।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीं तत्त्वार्थ सूत्र मोक्षशास्त्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- मोक्षशास्त्र तब तक रहे, जब तक मोक्ष महान्।
'आस्था' रख इस शास्त्र पर, हम पायें श्रुतज्ञान।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

उमास्वामी आचार्य का अर्घ

(शेर छंद)

आचार्य उमास्वामी का ये ग्रंथ है महान्।
इस ग्रंथ को पढ़कर बने हम आपके समान।।
ऐसे गुरु को भक्ति से हम अर्घ चढ़ायें।
चरणों में शीश को झुका जयकार लगायें।

ॐ ह्रूँ मोक्षशास्त्र ग्रन्थकर्त्ता आचार्य श्री उमास्वामी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधान प्रशस्ति

(दोहा)

ऋषभदेव से वीर तक, चौबीसों भगवान।
जिनवाणी गणधर प्रभु, उनका लेते नाम॥1॥

देव-शास्त्र गुरुदेव को, कोटि-कोटि प्रणाम।
सरस्वती माँ को नमें, जपे उन्हीं का नाम॥2॥

धर्मतीर्थ में हैं अभी, आदिनाथ भगवान।
उनके चरणों में लिखा, मोक्षशास्त्र सुविधान॥3॥

इसके रचनाकार हैं, गृद्धपिच्छाचार्य।
सूत्रबद्ध इस ग्रंथ का, पाठ करें अनिवार्य॥4॥

चारों ही अनुयोग का, देता हमको ज्ञान।
श्रद्धा से हम नित पढ़ें, पायें सम्यक्ज्ञान॥5॥

महावीर कुंथु कनक, गुप्तिनंदी गुरुराज।
गुरुवर के आशीष से, पूर्ण होय सब काज॥6॥

सर्व भक्त यह व्रत करें, करके महा विधान।
'आस्था' से जिन भक्ति कर, करले मोक्ष प्रयाण॥7॥

॥ इतिअलम् ॥

श्री णमोकार पूजा विधान

(गीता छंद)

सब मंत्र में जो श्रेष्ठ है वह मंत्र श्री नवकार है।
इसका ना आदि अंत है इस मंत्र की जयकार है।।
जिस मंत्र से उत्पन्न है चौरासी लख जिन मंत्र ये।
आह्वान हम इसका करें ये मंत्र-यंत्र व तंत्र है।।

ॐ ह्रीं सर्वज्ञ मुख समुद्भूत अनादिनिधन श्री अपराजित नाम मंत्राधिराज ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरण्।

(शेर छंद)

परमेष्ठी सर्व ॐ मंत्र में ही समाये।
हम ॐ ह्रीं बोलकर ही नीर चढ़ाये।।
णवकार महामंत्र का हम ध्यान लगायें।
उत्साह भक्ति भाव से विधान रचायें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री णमोकार महामंत्राय शांति पुष्टयर्थं पवित्रतर जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के चरण कमल में भव्य गंध लगाये।
मंत्रित हुई वह गंध अपने शीश लगाये।। णवकार..।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री णमोकार महामंत्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

एकाक्षरी ये मंत्र सिर्फ ॐ कहाये।
हम पाँच पुञ्ज अक्षतों के श्रेष्ठ चढ़ायें।। णवकार..।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री णमोकार महामंत्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा व मंत्र जाप में हम ॐ बोलते।
पुष्पाञ्जलि चढ़ाके कर्म ग्रंथि खोलते।। णवकार..।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री णमोकार महामंत्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐकार रूप में खिरे जिनवर की देशना।
नैवेद्य चढ़ा हम नशे क्षुधादि वेदना॥
णवकार महामंत्र का हम ध्यान लगायें।
उत्साह भक्ति भाव से विधान रचायें॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री णमोकार महामंत्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन की करे भक्ति से भक्त नित्य आरती।
ये आरति हमारा मोहतम निवारती॥ णवकार..॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री णमोकार महामंत्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

पैंतीस अक्षरों को हम नमन करें त्रिकाल।
ये धूप ही नशाये सर्व कर्म का बवाल[1]॥ णवकार..॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री णमोकार महामंत्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम सब अनादि मंत्र की महार्चना करें।
पाने को मंत्र शक्ति हम फलार्चना करें॥ णवकार..॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री णमोकार महामंत्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्ति से णमोकार का विधान हम करें।
उत्तम मनोज्ञ अर्घ सजा नृत्य हम करें॥ णवकार..॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री णमोकार महामंत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- परमेष्ठी पाँचों प्रभु, वंदनीय त्रिकाल।
शांतिधारा हम करें, और चढ़ाये माल॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र - णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

1. आफत, परेशानी।

जयमाला

दोहा- णमोकार यह मंत्र है, जिसके नाम अनेक।
इसकी जयमाला पढ़ें, पाने शिव सुख एक॥

(शंभु छंद)

सुख सन्तति धन वैभव मिलता, इस महामंत्र को पढ़ने से।
ऋद्धि-सिद्धि यश कीर्ति बढ़े, इस महामंत्र को पढ़ने से॥
सम्पूर्ण पाप क्षय होते हैं, इस महामंत्र को पढ़ने से।
अरहंत सिद्ध बन जाते हैं, इस महामंत्र को पढ़ने से॥1॥

अपमृत्यु भी टल जाती है, इस णमोकार को पढ़ने से।
हो जाय समाधि समता से, इस णमोकार को पढ़ने से।।
दृष्टि विकार नहीं होता है, इस णमोकार को पढ़ने से।
सर्वांग सुरक्षित होता है, इस णमोकार को पढ़ने से॥2॥

नवग्रह भी सब अनुकूल बने, इस णमोकार को पढ़ने से।
नश जाय कुमंत्रों का प्रयोग, इस णमोकार को पढ़ने से॥
जादु मंत्रर मुठादि नशे, इस णमोकार को पढ़ने से।
कर्जा उतरे व्यापार बढ़े, इस णमोकार को पढ़ने से॥3॥

विषधर का विष अमृत होवे, इस णमोकार को पढ़ने से।
वैरी भी उत्तम मित्र बने, इस णमोकार को पढ़ने से॥
साधक के मैत्री भाव बढ़े, इस णमोकार को पढ़ने से।
सुख-शांति और आनंद बढ़े, इस णमोकार को पढ़ने से॥4॥

डाकिन-शाकिन-भूतादि भगे, इस णमोकार को पढ़ने से।
भयभीत जीव निर्भय होते, इस णमोकार को पढ़ने से॥

आँधी तूफाँ में प्राण बचे, इस णमोकार को पढ़ने से।
बिजली भूकम्प व बाढ़ नशे, इस णमोकार को पढ़ने से॥5॥
सब विद्यायें हो जाय सिद्ध, इस णमोकार को पढ़ने से।
प्रतिभा सम्पन्न सभी बनते, इस णमोकार को पढ़ने से॥
हर जगह सफलता मिलती है, इस णमोकार को पढ़ने से।
सब कार्य सिद्ध हो जाते हैं, इस णमोकार को पढ़ने से॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परम ब्रह्मणे अनंतानंत ज्ञान शक्तये णमोकार महामंत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

चलते-फिरते सोते-उठते, खाते-पीते जाप करें।
तीव्र वेदना या संकट में, हरपल मन में जाप करें॥
मानस वाचिक या कायिक हम, णमोकार का जाप करें।
'आस्था' से हम ये विधान कर, सारे संकट पाप हरें॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

एसो पंच णमोयारो सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होई मंगलम्॥

इति पंच परमेष्ठी चरण कमलेभ्यो पंचागप्रणामः कुर्यात्।

(शंभु छंद)

हे पाँच पदों को नमस्कार, यह नमस्कार सब पाप हरें।
सबका मंगल करने वाला, सम्पूर्ण अमंगल दूर करें॥
मंगल में पहला मंगल है, इस मंगल को है नमस्कार।
अरिहंत सिद्ध सूरि पाठक, सब मुनिराजों को नमस्कार॥

(यहाँ सिर झुकाकर नमस्कार करना चाहिये।)

विधान प्रारम्भ

(दोहा)

महामंत्र णवकार को, पढ़े सुने जो कोय।
स्वर्गादिक व मोक्ष में, उसकी सद्गति होय॥

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

णमो अरहंताणं के अर्घ

(नरेन्द्र छंद)

ण- णमोकार में सर्व प्रथम हम, अरिहंतों को ध्यायें।
ॐ णमो अरिहंताणं को, पहले अर्घ चढ़ाये॥
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, श्री अरिहंत कहाते।
हम सब इन अरिहंत प्रभु की, पूजा कर हर्षाते॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'ण' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मो- मोक्ष मार्ग के सच्चे नेता, सबको मार्ग बताते।
मोह कर्म को नाशे भगवन, सुख अनंत को पाते॥ वीतराग.. ॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मो' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अ- अतिशयकारी जिन प्रतिमायें, अतिशय नित दिखलायें।
चारों पुरुषार्थों की सिद्धि, अर्हत् भक्ति कराये॥ वीतराग.. ॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अ' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

र- रक्षक ही रक्षा करता है, और करे ना कोई।
तुमसे बढ़कर रक्षक जग में, और कभी ना होई॥ वीतराग.. ॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'र' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हं- हनन किया कर्मों का प्रभु ने, चार घातियाँ नाशे।
केवलज्ञानी श्री प्रभुवर के, सर्व चराचर भाषे॥ वीतराग.. ॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'हं' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ता- तारणहारे तुम हो स्वामी, सबको तुमने तारा।
तुमको तारणहार समझकर, हमने लिया सहारा॥
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, श्री अरिहंत कहाते।
हम सब इन अरिहंत प्रभु की, पूजा कर हर्षाते॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'ता' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णं- नमन करें सब अरिहंतों को, चार चतुष्टय धारी।
दोष अठारह रहित जिनेश्वर, हम सबके उपकारी॥ वीतराग..॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'णं' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नरेन्द्र छंद)

तीन लोक त्रयकालवर्ती सब, अरिहंतों को ध्यायें।
णमो अरिहंताणं पद को, हम पूर्णार्घ चढ़ायें॥
तीर्थंकर उपसर्ग अन्तकृत, मुक और सामान्य प्रभु।
समुद्घात अनुबद्ध केवली, ये सातों अर्हंत् प्रभु॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री णमो अरिहंताणं महामंत्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- णमोकार की भक्ति से, आनंदामृत पाय।
धर्म अर्थ पुरुषार्थ पा, अंत मोक्ष सुख पाय॥

॥ शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

णमो सिद्धाणं के अर्घ

दोहा- दूजा पद णवकार का, उसमें हैं प्रभु सिद्ध !।
सिद्ध प्रभु को हम भजें, बन जायें हम सिद्ध॥

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(काव्य छंद)

ण- णमोकार यह मंत्र, सर्व सुखों का दाता।
ये ही मंगल श्रेष्ठ, ये ही शरण कहाता॥

ॐ नमः सिद्धाय, हम यह ध्यान लगायें।
सब सिद्धों को पूज, आतम शक्ति जगायें॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'ण' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मो- मोहादि वसु कर्म, सर्व सिद्ध विनशायें।
गुण अनंत विध रूप, सहज प्रगट हो जाये॥ ॐ नमः॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मो' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सि- सिद्ध हुये जो नाथ, फिर जग में ना आयें।
उन सिद्धों को आज, हम सब अर्घ चढ़ायें॥ ॐ नमः॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सि' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्धा- ध्यान बताये चार, उसमें दो उपयोगी।
धर्म शुक्ल को ध्याय, हम भी बने अयोगी॥ ॐ नमः॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'द्धा' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णं- णमोकार का जाप, सिद्ध भक्ति हम बोलें।
सर्व सिद्धि के हेत, अन्तर्मन को धोले॥ ॐ नमः॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'णं' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नरेन्द्र छंद)

पंचरंगी ध्वज एक हाथ में, दूजे कर में थाली।
पंच अक्षरी प्रभु की पूजा, देती है खुशहाली॥
ॐ णमो सिद्धाणं पद का, जाप करें सुख पायें।
पंच परावर्तन को नशने, हम पूर्णार्घ चढ़ायें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री णमो सिद्धाणं महामंत्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- णमोकार की भक्ति से, आनंदामृत पाय।
धर्म अर्थ पुरुषार्थ पा, अंत मोक्ष सुख पाय॥

॥ शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

णमो आयरियाणं के अर्घ

दोहा– अमृत रस बरसे सदा, देते गुरुवर ज्ञान।
गुरु का सद उपदेश ही, देता सम्यक् ज्ञान॥

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(अडिल्ल छंद)

ण– णमोकार की शक्ति अपरम्पार है।
वंदन करते हम इसको त्रय बार है॥
णमो आइरियाणं की पूजा करें।
ये आचार्य हमारे सारे दुःख हरें॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'ण' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मो– मोक्ष महल पाने करते गुरु साधना।
उन आचार्यों की करते आराधना॥ णमो... ॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मो' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आ– आचार्यों को भक्ति से हम दान दें।
परम्परा से दान मोक्ष स्थान दें॥ णमो... ॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'आ' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इ– इन्द्रिय मन को इन गुरुओं ने वश किया।
तप संयम समता से तन को कृश किया॥ णमो... ॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'इ' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रि– रिद्धि सिद्धि धारी श्री गुरुवर को नमन।
भाव भक्ति से करते हम उनका भजन॥ णमो... ॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'रि' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

या– याद करें हम सुख-दुःख में गुरु नाम को।
त्रय भक्ति से उनको नित्य प्रणाम हो॥ णमो... ॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'या' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णं- णमोकार का जाप करें नो बार हम।
चलते - फिरते ध्यायें बारम्बार हम।।
णमो आइरियाणं की पूजा करें।
ये आचार्य हमारे सारे दुःख हरें।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'णं' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नरेन्द्र छंद)

सप्तअक्षरी पूजा तीजी, णमो आइरियाणं की।
जय बोले पंचाचारी की, णमो आइरियाणं की।।
मोक्ष मार्ग के हित उपदेशक, श्री आचार्य हमारे।
ये पूर्णार्घ चढ़ाने हम सब, आये गुरु के द्वारे।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री णमो आइरियाणं महामंत्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

णमोकार की भक्ति से, आनंदामृत पाय।
धर्म अर्थ पुरुषार्थ पा, अंत मोक्ष सुख पाय।।

।। शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

णमो उवज्झायाणं के अर्घ

(दोहा)

शिक्षक पाठक ये गुरु, देते सम्यक् सीख।
ये जग तारण तरण हैं, इन्हें नमावे शीश।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत

(चौपाई)

ण- णमोकार ये मंत्र हमारा, इसी मंत्र ने सबको तारा।
महामंत्र को मन से ध्यायें, भाव सहित हम अर्घ चढ़ायें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'ण' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मो– **मोक्ष मार्ग का पाठ पढ़ाते, वे ऋषिवर शिक्षक कहलाते।**
हम सब उनको अर्घ चढ़ायें, उन सम प्रज्ञा दीप जलायें॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मो' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उ– **उपाध्याय गुरु शिक्षा देते, शिष्य शरण में शिक्षा लेते।**
चारों ही अनुयोग पढ़ाते, हम सब उनको अर्घ चढ़ाते॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'उ' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व– **वसु विधि द्रव्य सजाकर लाये, वसुधा अष्टम हम सब पायें।**
अंत समय मुनियों का आये, यही मंत्र मुनि उन्हें सुनाये॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'व' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्झा– **ज्झाण[1] ज्झयण[2] तुम्हारी चर्या, भक्त कराते उनकी चर्या।**
छम–छम घुंघरु वाद्य बजाते, उनको अर्घ मनोज्ञ चढ़ाते॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'ज्झा' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

या– **याद गुरु की हमको आये, गुरु बिन हमको कौन तिराये।**
सर्व दुःखों से गुरु बचाये, उनको हम सब अर्घ चढ़ायें॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'या' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णं– **णमोकार यह मंत्र अनादी, इसने मेटी सबकी व्याधी।**
उपाध्याय भगवान हमारे, इनकी पूजा कष्ट निवारे॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'णं' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नरेन्द्र छंद)

ॐ णमो उवज्झायाणं की, सप्त अक्षरी पूजा।
सप्त परम स्थान दिलाये, पाठक गुरु की पूजा॥
करें विधान विधिपूर्वक हम, सुखद सुफल पा जाये।
त्रयकालिक सब उपाध्याय को, हम पूर्णार्घ चढ़ायें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री णमो उवज्झायाणं महामंत्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. ज्ञान, 2. ध्यान।

दोहा- णमोकार की भक्ति से, आनंदामृत पाय।
धर्म अर्थ पुरुषार्थ पा, अंत मोक्ष सुख पाय।।
।। शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

णमो लोए सव्व साहूणं के अर्घ

दोहा- सर्व परिग्रह जो तजे, विषयों से जो दूर।
ज्ञान ध्यान तप नित करे, करें कर्म चकचूर।।
अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत

(शेर छंद)

ण- णवकार महामंत्र का हम जाप करेंगे।
पूजन विधान जाप करके पाप हरेंगे।।
णमोकार महामंत्र की विशेष अर्चना।
मम सर्व कर्म को हरे ये मंत्र अर्चना।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'ण' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मो- मोदक चढ़ाये मोक्ष पाने मोद भाव से।
पूजा से परम पुण्य मिले मोद भाव से।। णमोकार... ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मो' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लो- लोभादि कषायें नशाने जो मुनि बने।
ऐसे गुरु को द्रव्य हम, चढ़ायें अनगिने।। णमोकार... ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'लो' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ए- एकत्व आदि भावना मुनिराज भा रहे।
एकाक्षरी में एं बीजाक्षर को ध्या रहे।। णमोकार... ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'ए' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स- सम्यक्त्व की सुगंध मुनिराज में मिले।
हमको गुरु की वाणी से, सम्यक् निधि मिले।। णमोकार... ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'स' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्व– **वरदान हमें धर्म का प्रदान कीजिये।**
जिनधर्म में बुद्धि रहे आशीष दीजिये।।
णमोकार महामंत्र की विशेष अर्चना।
मम सर्व कर्म को हरे ये मंत्र अर्चना।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'व्व' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सा– **साधु जहाँ चरण धरे वो तीर्थ धाम है।**
साधु की साधना को कोटीशः प्रणाम है ।। णमोकार... ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'स' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हू– **हुये यहाँ उपसर्ग मुनिराज पे कभी।**
समता धरे उपसर्ग सहे वे मुनि सभी।। णमोकार... ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'हू' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णं– **णमोकार की यह कार हमें मोक्ष दिलाये।**
यह कार दुर्गतियों के दुःखों से बचाये।। णमोकार... ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'णं' बीजाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नरेन्द्र छंद)

नव अक्षर का अंतिम पद ये, नवग्रह दोष मिटाये।
अंतिम पद के नव अक्षर में, सर्व साधु सब आये।।
क्रुर ग्रहों की प्रतिकूलता, सर्व साधु विनशाये।
उन गुरुओं के चरण कमल में, हम पूर्णार्घ चढ़ायें।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री णमो लोए सव्व साहूणं महामंत्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **णमोकार की भक्ति से, आनंदामृत पाय।**
धर्म अर्थ पुरुषार्थ पा, अंत मोक्ष सुख पाय।।

।। शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

पाँचों परमेष्ठियों का पूर्णार्घ

(शंभु छंद)

पैंतीस अक्षर की पूजा में, पाँचों परमेष्ठी हम ध्यायें।
चल अचल तीर्थ के परमेश्वर, ये सर्व अमंगल विनशाये।।
पैंतिस फल ध्वज पैंतिस दीपक, पैंतीस मिठायी मालायें।
पैंतीस अर्घ की थाल सजा, पूर्णार्घ चढ़ाने हम आये।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परम ब्रह्मणे पंच परमेष्ठिभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

णमोकार महामंत्र में, परमेष्ठी भगवान।
मंगल उत्तम शरण में, ये ही सब भगवान।।
शांति करो सब लोक में, करें प्रार्थना आज।
पुष्पों की माला चढ़ा, धन्य हुये हम आज।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र– (1) णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं स्वाहा।।
(2) ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः स्वाहा।

(9, 27 या 108 बार जाप करें पंचरंगी पुष्प या धूप लवंग चढ़ाकर)

समुच्चय जयमाला

धत्ता– महामंत्र हमारा, हमको प्यारा, इसकी जयमाला गायें।
यह मंत्र श्रवणकर, पठन मनन कर, जनम–मरण दुःख मिट जाये।।

(शंभु छंद)

इस ढ़ाई द्वीप में तीन लोक में, पाँचों परमेष्ठी होते।
ये मंगल उत्तम और शरण, पाँचों ही पद में ये होते।।

इस महामंत्र को नमस्कार, सब परमेष्ठी को नमस्कार।
अरिहंत सिद्ध सूरि पाठक, साधुगण को हैं नमस्कार॥1॥

श्री वीतराग सर्वज्ञ प्रभु, हित उपदेशक जग के स्वामी।
अष्टादश दोष विमुक्त प्रभो, अरिहंत देव अन्तर्यामी॥
आठों कर्मों से रहित सिद्ध, बसते शाश्वत सिद्धालय में।
सिद्धों की सिद्ध भक्ति करते, पूजा करते भक्ति लय से॥2॥

शिष्यों को शिक्षा-दीक्षा दे, पालन-पोषण सबका करते।
छत्तीस मूलगुण के धारी, आचार्यों को वंदन करते॥
जो पढ़े-पढ़ावे रात दिवस, वो उपाध्याय कहलाते हैं।
आगम ही जिनके चक्षु हैं, उन मुनियों के गुण गाते हैं॥3॥

पाँचों पद के पैंतीस अक्षर, मात्रा होती है अट्ठावन।
स्वर चौंतिस कहते मंत्र विज्ञ, और तीस बताये हैं व्यंजन॥
स्वर व्यंजन दोनों चौंसठ है, श्रुतज्ञान का विरलन भी चौंसठ।
श्री द्वादशांग जिनवाणी के, श्रुतज्ञानाक्षर होते चौंसठ॥4॥

मन-वच-काया से ध्यान लगा, इस महामंत्र का जाप करें।
प्रत्येक कार्य के प्रारम्भ में, हम णमोकार का पाठ करें॥
बच्चों को जैन बनाते जब, उसको नवकार सुनाते हैं।
जीवन का अंत समय आवे, तब भी णवकार सुनाते हैं॥5॥

जिसने श्रद्धा से मंत्र सुना, उसका निश्चय उद्धार हुआ।
आगे-पीछे पढ़ सुनकर भी, हर प्राणी भव से पार हुआ॥
अंजन तस्कर ने मंत्र जपा, सिद्धात्म निरंजन पद पाया।
इससे ही सेठ सुदर्शन ने, शूली से सिंहासन पाया॥6॥

सीता सोमा चंदन मैना, द्रोपदी मनोरम मनोवती।
अंजना सुन्दरी आदिक ने, इसको ध्या पाई उच्च गती॥

कपि श्वान बैल गज सिंह नाग, इन सबने भी नवकार सुना।
इस मंत्रराज की महिमा से, मर करके उत्तम स्वर्ग चुना॥7॥

इस णमोकार के व्रत में जो, पैंतीस श्रेष्ठ उपवास करें।
व्रत के अतिशय से मुनिव्रत पा, अविराम आत्म उत्थान करें॥
आषाढ़ सुदी सप्तम तिथि से, इस व्रत को हम प्रारम्भ करें।
फिर डेढ़ वर्ष तक यह व्रत कर, उद्यापन से सम्पूर्ण करें॥8॥

सुख–दुःख दोनों ही घड़ियों में, हम णमोकार का जाप करें।
इक महामंत्र ही ऐसा है, इसका कैसा भी जाप करें॥
मन–वच–काया त्रय गुप्ति से, इक माला तो निशदिन फेरे।
'आस्था' भी शिवसुख पा जाये, यह मंत्र बसे अंतस मेरे॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व दुःख, अशांति, क्लेश, पाप, ताप, संकट, पीड़ा, रोग, शोक, कष्ट, अपमृत्यु, अपघात, तनाव, चिंता, उपसर्ग, दुर्भिक्ष, विवाद, आधि–व्याधि, शारीरिक, मानसिक कर्म, कोरोना ज्वारादि निवारणाय, सुख–शांति आरोग्य, धन, सुत संपत्ति, ऋद्धि–सिद्धि जिनगुणसंपत्ति प्रदायकाय पंच परम पद दायक श्री णमोकार महामंत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

महामंत्र के इस विधान से, अपने कष्ट मिटाये।
आज्ञाकारी सुत व नारी, धन–यश–कीर्ति पाये॥
ऋद्धि–सिद्धि सुख शांति पाकर, धर्म प्रभाव बढ़ाये।
सर्व कामना पूर्ण करें ये, शिव साम्राज्य दिलाये॥

दोहा– णमोकार की भक्ति से, आनंदामृत पाय।
धर्म अर्थ पुरुषार्थ पा, अंत मोक्ष सुख पाय॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

विधान की प्रशस्ति

दोहा

आदि शांति पारस प्रभु, नमूँ वीर भगवान।
पाँचों परमेष्ठी प्रभु, कर दो मम कल्याण॥1॥

जिनवाणी माँ दो मुझे, सद्बुद्धि सद्ज्ञान।
गणधर प्रभु की भक्ति से, पूर्ण करूँ अभियान॥2॥

महावीर कुंथु कनक, गुप्तिनंदी गुरुराय।
सब गुरुओं के चरण में, आस्था शीश झुकाय॥3॥

गुरु पूर्णिमा से लिखा, श्री नवकार विधान।
अल्प समय में हो गया, मंगल मंत्र विधान॥4॥

इस अपराजित मंत्र का, होवे सदा विधान।
जब तक सूरज चाँद है, भक्त करें कल्याण॥5॥

भक्ति भाव के वश लिखा, श्री नवकार विधान।
छंद ज्ञान मुझको नहीं, क्षमा करें विद्वान॥6॥

आस्था से 'आस्था' जपे, महामंत्र णवकार।
ॐ ॐ जपते-जपते, हो 'आस्था' भव पार॥7॥

'इति अलम्'

एकीभाव विधान की व्रत विधि

जिसे असाध्य रोग हुआ हो, गलित कुष्ठ रोग हुआ हो चर्मरोग हुआ हो, वह भक्त भक्ति से, श्रद्धा से यह व्रत करे तो निश्चित रूप से उस रोग से मुक्ति प्राप्त कर सकता है। पुनः सुन्दरता की प्राप्ति कर सकता है। रोग होने पर देह की सुन्दरता समाप्त हो जाती है। इसलिये समन्तभद्र आचार्य ने 'रत्नकरण्ड श्रावकाचार' में एक श्लोक दिया है। **'भक्तेः सुन्दर रूपं'** अर्थात् भक्ति से सुन्दर रूप की प्राप्ति होती है। यह एकीभाव व्रत भी सभी प्रकार के कष्टों को, रोगों को मिटाने वाला है। इसमें 26 श्लोक है, इसलिये इसके 26 व्रत किये जाते हैं। जैसी शक्ति हो वैसा कार्य करें। उत्तम, मध्यम और जघन्य तीनों रूप से व्रत कर सकते हैं। इसकी कोई निश्चित तिथि नहीं है। अपनी सुविधा के अनुसार यह व्रत कर सकते हैं।

उत्तम व्रत विधि – 26 उपवास

मध्यम विधि – अल्पाहार

जघन्य विधि– एकाशन करके भी व्रत कर सकते हैं। व्रत के दिन स्तोत्र पाठ अवश्य करें। 24 तीर्थंकर भगवान का पंचामृत अभिषेक करें, पूजा करें, जाप करें। प्रत्येक अर्घ के नीचे वाली जाप भी कर सकते हैं या फिर ये जाप करें–

'ॐ ह्रीं सर्व व्याधि विनाशन समर्थाय श्री आदिनाथ तीर्थंकर परमदेवाय नमः'।

यह व्रत सभी प्रकार के रोगों से मुक्ति दिलता है, आरोग्य प्रदान करता है। इसलिए कहा भी है– **'शरीरमाद्यम खलु धर्मसाधनम्'** अर्थात् शरीर निरोग रहेगा तभी हम धर्मसाधना कर पायेंगे और सर्वोत्तम सुखों को प्राप्त कर पायेंगे। इसलिए आचार्यों ने शरीर को परम्परा से मोक्ष का कारण बताया है। शरीर को निरोगी बनाने के लिये यह व्रत अवश्य करें।

***

आदिनाथ भगवान की स्तुति

(चामर छन्द)

मैं सदा-सदा नमूँ, जिनेश आदिनाथ को।
श्री मुनीश वा जगीश, देव आदिनाथ को॥
हे जिनेश ! हे जिनेश !, आपको प्रणाम है।
आपके सुवाक्य ही, त्रिलोक में प्रमाण है॥1॥

आदिनाथ आदिनाथ, आप व्याधियाँ हरें।
आदिनाथ जाप से, दुःखादि व्याधियाँ हरें॥
पुण्य के प्रताप से, सुकर्म भूमि आ गई।
सर्वलोक में विशेष धर्म कीर्ति छा गई॥2॥

श्रेष्ठ हैं सुज्येष्ठ हैं, जिनेश सर्वश्रेष्ठ हैं।
तीन लोक के महेश, आप सर्वश्रेष्ठ हैं॥
आपके सुनाम से, सुदीप ज्ञान के जलें।
रोग शोक नाश हेत, भक्त पूजते चले॥3॥

कुष्ठ रोग सूरि वादिराज, का मिटा दिया।
स्तोत्र का प्रभाव नाथ, आपने दिखा दिया॥
नाथ आप हो जहाँ, कमाल ही कमाल हो।
आप के प्रभाव से, अकाल भी सुकाल हो॥4॥

कीर्ति आप नाम की, त्रिलोक में प्रसिद्ध हो।
आप भक्ति से जिनेन्द्र, भक्त लोक सिद्ध हो॥
मैं सदा-सदा नमूँ, जिनेश आदिनाथ को।
श्री मुनीश वा जगीश, देव आदिनाथ को॥5॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

एकीभाव पूजा विधान

श्री आदिनाथ पूजा

(नरेन्द्र छन्द)

आदिनाथ प्रभुवर का हम सब, भक्ति से जयकार करें।
हाथों में पुष्पाञ्जलि लेकर, आह्वानन हम आज करें।।
नाभिराय के कुलदीपक को, सौ-सौ इन्द्र सदा नमते।
गणधर सुर असुरों से पूजित, ऋषभदेव को हम भजते।।

ॐ ह्रीं श्री युगब्रह्मा, युगपुरुष, प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्।

ॐ ह्रीं शतेन्द्र पूजित सहस्रनाम धारक आद्य जिनेश्वर श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणक विभूषित कल्याणकारक धर्मतीर्थ प्रवर्तक श्री आदिनाथ ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शेर छंद)

भर भरके कुंभ इक हजार आठ लायेंगे।
पाण्डुक शिला पे नाथ का न्हवन करायेंगे।।
देवों के देव ऋषभदेव से है प्रार्थना।
मुनिराज वादिराज जैसी हो प्रभावना।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु को लगाये गंध शेष शीश जो धरें।
वो कामदेव के समान देह को वरें।। देवों के देव...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अतुल्य शक्तिवान आदि जिनेशा।
मोती व अक्षतों से भजे भक्त हमेशा।। देवों के देव...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जल थल वा स्वर्ण रत्न के, ये पुष्प चुनाये।
प्रभु के पवित्र पाद चढ़ा भाग्य जगायें।।
देवों के देव ऋषभदेव से है प्रार्थना।
मुनिराज वादिराज जैसी हो प्रभावना।।4।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्मास का उपवास किया आपने प्रभो।
षट् रसमयी व्यंजन चढ़ायें आपको विभो।। देवों के देव... ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये लाख-लाख दीप लेके नृत्य हम करें।
कैवल्य ज्योति पाने, आज आरती करें।। देवों के देव... ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आपके समान बनने, धूप चढ़ाऊँ।
आठों कर्म को नाशने, मैं भक्ति रचाऊँ।। देवों के देव... ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम फलों से अर्चना, जिनदेव आपकी।
सर्वोच्च फल दिलाये, एक भक्ति आपकी।। देवों के देव... ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु द्रव्य से भजें प्रभु को इन्द्र नरेशा।
भक्ति से भक्त पूजते हैं आदि जिनेशा।। देवों के देव... ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- सरवर सरिता का सरस, लाया भरकर नीर।
त्रय लोकों में शांति हो, हरो नाथ सब पीर।।

शांतये शांतिधारा......

दोहा- समवशरण में नाथ पे, बरसे पुष्प अपार।
श्री विहार में सुर रचे, हेम पद्म मनहार।।

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें)

जयमाला

(धत्ता)

श्री प्रथम जिनेशा, नमित सुरेशा, आद्यबंधु आदीश्वर जिन।
जयमाल रचायें, पुण्य बढ़ायें, प्रभु को ध्यायें हम निशदिन।।

(दोहा)

आदिनाथ भगवान की, बोलें जय-जयकार।
ऋषभदेव जिनराज को, वंदन बारम्बार।।1।।

नाभिराय के लाल ने, किया जगत कल्याण।
मरुदेवी सुत वृषभ जिन, बने ज्येष्ठ भगवान।।2।।

श्री अवधेश्वर नाथ का, हुआ अवध अवतार।
शांति हुई त्रयलोक में, खुशियाँ अपरम्पार।।3।।

मतिश्रुत अवधिज्ञान युत, होता गर्भ कल्याण।
होता मेरु पे न्हवन, दूजा जन्म कल्याण।।4।।

लौकान्तिक सुर मना रहे, प्रभु का तप कल्याण।
दिव्य देशना हो जहाँ, वही ज्ञान कल्याण।।5।।

सुरगण चार निकाय के, पूजें मोक्ष कल्याण।
निज को प्रभु ने पा लिया, करके मोक्ष प्रयाण।।6।।

युग को युग कर्त्ता मिले, युगब्रह्मा है नाम।
युग को परिवर्तित किया, सुर-नर करें प्रणाम।।7।।

असि मसि कृषि वाणिज्य ये, शिल्प कला का ज्ञान।
षट् कर्मों के ज्ञान से, बचे जीव के प्राण।।8।।

एक शतक सुत को दिया, अस्त्र–शस्त्र विज्ञान।
राजसुता द्वय को दिया, युगल लिपि का ज्ञान ॥9॥

महिमा आदिनाथ की, जग में अति विशाल।
नर–सुर गुण ना गा सकें, इन्द्र झुकाये भाल ॥10॥

प्रतिमा प्रभु की है जहाँ, अतिशय हुये महान्।
अति उत्तुंग मनोज्ञ हैं, बावनगज भगवान ॥11॥

भातकुली अपराजिता, धर्मतीर्थ कैलाश।
ऋषभदेव ऋषिकेश वा, कुंडलपुर में वास ॥12॥

रानीला, कुरुक्षेत्र वा, अष्टापद व प्रयाग।
सर्वक्षेत्र को पूजता, जय जय बद्रीनाथ ॥13॥

वादिराज ऋषिराज ने, ध्याया तुम्हें त्रिकाल।
एकीभाव विधान से, कुष्ठ मिटा तत्काल ॥14॥

मन मेरा प्रभु में रंगा, ना उतरे ये रंग।
मन वच काया गुप्ति से, पाऊँ प्रभु का संग ॥15॥

ऋषभदेव का नाम ही, आदिनाथ जगदीश।
भक्ति रस पाने प्रभु, 'आस्था' है नत शीश ॥16॥

ॐ ह्रीं सर्वरोग, शोक, दुःख, संकट, पीड़ा, कष्ट, क्लेश, अशांति, तनाव, चिंता, अपमृत्यु, टेंशन, कैंसर, कोरोना रोग, सर्व ज्वरादि विनाशनाय, सुख–शांति, आरोग्य, ऋद्धि–सिद्धि, यश–कीर्ति, धन–धान्य, ऐश्वर्य जिनगुणसंपत्ति प्रदायकाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

नगर अयोध्या नाथ, ऋषभदेव भगवान ये।
जय–जय आदिनाथ, प्रथम सूर्य को है नमन ॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

विधान प्रारम्भ

दोहा- एकीभाव विधान हम, करें भक्ति के साथ।
रोग-शोक संकट हरें, जिनवर आदिनाथ॥

(अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(1) कर्म बंधन विनाशक

एकीभावं गत इव मया यः स्वयं कर्मबन्धो,
घोरं दुःखं भवभवगतो दुर्निवारः करोति।
तस्याप्यस्य, त्वयि जिनरवे भक्तिरुन्मुक्तये चेत्,
जेतुं शक्यो भवति न तया कोऽवरस्ताप हेतुः॥1॥

(नरेन्द्र छंद)

एकीभाव को प्राप्त हुये ये, आठों कर्म दुःखी करते।
बड़े भयानक बड़े कठिन हैं, भव-भव में ताड़ित करते॥
श्री जिनेन्द्र वे ज्ञानसूर्य हैं, भव-भव के संताप हरें।
भक्ति की शक्ति से भविजन, अपने भवदुःख पाप हरें॥1॥

ॐ ह्रीं कर्मबंधनाशन समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(2) हृदय रोग निवारक, विद्या प्रदायक

ज्योतीरूपं दुरितनिवह ध्वांत विध्वंस हेतुं,
त्वामेवाहु र्जिनवर चिरं तत्त्वविद्याभियुक्ताः।
चेतोवासे भवसि च मम स्फारमुद्रासमान,
स्तस्मिन्नंहः कथमिव तमोवस्तुतो वस्तुमीष्टे॥2॥

श्रेष्ठ जिनेश्वर ज्ञान दिवाकर, ज्योतिर्मय जिनको कहते।
मुनियों के गणस्वामी जिनको, विद्या वाचस्पति कहते॥
विद्याधन धारी मेरे उर, ज्योतिपुंज बन चमक रहे।
जिसके मन जिननाथ विराजे, पाप वहाँ ना कभी रहे॥2॥

ॐ ह्रीं पापान्धकार विनाशन समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(3) आनंद प्रदायक, विषहारक

आनन्दाश्रुस्नपित वदनं गद्गदं चाभिजल्पन्,
यश्चायेत त्वयि दृढ़मनाः स्तोत्रमंत्रैर्भवन्तम्।
तस्याभ्यस्तादपि च सुचिरं देहवल्मीकमध्यान्,
निष्कास्यंते विविधविषमव्याधयः काद्रवेयाः ॥3॥

आनंद अश्रु जब-जब निकले, मुख प्रक्षालन कर देते।
उसी तरह प्रभु की पूजन से, मन प्रक्षालन कर देते॥
मंत्रों की शक्ति वश अहि भी, वामी से बाहर आते।
जिन तेरे स्तोत्र मंत्र से, रोग काय के मिट जाते॥3॥

ॐ ह्रीं विषम व्याधि निष्कासन समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(4) कुष्ठ रोग निवारक, कंचन देह प्रदायक

प्रागेवेह, त्रिदिव भवनादेष्यता भव्य पुण्यात्,
पृथ्वीचक्रं कनकमयतां देव निन्येत्वयेदं।
ध्यानद्वारं मम रुचिकरं स्वान्तगेहं प्रविष्ट-,
स्तत्किं चित्रं जिनवपुरिदं यत्सुवर्णी करोषि॥4॥

स्वर्ग लोक से च्युत हो जिनवर, माता के उर में आते।
छः महीने से पूर्व देवगण, भू सोने से चमकाते॥
मैंने सुन्दर मन मंदिर में, तुम्हें बिठाकर ध्यान किया।
ये कोई आश्चर्य नहीं तन, कुष्ठ रोग से मुक्त हुआ॥4॥

ॐ ह्रीं भाक्तिकेषु तनुसुवर्णी करण समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(5) क्लेश निवारक

लोकस्यैकस्त्वमसि भगवन्निर्निमित्तेन बन्धु-
स्त्वय्येवासौ सकलविषया शक्तिरप्रत्यनीका।
भक्तिस्फीतां चिरमधिवसन्मामिकां चित्तशय्यां
मय्युत्पन्नं कथमिव ततः क्लेशयूथं सहेथाः॥5॥

संसारी प्राणी के जिनवर, आप अकारण बंधु हैं।
सर्वज्ञेय की शक्ति जिनमें, निराबाध दृढ़ बंधु हैं॥
भक्ति रत जिन-जिन भक्तों की, मन शैय्या पर आप रहे।
दुःख समूह वहाँ कैसे हो, क्यों कर वो दुःख शोक सहे॥5॥

ॐ ह्रीं सर्वक्लेश विनाशन समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(6) ज्वरशामक, दाह-ताप निवारक

जन्माटव्यां कथमपि मया देव दीर्घं भ्रमित्वा,
प्राप्तैवेयं तव नयकथा स्फारपीयूष वापी।
तस्या मध्ये हिमकर हिमव्यूह शीते नितान्तं,
निर्मग्नं मां न जहति कथं दुःखदावोपतापाः॥6॥

किसी समय मैं भव अटवी में, दीर्घ काल तक भरमाया।
तभी आप नय कथा रूप की, अमृत वाणी को पाया॥
उस वापी में डुबकी लेता, दुःख संताप मिटाने को।
दुःख दावानल यहीं मिटेंगे, यह निश्चय कर जाने को॥6॥

ॐ ह्रीं दुःख दावोपतापशांतकरण समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(7) कल्याणकारक

पादन्यासादपि च पुनतो यात्रया ते त्रिलोकीं,
हेमाभासो भवति सुरभिः श्रीनिवासश्च पद्मः।
सर्वाङ्गेण स्पृशति भगवंस्त्वय्यशेषं मनो मे,
श्रेयः किं तत्स्वयमहरहर्यन्न मामभ्युपैति॥7॥

श्री विहार करते जब जिनवर, पावन तीनों लोक बने।
कमल रचे प्रभु के चरणों तल, कनक कमल श्रीवास बने॥
हे परमेश्वर ! सर्व अङ्ग से, मन से मैं संस्पर्श करूँ।
मेरा अब कल्याण करो जिन, प्रतिदिन प्रतिपल ध्यान करूँ॥7॥

ॐ ह्रीं सर्वश्रेयः प्रदान समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(8) वचन संबंधी दोष-रोग निवारक

पश्यन्तं त्वद्वचनममृतं भक्तिपात्र्या पिबन्तं,
कर्मारण्यात्पुरुषमसमानन्दधाम प्रविष्टम्।
त्वां दुर्वारस्मरमदहरं त्वत्प्रसादैक भूमिं-,
क्रूराकाराः कथमिवरुजा कण्टका निर्लुठन्ति॥8॥

कर्म काष्ठ को नष्ट किया है, मदन विजेता कहलाते।
कर्म समूल जलाकर जिनवर, अनुपम सुख शांति पाते॥
भक्ति का ले पात्र हाथ में, वचनामृत पीने आये।
तव प्रसाद से क्रूर रोग भी, सौम्य फूल सम बन जाये॥8॥

ॐ ह्रीं दुर्वाररोग निवारण समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(9) मानहारक

पाषाणात्मा तदितरसमः केवलं रत्नमूर्तिः,
मानस्तम्भो भवति च परस्तादृशो रत्नवर्गः।
दृष्टिं प्राप्तो हरति स कथं मानरोगं नराणां,
प्रत्यासत्तिर्यदि न भवतस्तस्य तच्छक्ति हेतुः॥9॥

रत्नमयी पाषाण रत्न का, मानस्तम्भ बना सुन्दर।
अन्य रत्न भी बड़े मनोहर, फिर भी है उनमें अन्तर॥
मानहरण का अद्भुत अतिशय, तव सन्निधि से होता है।
तुम दर्शन से वंचित दुर्भग, क्या ऐसा सुख पाता है॥9॥

ॐ ह्रीं भाक्तिक जनमानरोगहरण समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(10) खाज खुजली-चर्मरोग निवारक

हृद्यः प्राप्तो मरुदपि भवन्मूर्तिशैलोपवाही
सद्यः पुसां निरवधिरुजाधूलिबन्धं धुनोति।
ध्यानाहूतो हृदयकमलं यस्य तु त्वं प्रविष्टस्,
तस्याशक्यः क इह भुवने देव लोकोपकारः॥10॥

हे जिनवर! तुम तन को छूकर, जिस जिस दिश में हवा बहे।
वहाँ सर्व पुरुषों के तत्क्षण, रोग धूलि सम दूर बहे॥
ध्यानमग्न हो मन पंकज पर, जो तुमको बैठाता है।
सर्वलोक उपचार कार्य में, वो समर्थ हो जाता है॥10॥

ॐ ह्रीं निरवधि रोग धूलि धुन्वन् समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(11) क्रोध उपशामक, भव दुःख निवारक

जानासि त्वं मम भवभवे यच्च यादृक्च दुःखं,
जातं यस्य स्मरणमपि मे शस्त्रवन्निष्पिनष्टि।
त्वं सर्वेशः सकृप इति च त्वामुपेतोऽस्मि भक्त्या,
यत्कर्त्तव्यं तदिह विषये देव एव प्रमाणम्॥11॥

भव-भव की मेरी सब पीड़ा, हे जिनवर ! तुम जान रहे।
जिनका सुमिरन मेरे मन में, शस्त्र सरीखे साल रहें॥
तुम सर्वेश्वर कृपावान हो, भक्त आय तेरे चरणा।
जो कुछ करना करो आप ही, तुम ही हो उत्तम शरणा॥11॥

ॐ ह्रीं भव-भव दुःखनिवारण समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(12) लक्ष्मी प्रदायक

प्रापद्दैवं तवनुति पदैर्जीवकेनोपदिष्टैः
पापाचारी मरणसमये सारमेयोऽपि सौख्यं।
कः संदेहो यदुपलभते वासवश्रीप्रभुत्वं
जल्पन् जाप्यैर्मणिभिरमलैस्त्वन्नमस्कारचक्रं॥12॥

पापाचारी सारमेय ने, जीवन्धर से मंत्र सुना।
महामंत्र को सुनने से ही, मरकर कुत्ता देव बना॥
प्रभु नाम के मंत्र जाप से पापी से पापी तिरते।
इसमें कुछ आश्चर्य नहीं वे, इन्द्र सरीखा पद लभते॥12॥

ॐ ह्रीं स्वर्ग लक्ष्मी प्रभुत्वकरण समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(13) रहस्य विद्या प्रदायक

शुद्धे ज्ञाने शुचिनि चरिते, सत्यपि त्वय्यनीचा,
भक्तिर्नो चेदनवधिसुखावञ्चिका कुञ्चिकेयम्।
शक्योद्घाटं भवति हि कथं मुक्तिकामस्य पुंसो-
मुक्तिद्वारं परिदृढ़महामोहमुद्राकवाटम्॥13॥

परम विशुद्ध ज्ञान चारित से, मोक्ष महल ना मिले कभी।
उत्तम भक्ति जो नर करते, प्रभुवर उसको मिले तभी॥
निर्मल ज्ञान चरण पाकर भी, गर भक्ति चाबी ना हो।
मुक्ति का पट खोल न पाये, यत्न भले कितना ही हो॥13॥

ॐ ह्रीं मुक्ति-द्वारोद् घाटनकारण समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(14) वाणी सिद्धि प्रदायक

प्रच्छन्नः खल्वयमघमयैरन्धकारैः समन्तात्-,
पन्था मुक्तेः स्थपुटितपदः क्लेशगर्तैरगाधैः।
तत्कस्तेन व्रजति सुखतो देव तत्त्वावभासी,
यद्यग्रेऽग्रे न भवति भवद्भारतीरत्नदीपः॥14॥

मोक्षमार्ग सब ओर ढ़का है, घोर पाप अंधियारे से।
दुःखरूपी गहरे गड्ढे से, आऊँगा उजियारे में॥
हे जिनवर ! तव वाणी से ही, सप्त तत्त्व को जाना है।
गमन करूँगा उसी मार्ग पे, जिसमें मोक्ष खजाना है॥14॥

ॐ ह्रीं मुक्ति पथावलोकन सामर्थ्य-प्रदायकाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(15) भय निवारक, आत्मशक्ति प्रदायक

आत्मज्योतिर्निधिरनवधि द्र्ष्टुरानन्द हेतुः,
कर्मक्षोणीपटलपिहितो योऽनवाप्यः परेषां।
हस्ते कुर्वन्त्यनति चिरतस्तं भवद्भक्तिभाजः
स्तोत्रैर्बद्ध प्रकृतिपरुषोद्दामधात्री खनित्रैः॥15॥

मोही मिथ्यात्वी प्राणी को, ज्ञाननिधि ना मिल सकती।
अष्ट कर्म से मुक्ति पाने, सम्यक्त्वी करते भक्ती॥
जैसे कोई कुदाल चलाकर, गढ़ा हुआ धन प्राप्त करें।
संस्तुति करके प्रभु आपकी, निजानंद निधि प्राप्त करें॥15॥

ॐ ह्रीं आत्मज्योति निधि प्रदान समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(16) जलाशय संबंधी बाधा निवारक

प्रत्युत्पन्ना, नयहिमगिरेरायता चामृताब्धे,
र्या देव त्वत्पदकमलयोः संगता भक्तिगङ्गा।
चेतस्तस्यां मम रुचिवशादाप्लुतं क्षालितांहः,
कल्माषं यद्भवति किमियं देव संदेह भूमि॥16॥

जिन हिमगिरी से प्रगट हुई है, स्याद्वाद नय की गंगा।
बड़े भाग्य से प्राप्त हुई है, नाथ भक्ति की ये गंगा॥
श्रद्धा से हम डुबकी लेते, पाप हरेगी ये गंगा।
संशय मन का दूर भगाकर, पा जाओ मुक्ति गंगा॥16॥

ॐ ह्रीं सर्वकल्मषक्षालन समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(17) ध्यान शक्ति प्रदायक

प्रादुर्भूतस्थिरपदसुख ! त्वामनुध्यायतो मे,
त्वय्येवाहं स इति मति रुत्पद्यते निर्विकल्पा।
मिथ्यैवेयं तदपि तनुते तृप्तिमभ्रेषरूपां,
दोषात्मानोऽप्यभिमतफलास्त्वत्प्रसादाद्भवन्ति॥17॥

स्थिर सुख जिनवर ने पाया, ऐसे प्रभु का ध्यान करें।
मैं भी जिनवर जैसा ही हूँ, मति में सोच असत्य धरें॥
मिथ्या होकर भी हे जिनवर !, वो निश्चय सुख प्राप्त करें।
तव प्रसाद से दोषरहित भी, इच्छित वस्तु प्राप्त करें॥17॥

ॐ ह्रीं सोऽहमिति मतिप्रदान समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(18) विद्या बुद्धि प्रदायक

मिथ्यावादं मलमपनुदन्सप्तभङ्गीतरङ्गै-
र्वागम्भोधिर्भुवनमखिलं देव ! पर्येति यस्ते।
तस्यावृत्तिं सपदि विबुधाश्चेत सैवाचलेन,
व्यातन्वन्तः सुचिरममृता सेवया तृप्नुवन्ति॥18॥

जिन समुद्र से निकली वाणी, सर्वलोक को पूत किया।
सप्त भंगमय जिन तरंग से, मिथ्यामल को दूर किया॥
मन मेरु से श्रुतसागर का, जो जन मंथन करता है।
वो भव्योत्तम जिनवर जैसा, शाश्वत अमृत वरता है॥18॥

ॐ ह्रीं परमामृत प्रदान समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(19) सुन्दर रूप प्रदायक

आहार्य्येभ्यः स्पृहयति परं यः स्वभावादहृद्यः,
शस्त्रग्राही भवति सततं वैरिणा यश्च शक्यः।
सर्वाङ्गेषु त्वमसि सुभगस्त्वं न शक्यः परेषां,
तत्किं भूषावसन कुसुमैः किं च शस्त्रैरुदस्त्रैः ॥19॥

हे जिनवर ! जो हैं कुरूप वे, तन को अधिक सजाते हैं।
जो डरते हैं वे शस्त्रों से, झूठा रौब दिखाते हैं॥
जिन तुम अन्दर बाहर सुन्दर, अतः तुम्हें क्या वस्त्रों से ?
तुम अजातशत्रु परमेश्वर, नहीं प्रयोजन शस्त्रों से॥19॥

ॐ ह्रीं परम सुन्दर स्वरूप प्रदान समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(20) ऐश्वर्य प्रदायक, प्रभाव वृद्धिकारक

इन्द्रः सेवां तव सुकुरुतां किं तयाश्लाघनं ते,
तस्यैवेयं भवलयकरी श्लाघ्यता-मातनोति।
त्वं निस्तारी जननजलधेः सिद्धिकान्तापतिस्त्वं,
त्वं लोकानां प्रभुरिति तव श्लाघ्यते स्तोत्रमित्थं॥20॥

इन्द्र तिहारी पूजा करता, लाभ तुम्हें क्या पूजा से।
प्रभु पूजा भव भ्रमण मिटावे, यश कीर्ति का लाभ उसे॥
हे जिनवर ! तुम भवतारक हो, स्वयं तिरें सबको तारें।
मुक्तिवधु के तुम हो स्वामी, भक्त तुम्हें पूजे सारे॥20॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्य प्रभु-स्तुतिश्लाघनाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(21) वचन शक्ति प्रदायक

वृत्तिर्वाचामपरसदृशी न त्वमन्येन तुल्यः,
स्तुत्युद्गाराः कथमिव ततः स्त्वय्यमी न क्रमन्ते।
मैवं भूवंस्तदपि भगवन्भक्तिपीयूषपुष्टा-
स्तेभव्यानामभिमतफलाः पारिजाता भवन्ति॥21॥

अन्य मनुष्यों के जैसी है, हे प्रभुवर ! मेरी वाणी।
करूँ अर्चना हे जिन ! तेरी, कैसे पहुँचे मम वाणी॥
मम वाणी तुम तक ना, पहुँची फिर भी उत्तम कार्य करें।
सर्वश्रेष्ठ सुरतरु अमृत बन, मोक्ष सिद्धी अनिवार्य करें॥21॥

ॐ ह्रीं भव्य गणाभिमत फलप्रद समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(22) क्रोधशामक, क्लेश निवारक

कोपावेशो न तव न तव, क्वापि देव प्रसादो
व्याप्तं चेतस्तव हि परमोपेक्षयैवानपेक्षम्।
आज्ञावश्यं तदपि भुवनं सन्निधिर्वैरहारी,
क्वैवंभूतं भुवनतिलकं ! प्राभवं त्वत्परेषु॥22॥

हे जिनवर ! तुमको भक्तों पर, राग-द्वेष का भाव नहीं।
ना प्रसन्न होते भक्तों पे, वीतरागता यही सही॥
फिर भी जग तुम सन्निध पाकर, वैर विरोध मिटाता है।
तीन लोक के श्रेष्ठ तिलक का, यह प्रभाव दर्शाता है॥22॥

ॐ ह्रीं परमोपेक्षि-भुवनतिलक प्रभाव समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(23) सद्बुद्धि प्रदायक

देव स्तोतुं त्रिदिवगणिका मण्डली गीत कीर्तिं,
तोतूर्ति त्वां सकल विषय ज्ञानमूर्तिं जनो यः।
तस्य क्षेमं न पदमटतो, जातु जोहूर्ति पन्था-,
स्तत्त्वग्रन्थस्मरणविषयै नैष मोमूर्ति मर्त्यः॥23॥

देव-देवियाँ संस्तव द्वारा कीर्त्तन नृत्य भजन करते।
स्वपर प्रकाशी श्री जिनवर की, पूजा में तत्पर रहते॥
होता तब कल्याण जीव का, सरल मोक्ष पथ पा जाते।
तत्त्व ग्रंथ से मोक्ष पंथ पा, मोह जाल से बच जाते॥23॥

ॐ ह्रीं सकल तत्त्व ग्रंथ स्मरण विषयिबुद्धि प्रदान समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(24) अनंत सुख प्रदायक

चित्ते कुर्वन्निरवधिसुख ज्ञानदृग्वीर्य रूपं,
देव त्वां यः समयनियमादादरेण स्तवीति।
श्रेयोमार्ग स खलु सुकृती तावता पूरयित्वा,
कल्याणानां भवति विषयः पञ्चधा पञ्चितानां॥24॥

गुण अनंत के धारी प्रभु को, हृदय कमल में जो धारे।
त्रय संध्या में विनय भाव से, संस्तुति करते प्रभु द्वारे॥
वो निश्चय से भक्ति रचाकर, श्रेयमार्ग का पात्र बने।
पाँचों कल्याणक से पूजित, तीर्थंकर शुभ गात्र बने॥24॥

ॐ ह्रीं भाक्तिक जन पञ्चकल्याण प्रदान समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(25) मनवांछित कार्य सिद्धिदायक

(शार्दूलविक्रीड़ित छंद)

भक्तिप्रह्वमहेन्द्रपूजितपद ! त्वत्कीर्तने न क्षमाः,
सूक्ष्मज्ञानदृशोऽपि, संयमभृतः के हन्त मन्दावयम्।
अस्माभिः स्तवनच्छलेन तु परस्त्वय्यादरस्तन्यते
स्वात्माधीनसुखैषिणां स खलु नः कल्याणकल्पद्रुमः॥25॥

श्री जिनेन्द्र के पाद पद्म की, सुरगण भक्ति न कर पाये।
अवधि मनःपर्यय योगी भी, प्रभु के गुण न लिख पाये॥
आप गुणों से प्रीति कर जो, अनुपम संस्तव करता है।
कल्पतरु कल्याण लाभ पा, आत्म सुखों को वरता है॥25॥

ॐ ह्रीं सुखेच्छुक जन कल्याण कल्पद्रुमाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(26) कवित्व शक्ति प्रदायक

(स्वागता छंद)

वादिराजमनु शाब्दिक लोको, वादिराजमनु तार्किक सिंहः।
वादिराजमनु काव्यकृतस्ते, वादिराजमनु भव्यसहायः॥26॥

वादिराज मुनि सर्वलोक में, शब्द शास्त्र के ज्ञाता हैं।
मुनियों में मुनि वादिराज यति, तार्किक सिंह विधाता हैं॥
वादिराज की काव्य कुशलता, अद्भुत अतिशयकारी हैं।
वादिराज मुनि बने सहायक, भव्यों के उपकारी हैं॥26॥

ॐ ह्रीं श्री वादिराज सूरिकृत एकीभाव स्तोत्र स्वामिने श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (दोहा)

वादिराज मुनिराज ने, किया प्रभु का ध्यान।
कुष्ठ रोग से मुक्त हो, किया जगत् कल्याण।।
छब्बिस गाथा में रचा, एकीभाव विधान।
ऋषभदेव को पूजकर, पायें सौख्य महान।।

ॐ ह्रीं सर्व व्याधि दुःख-संकट, कुष्ठ रोग, चर्मरोग, केंसरादि, कोरोनादि रोग विनाशन समर्थाय आरोग्य, ऋद्धि-सिद्धि, सुख-शांति, समृद्धि, यश-कीर्ति, प्रज्ञा प्रदायकाय श्री आदिनाथ तीर्थंकर परमदेवाय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- जग में शांति ना मिले, शांति मिले प्रभु द्वार।
शांतिकरण जगदीश पे, करता शांतिधार।।

शांतये शांतिधारा

दोहा- कमलासन के मध्य में, बैठे प्रभुवर आप।
कमल मनोज्ञ चढ़ा करूँ, प्रभुवर का मैं जाप।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र-(1) ॐ ह्रीं सर्व व्याधिविनाशन समर्थाय श्री ऋषभदेव तीर्थंकर परमदेवाय नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

समुच्चय जयमाला

दोहा- एकीभाव विधान की, जयमाला सुखमाल।
ऋषभदेव को भेंट है, पुष्पों की ये माल।।

(चौपाई)

जय-जय आदिनाथ मनहारे, तीन लोक के चाँद सितारे।
दिनकर बनकर प्रभुवर आये, रोशन सारा जग हो जाये।।1।।

जो प्रभु को नित मन से ध्याये, दुःख संकट पीड़ा मिट जाये।
जिसने प्रभु को जहाँ पुकारा, उसको प्रभु ने दिया सहारा॥2॥

हरवादी का मान गलाये, वादिराज सूरी कहलाये।
जयसिंह राजा वा दरबारी, पूजा करती प्रजा तिहारी॥3॥

इक विद्वान् सभा में आया, गुरुवर का उपहास उड़ाया।
जैन धरम झूठा है राजा, झूठे हैं इनके मुनिराजा॥4॥

रोगी कुष्ठी उनकी काया, बदसूरत मुनि मन ना भाया।
जैन भक्त यह सह ना पाया, बोला मम गुरु कंचन काया॥5॥

भूपति ने दर्शन की ठानी, मुनि से श्रेष्ठी कहे कहानी।
जैनधर्म पे प्रश्न उठाया, गुरुवर ने तब धैर्य बँधाया॥6॥

वादिराज गुरु प्रभु को ध्याये, ऋषभदेव का ध्यान लगाये।
एकीभाव स्तोत्र बनाये, काया कंचन सम बन जाये॥7॥

जब गुरु चौथा छंद रचायें, गलित कुष्ठ तन का मिट जाये।
राजा संग श्रेष्ठी वन आया, गुरु तन चमक देख हर्षाया॥8॥

गुरु का तेज दूर तक फैला, लगा गुरु दर्शन को मेला।
गुरु को लख राजन चकराये, जैन मुनि ये ही कहलाये॥9॥

नरपति गुरु को शीश झुकाये, द्वेषी पे नृप कोप दिखाये।
राजा को मुनि सत्य बताते, कुष्ठ रोग की बात बताते॥10॥

छोटी अंगुली भी दिखलाये, कुष्ठ रोग उसमें दिखलाये।
जैन श्रमण सब ग्लान नहीं है, मंत्री को सद्ज्ञान नहीं है॥11॥

जैन धर्म का अतिशय मानो, ये जिन भक्ति का फल जानो।
एक रात में कुष्ठ मिटाया, मैंने भक्ति का फल पाया॥12॥

मुनि वाणी सुन सब हर्षाये, गुरु चरणों में सब झुक जाये।
क्षमा करो गुरु दोष हमारा, जैनधर्म सबने स्वीकारा॥13॥

जैन धर्म राजा स्वीकारे, समकित गुण से भाग्य संवारे।
वादिराज सूरी मन भाये, प्रभु भक्ति का मार्ग दिखाये॥14॥

जैन धर्म जिनगुरु की महिमा, उनके तप की जो है गरिमा।
एक रात में पाठ रचायें, अतिशय गुरु हमको दिखलायें॥15॥

ये विधान जो करे करावे, निश्चित अपने कष्ट मिटावे।
जो इसका व्रत विधि से पाले, सर्वश्रेष्ठ उत्तम सुख पाले॥16॥

प्रभु की गुण गाथा हम गाये, रोग-शोक से मुक्ति पाये।
त्रय गुप्ति से प्रभु को ध्यायें, 'आस्था' प्रभु को शीश झुकाये॥17॥

ॐ ह्रीं सर्व आधि-व्याधि संकट रोग-शोक, दुःख, अशांति, कोरोना वायरस, सर्व ज्वरादि रोगाल्प अपमृत्यु विनाशन समर्थाय सुख, शांति, आरोग्य, ऋद्धि-सिद्धि, धन-धान्य, केवलज्ञान लक्ष्मी प्रदायकाय श्री आदिनाथ तीर्थंकर परमदेवाय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

एकीभाव विधान करें हम, सर्व रोग विनशायें।
रहे निरोगी काय हमारी, जिनगुण निशदिन गायें॥
महिमा मंडित वादिभ सूरी, ज्ञानी गुरु को ध्यायें।
आदि प्रभु व वादि सूरी को, हम सब शीश झुकायें॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

प्रशस्ति

(दोहा)

ऋषभदेव से वीर तक, वंदन बारम्बार।
शांतिनाथ गणनाथ को, प्रणमु शत-शत बार॥1॥

पाँचों परमेष्ठी प्रभु, सरस्वती जग मात।
सर्व श्रमण के चरण की, भक्ति करें दिन-रात॥2॥

वादिराज सूरीश ने, रचना की सुखकार।
एकीभाव स्तोत्र ये, सब दुःख संकटहार॥3॥

कुंथु कनक गुरुराज का, मिला मुझे आशीष।
गुप्तिनंदी गुरुराज को, झुका रही मैं शीश॥4॥

माघबदी की चौदसी, आदिनाथ निर्वाण।
उस दिन ही प्रारम्भ कर, आदिनाथ विधान॥5॥

मुनिसुव्रत का जन्म तप, नवग्रह शांति विधान।
पानीपत में कर इति, एकीभाव विधान॥6॥

शब्द छंद का है नहीं, मुझ में प्रभु कुछ ज्ञान।
'आस्था' को बोधि मिले, पाऊँ केवलज्ञान॥7॥

॥ इतिअलम्॥

अर्घावली

श्री चौबीस तीर्थंकर का अर्घ

(अडिल्ल छंद)

जल फल आदि अर्घ बनायें भाव से।
अनर्घ पद हित भक्ति रचायें चाव से।।
जिन शासन का चक्र प्रवर्त्तन कर रहे।
चौबीसों जिनवर भव संकट हर रहे।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिनवाणी माता का अर्घ

(चामर छंद)

नीर गंध वस्त्रादि अर्घ भाव से लिया।
आपका विधान मात भक्ति भाव से किया।।
दिव्य देशना महान है जिनेश आपकी।
मात अर्चना हरे प्रवंचना विभाव की।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीवाग्वादिनीभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य श्री वादिराज मुनिराज का अर्घ

(जोगीरासा छंद)

वादी प्रतिवादी सब हारे, वादिराज गुरु के आगे।
ओजस्वी गुरु की वाणी सुन, मिथ्यावादी सब भागे।।
ऐसे सूरी वादिराज को, वसु विधि द्रव्य चढ़ाता हूँ।
'आस्था' भक्ति युत गुरुवर को, झुक-झुक शीश नवाता हूँ।।

ॐ ह्रीं परम तपस्वी आचार्य श्री वादिराज महामुनिराज चरणेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग. गणधराचार्य श्री कुंथुसागरजी गुरुदेव का अर्घ

(जोगीरासा छंद)

कुंथुसागर-कुन्थुसागर, जय-जय कुन्थुसागर।
हे वात्सल्य निधि गुरुदेवा !, ज्ञान रवि रत्नाकर॥
भोले बाबा बड़े दयालु, गुरुवर हमको प्यारे।
पूजा करने हम सब आये, गुरुवर तेरे द्वारे॥

ॐ ह्रीं परम पूज्य ग. गणधराचार्य श्री कुंथुसागरजी गुरुदेव चरणेभ्यों अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्यरत्न श्री कनकनंदीजी गुरुदेव का अर्घ

(जोगीरासा छंद)

कनकनंदी की ज्ञान रश्मियाँ, ज्ञान किरण फैलायें।
वैज्ञानिक आचार्य हमारे, सबको धर्म सिखायें॥
साम्य भाव ही सुख स्वभाव है, यही गुरु बतलायें।
कनक रजत की थाल सजा हम, गुरु को अर्घ चढ़ायें॥

ॐ ह्रीं परम पूज्य वैज्ञानिक धर्माचार्य आचार्यरत्न श्री कनकनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यों अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रज्ञायोगी आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव का अर्घ

(शेर छंद)

आचार्य गुप्तिनंदी ने, कमाल कर दिया।
वात्सल्य दे सभी को, मालामाल कर दिया॥
पूजा हमारी आप ये, स्वीकार कीजिये।
गुरुदेव मुस्कुराके, आशीर्वाद दीजिये॥

ॐ ह्रीं परम पूज्य प्रज्ञायोगी वात्सल्य सिंधु आर्षमार्ग संरक्षक आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

***

मोक्षशास्त्र विधान की आरती

(तर्ज – चंदा तू ला रे चंदनिया..)

आओ मंदिर में आओ, प्रभुवर की आरती गाओ।
जिनवाणी माँ की करते आरती,
हो भगवन् हम सब उतारें प्रभु की आरती...

चौबीसों प्रभुवर के मुख से, निकली माँ जिनवाणी–2।
गणधर प्रभु की वाणी झेलें, लिख गये गुरुवर ज्ञानी–2॥
करते प्रभुवर की भक्ति, पाने दुःखों से मुक्ति–2
हम सब उतारे....

ग्रंथराज तत्त्वार्थ सूत्र ये, लिखा उमास्वामी ने–2।
इसी ग्रंथ पे लिखी अनेकों, टीकायें गुरुओं ने–2॥
ज्ञान की ज्योति पाये, भ्रमतम अपना विनशाये–2।
हम सब उतारे....

करें आरती इस विधान की, अपना भाग्य जगाने–2।
समता से त्रय गुप्ति समिति, धारें मुक्ति पाने–2॥
'आस्था' से जिनगुण गाये, श्रद्धा से शीश झुकायें–2
हम सब उतारे....

णमोकार विधान की आरती

(तर्ज : सगला चालो रे, इंजन की सीटी में...)

आओ–आओ रे प्रभु के द्वारे चले आओ, चले आओ।
ढ़ोल मंजीरा घुँघरु लेकर आरती गाओ॥ आओ–आओ रे....

1. इस विधान की आरती में हम, मंगल वाद्य बजाये।
   महामंत्र की आरती करने, पैंतीस द्वीप जलाये॥ आओ–आओ रे...

2. महामंत्र ये मंगलकारी, सबका कष्ट मिटाये।
श्रद्धा से जो पाठ करे तो, सब संकट टल जाये॥ आओ–आओ रे....

3. सब कुछ भूले भले प्रभो हम, मंत्र भूल ना जाये।
ये ही प्रभु वरदान हमें दो, णमोकार को ध्याये॥ आओ–आओ रे....

4. सोते–उठते, चलते–फिरते, महामंत्र को ध्याये।
अंत समय भी णमोकार जप, अंतिम पद पा जाये॥ आओ–आओ रे...

5. सबसे प्यारा मंत्र हमारा, ॐ णमो सुखकारी।
'आस्थाश्री' भी त्रिगुप्ति से, भक्ति करे तुम्हारी॥ आओ–आओ रे....

आदिनाथ भगवान की आरती

(तर्ज – जय गणेश जय गणेश देवा..)

आदिनाथ आदिनाथ, आदिनाथ देवा।
दीप धूप आरती ले, भक्त करें सेवा॥

मात मरुदेवी लाल, नाभिनंद देवा।
आरती की थाल लेके, भक्त करे सेवा॥

1. स्वर्ण रत्न दीप लेके, द्वार तेरे आये।
मोतियों की थाल में ये, दीप चमचमाये॥
नृत्य भक्ति करके पावे, सौख्य शांति मेवा। दीप धूप ......

2. नवरंगी लाख लाख, दीप हम सजायें।
रत्नमयी रंगमयी, ज्योत हम जलायें॥
आरती में झूम रहे, सर्व देवी–देवा। दीप धूप ......

3. ज्ञान ज्योति पाने को ये, आरती तिहारी।
सर्व पाप ताप हरे, आरती तिहारी॥
'आस्था' को मोक्ष दीजे हे जिनेन्द्र देवा ! दीप धूप ....

एकीभाव विधान (आदिनाथ विधान) की आरती

(तर्ज - ॐ जय महावीर...)

ॐ जय आदिनाथा, स्वामी जय आदिनाथा।
आरती करते हम सब, झुका रहे माथा॥ ॐ जय आदिनाथा...

1. ऋषभदेव है नाम तुम्हारा, ऋषियों के स्वामी-2 हो स्वामी..
ऋषि मुनि तव गुण गाये, दुःख मेटो स्वामी...
ॐ जय आदिनाथा...

2. वादिराज मुनिवर के तन में, कोढ़ हुआ भारी-2 हो स्वामी..
एकीभाव से तत्क्षण, मिटी व्याधि सारी॥
ॐ जय आदिनाथा...

3. वादिराज मुनिवर की काया, सोने सी चमके-2 हो स्वामी..
चमत्कार लख राजा, गुरुवर को नमते॥
ॐ जय आदिनाथा...

4. इस विधान को जो भी करता, सुख संपत्त पावे-2 हो स्वामी..
'आस्था' से हम भविजन, गुण कीर्त्तन गावे॥
ॐ जय आदिनाथा...

***

समुच्चय अर्घ

(शेर छंद)

मैं पूजता अरिहंत सिद्ध सूरि को सदा।
उवज्झाय सर्व साधु और शारदा मुदा।।
गणधर गुरु चरण की नित्य अर्चना करूँ।
दश धर्म सोलह भावना की अर्चना करूँ।।1।।

अरहंत भाषितार्थ दया धर्म को भजूँ।
श्री तीन रतन रूप मोक्ष धर्म को जजूँ।।
त्रैलोक्य के कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य को ध्याऊँ।
चैत्यालयों का ध्यान लगा अर्घ चढ़ाऊँ।।2।।

सब सिद्ध क्षेत्र तीर्थ क्षेत्र को भजूँ सदा।
औ तीन लोक के समस्त तीर्थ सर्वदा।।
चौबीस जिनवरों व बीस नाथ को ध्याऊँ।
जल आदि अष्ट द्रव्य ले पूर्णार्घ चढ़ाऊँ।।3।।

दोहा : जल आदिक वसु द्रव्य की, लेकर आये थाल।
महाअर्घ अर्पण करें, प्रभु को नमें त्रिकाल।।

ॐ ह्रीं द्रव्य सहित भावपूजा भाववंदना त्रिकाल पूजा त्रिकाल वंदना करे करावै भावना भावै श्री अरहंतसिद्ध आचार्य उपाध्यायसर्वसाधु पंच परमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग करणानुयोग चरणानुयोग द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि दशलाक्षणिकधर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। विदेह क्षेत्रस्थ विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। जल, थल, आकाश, गुफा, पहाड़, सरोवर, नगर-नगरी, ऊर्ध्वलोक, मध्यलोक, अधोलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः। पाँच भरत पाँच ऐरावत संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनराजेभ्यो नमः। नंदीश्वर द्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पंचमेरू संबंधी अस्सी जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलाशगिरी, चंपापुर, पावापुर, गिरनार, सोनागिर,

मथुरा, गजपंथा, मांगीतुंगी, तपोभूमि आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री, मूढ़बद्री, देवगढ़, चंदेरी, पपौरा, हस्तिनापुर, अयोध्या, कुंथुगिरी, पुष्पगिरी, अंजनगिरी, धर्मतीर्थ, वरूर,राजगृही, तारंगा, चमत्कार, महावीरजी, पदमपुरा, तिजारा, अहिच्क्षेत्र, कचनेर, जटवाड़ा, पैठण, गोम्मटेश्वर, चंवलेश्वर, बिजौलिया, चांदखेड़ी, पाटन, कुण्डलपुर, अणिन्दा वृषभदेव णमोकार ऋषि तीर्थ आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारण ऋद्धिधारी सप्त परमर्षिभ्यो नमः। भूत-भविष्यत-वर्तमान काल संबंधी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपावंतं श्री वृषभादि महावीरपर्यंतं चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारत देशे............... प्रान्ते-नगरे..........मासानांमासे......... मासे.........पक्षे.........तिथौ..........वासरे मुनि आर्यिकाणां श्रावक श्राविकाणां, क्षुल्लक, क्षुल्लिकानां, सकल कर्मक्षयार्थं (जलधारा) जलादि महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(27 श्वासोच्छ्वास में 9 बार णमोकार मंत्र पढ़ें।)

शांतिपाठ (हिन्दी)

चौपाई

(शांतिपाठ बोलते समय पुष्पाञ्जलि क्षेपण करते रहें)

शशि सम निर्मल जिन मुखधारी, शील सहस्र गुणों के धारी।
लक्षण वसु शत त्रयपदधारी, कमल नयन शांति सुखकारी॥1॥

(नोट-यहाँ शांतिधारा करें।)

शांतिनाथ पंचम चक्रीश्वर, पूजें तुमको इन्द्र मुनीश्वर।
शांति करो हे शांति! जिनेश्वर, जगत् शांतिहित नमते गणधर॥2॥

आठों प्रातिहार्य मनहारी, ये जिन वैभव हैं सुखकारी।
तरु अशोक पुष्पों की वर्षा, दिव्य ध्वनि सिंहासन रवि सा॥3॥

छत्र चँवर भामंडल चम-चम, देव-दुंदुभि बजती दुम-दुम।
शांति करो त्रय जग में स्वामी, शीश झुकाता तुमको स्वामी॥4॥

आप अनंत चतुष्टय धारी, मंगल द्रव्य आठ अघहारी।
सर्व विघ्न प्रभु आप नशाओं, हे शांति प्रभु ! शांति दिलाओ॥5॥
पूजक राजा शांति पायें, मुनि तपस्वी शांति पायें।
राष्ट्र नगर में शांति छाये, शांति जगत् में हे जिन ! आये॥6॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् (9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें।)

(दोनों हाथ में चावल या पुष्प लेकर करबद्ध हो विसर्जन पाठ पढ़ें मंत्र के साथ पुष्पाञ्जलि करें)

विसर्जन पाठ

(दोहा)

जाने अनजाने हुई, प्रभु पूजा में चूक।
मैं अज्ञान अबोध हूँ, क्षमा करो सब चूक॥1॥
जानूँ नहीं आह्वान मैं, पूजा से अनजान।
ज्ञान विसर्जन का नहीं, क्षमा करो भगवान॥2॥
अक्षर पद और मात्रा, व्यंजनादि सब शब्द।
कम ज्यादा कुछ कह दिया, छूट गये हों शब्द॥3॥
मिथ्या हो सब दोष मम, शरण रखो भगवान।
तव पूजा करके प्रभु, बन जाऊँ भगवान॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं अस्मिन् नित्य पूजाभिषेक विधाने आगच्छत सर्वे देवाः स्वस्थाने गच्छतः-3जः-3स्वाहा।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(9 बार णमोकार का जाप करें।)

(नोट-दीपक लेकर श्रीजी की मंगल आरती करें।)

(यह दोहा बोलते हुए आशिका ग्रहण करें)

दोहा : गंध पुष्प प्रभु रज यही, इसको शीश झुकाय।
पुष्प लिये आह्वान के, अपने शीश लगाय॥

(तुभ्यम् नमस्त्रि बोलते हुये भगवान को गुरु को नमस्कार करें।)

***

श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन

धर्मतीर्थ मार्ग, कचनेर अतिशय क्षेत्र के पास, जिला-औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

आर्ष मार्ष संरक्षक, कवि हृदय, प्रज्ञायोगी, दिगम्बर जैनाचार्य

श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव ससंघ का प्रकाशित साहित्य

1. श्री रत्नत्रय आराधना
2. श्री लघु रत्नत्रय आराधना
3. श्री वृहद् रत्नत्रय विधान
4. श्री लघु रत्नत्रय विधान
5. श्री रत्नत्रय भक्ति सरिता
6. श्री रत्नत्रय संस्कार प्रवेशिका (भाग 1)
7. श्री रत्नत्रय संस्कार प्रवेशिका (भाग 2)
8. श्री वृहद गणधर वलय विधान
9. लघु गणधर वलय विधान
10. श्री वृहद नवग्रह शान्ति विधान
11. श्री सूर्यग्रह शान्ति विधान (श्री पद्मप्रभु आराधना)
12. श्री चन्द्रग्रह शान्ति विधान (श्री चन्द्रप्रभु आराधना)
13. श्री मंगलग्रह शान्ति विधान (श्री वासुपूज्य आराधना)
14. श्री बुधग्रह शान्ति विधान (श्री शांतिनाथ आराधना)
15. श्री गुरुग्रह शान्ति विधान (श्री आदिनाथ आराधना)
16. श्री शुक्रग्रह शान्ति विधान (श्री पुष्पदंत आराधना)
17. श्री शनिग्रह शान्ति विधान (श्री मुनिसुव्रतनाथ आराधना)
18. श्री राहूग्रह शान्ति विधान (श्री नेमिनाथ आराधना)
19. श्री केतुग्रह शान्ति विधान (श्री पार्श्वनाथ आराधना)
20. धर्मसूर्य श्री पद्मप्रभ-वासुपूज्य-नेमिनाथ विधान
21. श्री नवग्रह शान्ति चालीसा (बड़ी)
22. श्री नवग्रह शान्ति चालीसा (छोटी)
23. श्री पंचकल्याणक विधान
24. श्री त्रिकाल चौबीसी (लक्ष्मी प्राप्ति) रोट तीज विधान
25. श्री तीस चौबीसी (महालक्ष्मी प्राप्ति) विधान
26. श्री सर्व तीर्थंकर विधान
27. श्री विजय पताका विधान
28. श्री सम्मेद शिखर विधान
29. श्री पंच परमेष्ठी (सर्व सिद्धि) विधान
30. श्री विद्या प्राप्ति विधान
31. श्री श्रुत स्कन्ध विधान
32. श्री तत्त्वार्थ सूत्र विधान
33. श्री भक्तामर विधान
34. श्री कल्याण मंदिर विधान
35. श्री एकीभाव विधान
36. श्री विषापहार विधान
37. श्री णमोकार विधान
38. श्री जिन सहस्रनाम विधान
39. श्री चौबीस तीर्थंकर, लक्ष्मी प्राप्ति बाहुबली-धर्मतीर्थ एवं आचार्य गुप्तिनंदी विधान

40. श्री चन्द्रप्रभु विधान
41. श्री शान्तिनाथ विधान
42. श्री सर्व दोष प्रायश्चित्त विधान
43. श्री रविव्रत विधान
44. श्री पंचमेरु-दशलक्षण-
सोलहकारण विधान
45. श्री नंदीश्वर विधान
46. श्री चन्दन षष्ठी व्रत विधान
47. आचार्य शांतिसागर विधान
48. आचार्य श्री कुन्थुसागर विधान
49. आचार्य श्री कनकनंदी विधान
50. आचार्य श्री गुप्तिनंदी विधान
51. श्री छ्यानवे क्षेत्रपाल विधान
52. श्री भैरव पद्मावती विधान
53. श्री धर्मतीर्थ आरती संग्रह
54. सावधान (काव्य संग्रह)
55. महासती अंजना
56. कौडियो में राज्य
57. महासती मनोरमा
58. महासती चन्दनबाला
59. विलक्षण ज्ञानी
(आचार्य श्री कनकनंदी जी चरित्र कथा)
60. वात्सल्य मूर्ति
(गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी स्मारिका)
61. धर्मतीर्थ प्रवेशिका (भाग-1)

सी.डी.

1. श्री सम्मेदशिखर सिद्ध क्षेत्र पूजा (सी.डी.)
2. श्री रत्नत्रय आराधना व महाशांति धारा (डी.वी.डी.)
3. श्री नवग्रह शांति चालीसा (सी.डी.)
4. श्री बाहुबली पूजा (सी.डी.)
5. ये नवग्रह शांति विधान है (सी.डी.)
6. गुप्तिनंदी गुणगान (सी.डी.)
7. वात्सल्यमूर्ति माँ राजश्री (डी.वी.डी.)
8. मेरे पारस बाबा (डी.वी.डी,)
9. देहरे के चन्दा बाबा (एम.पी. 3)
10. श्री कुन्थु महिमा (डी.वी.डी.)
11. कनकनंदी गुरुदेव तुम्हारी जय हो (एम.पी.3)
12. गुप्तिनंदी अभिवन्दना (डी.वी.डी.)
13. जयति गुप्तिनंदी डाक्यूमेन्ट्री (डी.वी.डी.) I,II
14. श्री गुप्तिनंदी संघ हिट्स
15. श्री रत्नत्रय जिनार्चना

* * *